—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computer Institute - 9335214913

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

अगस्त, 2006 — वर्ष 5 — अंक 06

मुआहदा-ए-हल्फुल फुजूल

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया : मैं अब्दुल्लाह बिन जदआन के मकान पर एक ऐसे मुआहदे में शरीक था, जिस में अगर उस के नाम पर इस्लाम के बअ़द भी मुझे बुलाया जाए तो मैं उसकी तक्मील के लिए तय्यार हूं उन्होंने उस पर यह मुआहदा किया था कि वह हक हकदार तक पहुंचाएगे और यह कि कोई जालिम, मजलूम पर गलबा न हासिल कर सकेगा।(नबीये रहमत पृ. १४०)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

❐	स्वतंत्रता दिवस	सम्पादकीय..... 3
❐	कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी 5
❐	साथ तो चलो (अतुकान्त पद्य)	जय शील 7
❐	प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम 8
❐	हम तो अल्लाह तेरे बन्दे हैं	अमतुल्लाह तस्नीम 9
❐	सदक़ात और ज़कात	मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी 10
❐	सीरतुन्नबी	अल्लामा शिब्ली नोमानी..... 12
❐	हिन्दोस्तानी मुसलमानों के लिए·····	मौ० मुहम्मद राबे हसनी 16
❐	संविधान में दिये गये कुछ मौलिक अधिकार	हबीबुल्लाह आजमी 19
❐	जवाबे मुस्लिम बनाम गैर मुस्लिम	इदारा 21
❐	संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी..... 22
❐	फ्रांसीसियों का इस्लाम धर्म स्वीकार करना	रिज़वानुल्लाह क़िदवई..... 24
❐	ज़िन्दगी की असली पूंजी	मौ० अब्दुल्लाह हसनी 25
❐	और हमने पानी से हर चीज को ज़िन्दा किया	डॉ० अब्दुल बारी सीवानी 28
❐	टीपू सुलतान की शहादत	तारीख़ से 31
❐	आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा 32
❐	रहीम के दोहे	 33
❐	मस्तिष्क रोगों का परिचय	इदारा 34
❐	क्या अब इस्लाम की आवश्यकता नहीं रही	मुहम्मद कुत्ब 35
❐	मुसलमान और आतंकवाद	नसीम साकेती..... 37
❐	अपने देश को जानिये	इदारा 39
❐	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी 40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

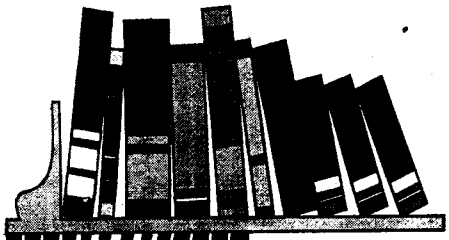

स्वतंत्रता दिवस

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

१५ अगस्त सन १९४७ ई० भारत का वह तारीख़ी दिन है जिस दिन उसे आज़ादी मिली, स्वतंत्रता प्राप्त हुई। तो क्या कभी भारत ग़ुलाम था? हाँ अभी बहुत सी ऐसी आँखें मौजूद हैं जिन्होंने दौरे ग़ुलामी देखा है।

एक ज़माना था जब यहां अपनी हुकूमत थी यद्यपि जनतंत्र न था, बादशाही थी। निःसन्देह बाबर बाहर से आया था, परन्तु जब उसने इब्राहीम लोदी को पराजय किया तो फिर वह यहीं का हो रहा। यहीं रहने का फ़ैसला कर लिया। जब उसका बेटा हुमायूँ बीमार हुआ और उसके बचने की कोई आशा न रही तो उसने अपने रब (ईश्वर) के समीप हाथ फैलाए और मांगा कि मेरे बेटे को जीवन दीजिये और मुझे उठा लीजिये। विधाता ने ऐसा ही लिख रखा था, हुमायूँ की हालत सुधरने लगी, बाबर ने बिस्तर ले लिया, बाबर ने अपने अन्तिम समय बेटे को अच्छी वसीयत (मृत्यु पत्र) लिखी जिसमें जहां राज पाट की अच्छी नसीहतें थीं वहीं जनता के हित की बहुत सी बातें थीं।

बाबर के देहान्त के पश्चात हुमायूँ बादशाह हुआ सारी रिआया ख़ुश थी, कभी किसी हिन्दू को कोई शिकायत न हुई, शिकायत हुई तो उसको अपने ही आदमियों से हुई। शेर शाह सूरी से संघर्ष हुए, हुमायों देश छोड़ने पर विवश हुआ, उसने ईरान में शरण ली। शेर शाह सूरी केवल पाँच वर्ष राज्य कर सका परन्तु उसने राज्य संचालन की वह व्यवस्था की कि उससे पहले भारत का कोई शासक न कर सका था। सूरी ख़ानदान ने १५ वर्ष राज्य किया और फिर हुमायूँ को पुनः राज मिल गया परन्तु थोड़े ही दिनों में उसकी मृत्यु हो गई और उसका बेटा अकबर जो अभी १३ ही वर्ष का था गद्दी पर बैठा राज काज वज़ीरों ने संभाला, आगे चलकर जब वह बड़ा हुआ तो आदर्श शासन करके दिखाया, निःसन्देह उसको एक सच्चे भारतीय शासक का पार्ट अदा करना था, परन्तु वह इस होड़ में सीमा उल्लंघन कर "भारतीय दीने इलाही" की स्थापना कर डाली। उसके राज में रिआया ख़ुश हाल रही। अकबर के पश्चात जहांगीर आया जिसने न्याय में ख्याति प्राप्त की "अद्‌ले जहांगीरी" से कौन अवगत नहीं है। उसके बेटे शाहेजहाँ तो शासन व्यवस्था के साथ भवन निर्माण में सबसे आगे निकल गया। आज उसका ताजमहल, लालक़िला और जामिअ मस्जिद देखने विदेश से लोग आते हैं। औरंगज़ेब का राज पूरे भारत पर था, वह सच्चा मुस्लिम शासक होने में अद्वितीय था, परन्तु उसने अपनी हिन्दू रिआया का भी भरपूर ख़याल रखा उसके वज़ीरों में हिन्दू राजा भी थे। उसने अनेक मन्दिरों को जागीरे दीं, कुछ पक्षपाती इतिहासकारों ने उसे बदनाम करने की चेष्ठा की, निःसन्देह वह धर्मनिष्ठ था परन्तु न वह अत्याचारी था न दूसरे धर्म विशेषकर हिन्दू धर्म के सम्मुख पक्षपात करने वाला था, औरंगज़ेब के पश्चात शासन कमज़ोर होने लगा। ब्रिटिश कम्पनी व्यापार के मार्ग से देश पर छाई हुई थी जो भारत पर राज्य करने के स्वप्न देख रही थी और इसके लिये जतन भी कर रही थी। अन्ततः वह दिन आया कि कम्पनी का राज्य स्थापित हो गया और भारत की दौलत खिंच खिंच कर यूरोप जाने लगी गोरों और सांवलों में खुला

अंतर किया जाने लगा, आख़िर देश के जियालों में गोरों के विरोध की खिचड़ी पकना आरंभ हुई १८५७ ई० में वह ज्वाला मुखी लावा बनकर फूट पड़ी जिसे ग़द्र के नाम से याद किया जाता है। जिसमें हिन्दू मुसलमान दोनों ने भरपूर हिस्सा लिया और क़रीब था कि गोरों का सफ़ाया हो जाता लेकिन कुछ देश भाषियों की चूक से विद्रोह नाकाम हो गया, अंग्रेजों की सत्ता दृढ़ हो गयी फिर तो उन्होंने ख़ूब ख़ूब बदला लिया, सड़कों पर फांसियां दी जाने लगीं, फांसी पाने वालों की कोई गिन्ती नहीं लाखों की जानें गईं इनमें मुसलमानों की संख्या बहुत ज़ियादा थी। मुग़ल ख़ानदान तबाह हुआ उसका आख़िरी ताजदार रंगून जिला वतन कर दिया गया।

अब अंग्रेज़ों की मज़बूत हुकूमत थी लेकिन भारतीय नेताओं के मन में अभी स्वतंत्रता की चिंगारी दबी हुई थी। फिर स्वतंत्रता की मांगे शुरूअ़ हुईं। स्वतंत्रता संग्राम चलता रहा। नेता लोग डन्डे खाते जेल जाते रहे। अंग्रज़ों ने दबाने की हर कोशिश की परन्तु आन्दोलन बराबर ज़ोर पकड़ता रहा। महात्मा गांधी, अबुलकलाम आज़ाद, जवाहर लाल नेहरू, मौलाना हसरत मोहानी जैसे दर्जनों नेता, न धमकियों से दबे न जेलों से डरे, और अपने लक्ष्य पर पहाड़ की तरह जमे रहे। पब्लिक भी उनके पीछे चलती रही यहाँ तक कि आज़ादी का फैसला हुआ और १५ अगस्त सन १९४७ ई० को ब्रिटिश सरकार भारत की सत्ता से अलग हो गई। यहाँ जनतंत्र राज्य स्थापित हो गया जिसके पहले प्रधानमंत्री प० जवाहर लाल नेहरू हुए।

निःसन्देह भारत स्वतंत्र हो गया, हिन्दोस्तान आज़ाद हो गया, ख़ूब खुशियाँ मनाई गईं और तब से अब तक निरन्तर १५ अगस्त को स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है। यौमे आज़ादी की तक़रीब मनाई जाती है, तरह-तरह के सरकारी और ग़ैर सरकारी प्रोग्राम होते हैं। पूरा देश मेला बन जाता है और यह इन्सान की फ़ितरत (प्रकृति) है और यह उसका हक़ है।

निःसन्देह एक चिड़िया सोने के पिंजरे में रखी जाए, उसको गर्मी सरदी से बचाया जाए, उसको उसके शत्रुओं बिल्ली, लोमड़ी आदि से बचाया जाए, बहुत अच्छा दाना पानी उसको मुहय्या (उपलब्ध) कराया जाए। लेकिन पिंजड़े की खिड़की खुलते ही वह उड़कर असुरक्षित जंगल की ओर चल देगी। कहा जाता है इससे स्वतंत्रता की सीख लेना चाहिये। मानव अगर यही आज़ादी चाहता है तो बड़ा बेअक़्ल है, मूर्ख है। मानव को स्वतंत्रता के साथ सुरक्षा (तहफ़्फ़ुज़) भी चाहिये, जीविका (रोज़ी) भी चाहिये और उन्नति (तरक़्क़ी) भी चाहिये। इन सब में उसको किसी के आधीन (मातहत) न होना चाहिये। अगर हम सुरक्षा में, जीविका में, उन्नति में विदेसियों के आधीन हैं तो हम स्वतंत्र कहाँ हैं। चिड़िया का पिंजरा ज़रा छोटा था जिसकी दीवारें चिड़िया देख रही थी, हमारा पिंजरा बहुत बड़ा है जिसकी दीवारें मस्तिष्क की भीतरी आँखों से देखी जा सकती हैं।

फिर ऐसी आज़ादी से तो ग़ुलामी भली जिस में एक भाई दूसरे को मार रहा हो, काट रहा हो, लूट रहा हो, स्त्रियों को बेआब्रू कर रहा हो, बच्चों को क़त्ल कर रहा हो। क्या हमारे स्वतंत्र देश में यह सब नहीं हो रहा है?

ज़रूरत है अब ऐसे नेताओं की, जो इन्सानों के दिमागों में सच्ची आज़ादी का ज्ञान पैदा कर सकें और यह काम वोट लेने वाले नेताओं के बस का नहीं, यह काम तो वसीअुलक़ल्ब (उदार हृदय वाले) साधू सन्तों और उ़लमा व सूफियों का है। अल्लाह ऐसे बुद्धिजीवियों को तौफ़ीक दे और वह मानव में मानवता लाने के लिए उठ खड़े हों और समाज के सुधार में केवल अपने विधाता को खुश करने के लिये तन, मन, धन से जुट जाएं।

हे प्रभु आनन्द दाता ज्ञान हम को दीजिये – शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से कीजिए।।
लीजिये हम को शरण में हम सदाचारी बनें – ब्रह्मचारी धर्म रक्षक वीर व्रतधारी बनें।।

कुरआन की शिक्षा

मौ० मंजूर नोमानी

तौहीद का आखिरी तक्मीली सबक़

तौहीद से मुतअ़ल्लिक कुर्आने मजीद की जो तअ़लीम यहां तक पेश की गयी है वह भी वास्तविक रूप से कुर्आने–मजीद का और इस्लाम का इम्तियाज़ (विशेषता) है, और इस दुन्या के किसी दूसरे सहीफे (किताब) और किसी हिदायत–नामे में, और किसी हादी (रास्ता दिखाने वाले) और पेशवा की तालीम में तौहीद का ऐसा जामे (संतुलित–संकलन) और मुकम्मल (पूर्ण) सबक़, जहाँ तक कि हमें मालूम है, मौजूद नहीं है– लेकिन कुर्आन ने इस सबसे भी आगे बढ़कर तौहीद की तालीम के सिलसिले में एक और ऐसी बात कही है जिसको "तौहीद का आख़री तकमीली सबक़" कहा जा सकता है।

सूरए– अन्आ़म के आख़री रुकूअ़ में खुद कुर्आन के लाने वाले रसूल (साल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को मुख़ातिब (संबोधित) करके इर्शाद फर्माया गया है:–

तर्जमाः– आप एलान कीजिये कि मेरी नमाज़ और मेरी हर तरह की इबादत और कुर्बानी और मेरा जीना और मरना सब कुछ अल्लाह रब्बुलआलमीन के लिये है, जिसका कोई शरीक नहीं, मुझे यही हुक्म दिया गया है। और मैं सबसे पहले सरे–इताअ़त ख़म करने वाला हूं (उसके सामने अपने को समर्पित करने वाला हूं) (६:१६३,१६४)

इस आयत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एलान कराया गया है कि :–

मेरी नमाज़ें और मेरी सारी इबादतें सिर्फ़ अल्लाह के लिये हैं। और इसी तरह मेरी पूरी ज़िन्दगी और मेरी मौत भी अल्लाह "वहदहू लाशरीक" ही के लिये है, और मुझे इसी का हुक्म है कि नमाज़–व–इबादत की तरह मेरी सारी ज़िन्दगी बल्कि मेरी मौत भी अल्लाह के लिये हो। मैं जो कुछ करूं उसी के लिए करूं। और उसी के हुक्म के मुताबिक़ करूं, और उसी की फर्माबरदारी में जियूँ और मरूं–और अपने मालिक के इस हुक्म पर मैं सबसे पहले अपना सिर झुकाता हूँ, और जिन्दगी का हर लम्हा (क्षण) उसकी खुशनूदी हासिल करने में और उसी की बन्दगी और गुलामी में गुज़ारने का फैसला करता हूँ।

बेशक तौहीद का आला दर्जा यही है कि बन्दा अपने आप को पूरी तरह से अल्लाह की अब्दियत (गुलामी) में दे दे और तय कर ले कि मैं और मेरी मौत–व–हयात (जीवन) और मेरा सब कुछ बस अल्लाह के लिये है, उसी के वास्ते और उसी के हुक्म पर मुझे जीना और मरना है।

कुर्आने–मजीद में तौहीद के इस आख़री और तकमीली सबक के लिये जो यह पैराया इख़तियार किया गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने मुतअ़ल्लिक यह एलान करने का हुक्म दिया गया, तो इसमें एक खास हिक्मत और मसलिहत शायद यह भी है कि जब कोई पैग़म्बर खुद अपनी ही ज़बान से दुन्या को अपने मुतअ़ल्लिक यह बतलाये कि मेरी सारी नियाज़मंदियाँ और इबादत गुज़ारियाँ अल्लाह ही के लिये हैं और मेरा जीना–मरना भी उसी के वास्ते है और मैं सबसे पहले उसके हर हुक्म पर अपना सिर झुकाने वाला हूँ, यानी बन्दगी और समर्पित करने के संबंध में भी सबसे आगे और सबका पेशरौ (अग्रगामी) हूँ, तो फिर किसी के लिये इसकी बिल्कुल गुंजाइश नहीं रहती कि वह उस पैग़म्बर को खुदा या खुदायी में शरीक समझे।

यह हक़ीक़त है कि मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को 'खातिमुल अम्बिया' और सय्यिदुर्रुसुल (रसूलों के सरदार) मानने वाली उम्मत के लिये तौहीद के बाब में सबसे बड़ा खतरा यही था कि आप (स०) के गैर मामूली कमालात और मुअ़जिज़ों से मबहूत (निस्तब्ध) होकर ईसा अ़लैहिस्सलाम की तरह आप (स०) को भी खुदा या खुदायी में शरीक समझ लिया जाता। इसीलिये कुर्आने मजीद में आप की अ़ब्दियत व बशरियत (मनुष्यता) और अल्लाह–तआ़ला के हुजूर में आप की नियाज़मंदी और समर्पण को जगह–जगह उजागर किया

गया है। और इसके लिये अक्सर जगहों पर बयान का यही तरीक़ा इख़तियार किया गया है कि खुद आप (स०) की ज़बान से इसका एलान व इज़हार कराया गया है– कहीं इर्शाद है :–

तर्जमाः– ऐ रसूल! आप एलान फर्मा दीजिये कि मैं बस तुम जैसा एक इन्सान हूँ, मेरी तरफ, अल्लाह की तरफ़ से यह वहि की जाती है कि तुम्हारा माबूद एक ही माबूद है, बस तुम उसी की तरफ सीध बांध लो और उससे बखशिश तलब करो, और मुशरिकों के लिये बड़ी खराबी है। (४१:६)

कहीं इर्शाद है :–

तर्जमाः – ऐ पैग़म्बर! आप उनको कहिये कि पाक है मेरा पर्वर्दिगार (उसे सब कुछ कुदरत है) और मैं तो बस एक आदमी हूँ अल्लाह का पैग़ाम लाने वाला। (१७:९३)

कहीं इर्शाद फर्माया गया :–

तर्जमाः– ऐ पैग़म्बर! आप एलान कर दीजिये कि मैं इख़तियार नहीं रखता तुम्हें कोई नुक्सान पहुंचाने का, और न किसी भलाई पहुंचाने का। (और) एलान कर दीजिये कि (अल्लाह अगर मुझे पकड़ना चाहे, तो) हरगिज़ नहीं बचा सकता कोई मुझे अल्लाह की पकड़ से और न हरगिज़ मैं उसकी रहमत के दामन के सिवा कहीं पनाह पा सकता हूँ। (७३:२१,२२)

और एक जगह हुक्म फ़र्माया गया :–

तर्जमाः– ऐ पैग़म्बर! आप एलान कर दीजिये कि मैं तो खुद अपनी जान के नफ़ा और नुक्सान का भी इख़तियार नहीं रखता मगर जो खुदा चाहे– और अगर मैं ग़ैब की बातों को जानने वाला होता तो बहुत से नफों को समेट लिया करता और मुझे कोई तकलीफ ज़िन्दगी मे न पहुंचती मैं तो बस अ़ज़ाब के ख़तरे से ख़बरदार करने वाला और बशारत (खुश खबरी) सुनाने वाला हूँ। (७:१८८)

उम्मते–मुहम्मदी (स०) को शिर्क के इस ख़तरे से बचाने के लिये कुर्आन करीम में एक खास एहतिमाम (व्यवस्था) यह भी किया गया है कि जिन–जिन जगहों पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ग़ैर मामूली (अद्भुत) कमालों और खासुल खास (विशेषतम) बुलन्दियों का ज़िक्र आया है वहाँ खास तौर पर आपके लिये "अब्द" (बन्दा) का शब्द बोला गया है। चुनांचे मेराज में जो बहुत ही बड़ी तरक़्क़ी और बुलन्दी आप को हासिल हुयी (जो आपके सिवा किसी नबी और किसी फरिश्ते को भी हासिल नहीं हुयी) उसको कुर्आने–मजीद ने इन शब्दों में बंयान यिका है:–

तर्जमाः– पाक ज़ात है वह जो रात में ले गया अपने बन्दे को। (१७:१) और इसी मेराज के सफर के सिलसिले में जहाँ सूरए अन्नज्म में मकामे "काब कौसैनि औ अद्ना" तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पहुंचना ज़िक्र किया गया है वहाँ भी फ़ औहा इला अ़ब्दिही मा औहा फर्मा कर आप के मकामे– अब्दीयत को याद दिलाया गया है।

इस मौके पर यह बात भी ज़िक्र करने के लाइक है कि शहादत (गवाही) के जिस कलिमे को इस्लाम की बुन्याद करार दिया गया है यानी–

अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्न मुहम्मदन् अ़ब्दुहू व रसूलुहू

इसमें जिस तरह अल्लाह तआ़ला की वहदानियत की शहादत (गवाही) और इसका एलान व इकरार है उसी तरह इस हक़ीक़त का भी एलान व इक़रार (कबूल करना) है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत (रसूल होना) के साथ आप (स०) की अब्दियत और बन्दगी की शहादत (गवाही) भी ईमान का जुज़ (हिस्सा) करार दी गयी है, जिसके बग़ैर कोई आदमी मुसलमान हीं नहीं हो सकता।

इन वरक़ों (पृष्ठों) में अगरचे सिर्फ कुर्आन की दावत–तालीम पेश करने का इरादा किया गया है लेकिन इस मौक़े पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चंद वे इर्शादात की नक़्ल कर देने को बे इख़तियार जी चाहता है, जिनमें आपने अपनी अ़ब्दियत का खुला इज़हार फर्माया है और उम्मत को उस गुमराही से बचाने की इमकानी (संभाव्य) कोशिश फर्माई है, जिसमें आप से पहले पैग़म्बर हज़रत मसीह (ईसा) अ़लैहिस्सलाम की उम्मत और बाज़ दूसरी उम्मतें मुब्तला हुयीं। आप (स०) का मशहूर इर्शाद है:–

तर्जमाः– ईसाइयों ने जिस तरह ईसा बिन मर्यम को हद से बढ़ाया, खबरदार तुम मेरे साथ ऐसा न करना। मैं बस अल्लाह का बन्दा हूँ, इसलिये (मुझे बन्दगी और पैग़म्बरी ही के मक़ाम पर रखना, और) अल्लाह का बन्दा और रसूल ही कहना। (बुखारी)

एक दूसरी हदीस में है कि आप (स०) ने एक मौक़े पर अपने सहाबा को ताकीद फर्मायी :–

तर्जमाः– तुम मुझको मेरे असल मर्तबे से मत बढ़ाओ, अल्लाह तआ़ला ने मुझे अपना रसूल क़रार देने से पहले अपना बन्दा बनाया है (पस मैं रसूल होने से भी पहले बन्दा हूँ।) (कनजुल

उम्माल)

एक मौक़े पर चंद सहाबा से आप (स०) की अज़मत व अक़ीदत के इज़हार करने में कुछ बे एतिदाली (असंतुलन) और लग़ज़िश (भूल) हो गयी तो आप (स०) ने बड़ी तंबीह (ताकीद) फर्मायी और इर्शाद फर्मायाः—

तर्जमाः— लोगों तुम्हें शैतान गुमराह न कर दे, मैं अब्दुल्लाह का बेटा मुहम्मद (स०) हूँ, अल्लाह का बन्दा हूँ और उसका रसूल। मुझे यह बात अच्छी नहीं लगती कि तुम मुझे मेरे उस मर्तबे से ऊपर उठाओ, जहाँ अल्लाह ने मुझे रखा है। (कन्जुल उम्माल)

एक बार किसी सहाबी की ज़बान से बात करते करते निकल गया।

"मा शॉअल्लाह व शिअ्त" (यानी वह होगा जो अल्लाह चाहे, और जो आप चाहें।)

इस बात पर आप (स०) बहुत खफा हुये और फ़र्मायाः—

तर्जमाः— तुमने मुझको खुदा के बराबर कर दिया। यू नहीं, बल्कि यूं कहो, कि जो तन्हा खुदा चाहे वह होगा। (कन्जुल उम्माल)

आप (स०) के सामने चंद अगली उम्मतों का यह उदाहरण था कि अल्लाह के जिन नबियों ने ज़िन्दगी भर तौहीद के रासते में कोशिश की और शिर्क को जड़ से उखाड़ फेंकने में अपनी सारी उम्र सर्फ़ की, उनही के उम्मतियों ने उन पैग़म्बरों की वफात के बाद उनकी क़ब्रों को सज्दा करना शुरू किया और उसको अपना माबूद बना लिया। इसलिये आपने पहले ही से आगाही दी (सावधान किया) और पहले ही उस पर रोक लगा दी—

तर्जमाः— तुमसे पहली बाज़ उम्मतों ने अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दे की जगह बनाया था (यानी क़ब्रों को सज्दा करते थे) देखो तुम क़ब्रों को सज्दागाह न बना लेना। मैं तुमको साफ—साफ इससे मना करता हूँ। (मुस्लिम)

और वफ़ात से कुछ ही पहले अपनी आख़िरी बीमारी में खुदा से दुआ फर्मायी :—

तर्जमा :— ऐ मेरे अल्लाह! ऐसा न हो कि मेरी क़ब्र बुत की तरह हो जाये, जिसकी लोग पूजा करें; अल्लाह का सख़्त गज़ब उन लोगों पर हुआ है, जिन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सज्दागाह बनाया। (मुवत्ता इमाम मालिक)

अल्लाह की तरफ से कुर्आन लाने वाले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ये सारे इर्शादात और अपनी परिस्तिश के इमकानात (संभावनाओं) को पूरी तरह खत्म करने के लिये आप (स०) की ये खुली तंबीहें और ताकीदें, अस्ल में कुर्आने—मजीद ही की तौहीद की तालीम की तशरीह व तफ़सीर (स्पष्टीकरण) हैं।

अल्लाह तआला अपने उस पाक पैग़म्बर (स०) पर अपनी बेशुमार रहमतें नाज़िल फर्माये जिसने तौहीद की तालीम को इतना साफ और उजला करके दुन्या के सामने पेश किया और शिर्क के हर इम्कानी (संभाव्य) रास्ते को बन्द कर दिया।

●●●

पाठकों से अनुरोध है कि अगर सच्चा राही आप को अच्छा लगता है तो कम से कम एक ग्राहक तैयार कीजिए।

-सम्पादक

साथ तो चलो

आओ, मिल जुल
साथ तो चलो
लेकर जोड़ की
बात तो चलो
धरती पर बस
एक ही घर हो
गांव एक हो
एक शहर हो
विषय के घेरे
नहीं जहां पर
हों मधुरिम
बरसात तो चलो
बहुत घटे हम
अलग—अलग रह
अलगावों की कथा
को सुन कह
भूली बीता बात
ऐ यारो
हाथ में ले
हाथ तो चलो
कालियें का बचपन
छिनता है
फूलों को योवन
छिनता है
काली आंधी के
विरुद्ध तुम
बन के झंझावात
तो चलो
अभिराम सत्यत

जय शील

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

अल्लाह को वह अमल महबूब है जिस पर मुदावमत की जाये

हज़रत आयशः (रज़ि०) से रिवायत है कि अल्लाह तआ़ला को वही इबादत व अ़मल महबूब है जिस पर अ़मल करने वाला हमेशा क़ायम रहे।

तहज्जुद (की नमाज़) की क़ज़ा दिन में

हजहरत उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जो तहज्जुद से पहले सो जाये फिर वह नमाज़ सुबह और जुहर के दर्मियान पढ़ ले, तो उसको वैसा ही सवाब मिलेगा गोया रात ही को पढ़ी है। (मुस्लिम)

तहज्जुद की मुदावमत

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० बिन अम्र रज़ि० बिन अलआ़स से रिवायत है कि मुझसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने फरमाया, ऐ अब्दुल्लाह! तुम उस शख्स की तरह न होना जो रात को इबादत किया करता था, फिर छोड़ दिया। (बुखारी–मुस्लिम)

तहज्जुद की क़ज़ा दिन में

हज़रत आयशा रज़ि० फरमाती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी दर्द या तकलीफ की वजह से तहज्जुद छोड़ देते थे तो सुबह को बारह रकात पढ़ते थे। (मुस्लिम)

कसरते सवाल की मुमानिअ़त

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाहसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मुझको छोड़ दो जब मैं तुमको छोड़ू; बेशक अगली उम्मतों की कसरतें सवाल ने और अम्बिया की मुखालिफ़त ने हलाक किया। जब तुमको किसी बात से मना करूं तो उससे बाज़ रहो और जिस बात का हुक्म दं उसको करो जितनी तुममें इस्तिताअ़त हो। (बुखारी)

हर बिद्अ़त गुमराही है

हज़रत इरबाज़ रज़ि० बिन सारियः से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमको ऐसी बलीग़ और मुअस्सिर नसीहत की कि जिससे हमारे दिल दहल गये और आँखें अश्कबार हो गयीं। हमने कहा, या रसूलल्लाह! यह नसीहत तो ऐसीहै गोया आप हमसे रुख्सत हो रहे हैं। तो आप हमें वसिय्यत कीजिए। आपने फरमाया, मैं तुमको अ़ल्लाह की परहेज़गारी की सुनने और इताअ़त की वसिय्यत करता हूँ अगरचि तुम पर एक हब्शी गुलाम हाकिम हो और तुममें जिसकी उम्र लांबी होगी वह बहुत इख़्तिलाफ देखेगा। तो चाहिए कि मेरी और खुलफाए राशिदीन हिदायत पाने वालों की सुन्नत को अपने दाँतों से मज़बूत पकड़ ले और नयी–नयी बातों से बचे, बेशक हर बिद्अ़त गुमराही है। (अबूदाऊद–तिर्मिज़ी)

किसी ऐसी चीज़ को जिसे अल्लाह और उसके रसूल ने दीन में शामिल नहीं किया है और उसका हुक्म नहीं दिया है। दीन में शामिल कर लेना और उसका एक जुज़ बना देना, उसको सवाब और तक़र्रुब–इलल्लाह के लिए करना, उसकी किसी खुदसाख्तः शक्ल और अपने वज़अ किये हुए शराइत व आदाब की इसी तरह पाबन्दी करना जिस तरह एक शरई हुक्म की पाबन्दी की जाती है, बिद्अ़त है, और हर बिदअ़त गुमराही है। इसमें किसी की तख्सीस व इस्तिस्ना नहीं। जो उसमें से किसी को मुस्तस्ना करता है वह गोया बकौल हज़रत मुजद्दिद अल्फसानी (र०) कहता है कि 'बाज़ बिद्अतें गुमराही हैं और बाज़ हिदायत हैं'। और यह हदीस की सरीह मुखालिफत है। इसलिए कि हदीस में आया है कि हर बिद्अ़त गुमराही है।

नाफ़रमानी इन्कार है

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मेरी उम्मत के सब लोग जन्नत में जायेंगे। मगर वह जन्नत से महरूम रहेंगे जिन्होंने इन्कार किया। लोगों ने कहा, या रसूलल्लाह! इन्कार कौन करेगा? आपने फरमाया, जिसने मेरी इताअ़त की वह जन्नत में दाखिल होगा जिसने नाफ़रमानी की उसने इन्कार किया। (बुखारी)

नाफ़रमानी और इन्कार की शामत

हज़रत अबू मुस्लिम (र०) या सलमा बिन अकवअ़ (र०) से रिवायत है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि एक आदमी अपने बायें हाथ से खाना खा रहा था। आपने फरमाया, सीधे हाथ से खाओ; उसने कहा, मैं नहीं खा सकता (उसके गुरूर ने यह बात कहलाई थी)। आपने फरमाया, न खा सको। फिर अपना सीधा हाथ कभी मुंह की तरफ न उठा सका। (मुस्लिम)

सफ बराबर न करने का वबाल

हज़रत नुअ़मान बिन बशीर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते सुना कि अपनी सफ़ों को बराबर करो वरना अल्लाह तआ़ला तुममें फूट डाल देगा।

और मुस्लिम की एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम हमारी सफों को बराबर कर रहे थे गोया पांसा को बराबर करते हैं, यहाँ तक कि आपको मालूम हो गया कि हम लोग समझ गये। एक दिन आप निकले और खड़े हुए। करीब था कि तक्बीर कहें इतने में एक आदमी का सीना निकला हुआ देखा। फ़रमाया अल्लाह के बन्दो! अपनी सफ़ों को बराबर करो नहीं तो अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आपस में फूट डाल देगा।

सोते वक़्त आग बुझा दो

हज़रत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि मदीना में एक घर मय घरवालों के जल गया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को खबर पहुंची तो आपने फरमाया, आग तुम्हारी दुश्मन है। जब तुम सोने का इरादा किया करो तो उसको बुझा दिया करो। (बुखारी)

एक बेहतरीन मिसाल

हज़रत अबू मूसा (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (स०) ने फ़रमाया, मेरी और उस इल्म व अ़मल की मिसाल जिसके साथ मैं भेजा गया ऐसी है जैसे किसी ज़मीन पर बारिश हो। उस ज़मीन का एक टुकड़ा अच्छा है। उसने पानी को कुबूल किया और बहुत घास और सब्ज़ः उगाया। और एक टुकड़ा ऐसा है जिसने पानी को रोक लिया, अल्लाह ने उससे लोगों को नफ़ा पहुंचाया, उससे लोगों ने पिया और पिलाया और खेती की। और एक टुकड़े पर पहुंचा जो बंजर है; न पानी को रोका न सब्ज़ः उगाया। पस वह (पहली) मिसालें उसकी है जिसने अल्लाह के दीन में समझ हासिल की, अपने को नफ़ा पहुंचाया, सीखा और सिखलाया। और यह (दूसरी) मिसाल उस शख़्स की है कि अल्लाह की उस हिदायत पर, जिसके साथ मैं भेजा गया हूँ, सर उठा कर भी न देखा और न मुतवज्ज़िः हुआ। (बुखारी, मुस्लिम)

कादियानियत

कादियानियत एक फ़ित्ना है जो दीन से नावाक़िफ़ ग़रीब मुसलमानों में क़ादियानयों द्वारा फैलाया जा रहा है, हर पढ़े लिखे दीनदार पर फ़र्ज़ है कि वह अपने भाईयों को क़ादियानियत से बचाए इस सिलसिले की मालूमात के लिए सम्पर्क करें:

शोब–ए–दावत व इर्शाद
पो०बा० ६३, नदवा,
लखनऊ–२२६००७
फोन : २७४१२३१

हम तो अल्लाह तेरे बन्दे है

अमतुल्लाह तस्नीम

लाई हूं आज शिक्व–ए–बेदाद
सुन ले फ़र्याद रस मेरी फ़र्याद

देख हम उम्मते मुह़म्मद हैं
कर बह़क़्क़े नबी मेरी इम्दाद

ह़ाले दिल जा के हम कहें किस से
कौन तेरे सिवा सुने फ़र्याद

हम गुनहगार हैं बहुत लेकिन
तेरी रह़मत की कुछ नहीं तादाद

जाल फिकरों का हर तरफ़ फैला
फ़िक्रें मेरे लिए बनी सय्याद

रोज़ व शब मुस्लिमों पे सख़्तीये दहर
दिल सितम कश जहां सितम ईजाद

देख बर्बाद हो न जाए दिल
तेरा मस्कन है रख इसे आबाद

हम तो अल्लाह तेरे बन्दे हैं
गैर की बन्दगी से कर आज़ाद

दोस्ती ऐसी कर अ़ता मुझ को
कि इताअ़त के सिवा न हो कुछ याद

जान जाए तेरी मह़ब्बत में
मौत आए न आए दुन्या याद

मर के पा जाए चैन वह तस्नीम
आखें ठण्डी हों और दिल शाद

सदक़ात और ज़कात के बारे में अल्लाह के रसूल स० का तरीक़ा

अल्लाह के रसूल स० का माल और अपने घर वालों के साथ मामला नबवी नुक्त–ए–नज़र का पूरा पूरा तर्जुमान था। आख़िरत की ज़िन्दगी पर हर वक्त आपकी नज़र रहती थी। आप दुआ करते:–

"ऐ अल्लाह ज़िन्दगी तो आखिरत ही की ज़िन्दगी है। मुझे यह अच्छा लगता है कि एक दिन पेट भर कर खाऊँ, एक दिन भूखा रहूँ।"

"ऐ अल्लाह! आल मुहम्मद (स०) को गुज़ारा भर के लिए रिज़्क़ अता फरमा।"

आप अपनी ज़रूरत से ज्यादा और सदक़ात के माल में से बचा हुआ माल थोड़ी देर भी रखना पसन्द न करते। हज़रत आयशा रज़ी० से रवायत है कि "अल्लाह के रसूल स० के मर्ज़े वफात के ज़माने में मेरे पास छः या सात दीनार थे। आपने मुझे हुक्म दिया कि इसको तक़सीम कर दूँ। मगर आपकी तकलीफ़ की वजह से मुझे इसका मौका न मिला फिर आपने मुझसे पूछा। तुमने उन छः सात दीनारों के साथ क्या किया? मैंने कहा कि ख्याल न रहा। आपने उसको मंगवाया, अपने हाथ पर रखा, और फरमाया कि अल्लाह के नबी का क्या गुमान होगा, अगर वह खुदा से इस हाल में मिले कि उसके पास यह हो।" सही हदीस में है कि आपने फरमाया, "जिसके पास सामान ज़ायद हो तो उसको दे दे जिसके पास सामान न हो"।

अल्लामा इब्ने कैयिम नफ़्ली सदकात के बारे में आपके मामूल का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं :–

"अल्लाह के रसूल स० अपने माल को सबसे ज्यादा सदकात व खैरात में खर्च करते थे, अल्लाह तआला जो भी आपको अता फरमाता, आप न उसको बहुत ज़्यादा समझते न कम ही समझते। आपसे अगर कोई शख्स सवाल करता और आपके पास वह चीज़ होती तो कम ज़्यादा का ख़्याल किये बगैर उसको दे देते। आप इस तरह देते थे जैसे कमी व तंगी का कोई खौफ न हो। अतियात, सदकात व ख़ैरात आपका महबूब अमल था। आप देकर इतना खुश होते जितना लेने वाला लेकर न होता था। सख़ावत में कोई आपका सानी नहीं था आपका हाथ सदकात की बादे वहारी था। अगर कोई मुहताज व ज़रूरतमन्द आ जाता तो अपने ऊपर उसको तरजीह देते, और ईसार से काम लेकर कभी खाना कभी कपड़ा इनायत फ़रमा देते। आपके देने के अन्दाज़ भी जुदागाना होहते थे। कभी हिबा कर देते, कभी सदका देते कभी हदिया के नाम से देते। कभी किसी से कोई चीज़ खरीदते। फिर उसको उसका सामान और कीमत दोनों ही दे देते, जैसा आपने हज़रत जाबिर रज़ी० के साथ किया, कभी किसी से कर्ज़ लेते और जब कर्ज़ वापस करते तो असल से ज़ायद और बेहतर देते, कभी कोई चीज़ खरीदते और असल कीमत से मौ० स० अबुल हसन अ़ली हसनी ज़ायद देते। हदिया कबूल फरमाते फिर उससे बेहतर कई गुना ज़्यादा हदिया देते। गरज़ कि हर मुमकिन तरीके से सदकात और नेकी व सिल–ए–रहिमी के नये तरीके और निराले अन्दाज़ पैदा फरमा लेते।"

ज़कात के बारे में भी वक्त, मिकदार, निसाब, और किस पर वाजिब होती है और इसके क्या मसारिफ हैं हर लेहाज़ से आपकी लाई हुई शरीअत और आपका तरीक़ा बड़ा कामिल और जामे है। आपने इसमें मालदारों का भी ख्याल फरमाया और मिसकीनों की मसलहत का भी। अल्लाह तआला ने ज़कात को माल और साहबे माल के लिए पाकीज़गी का सबब और मालदारों पर इनामात का ज़रिया बनाया है।

आपका मामूल यह था कि जिस इलाके के मालदारों से जकात लेते उसी इलाके के ग़रीबों और मिसकीनों में बांट देते। अगर वह उनकी ज़रूरत से जायद होती हो तो आप की ख़िदमत में लाई जाती और आप खुद तकसीम फरमाते। जकात लेने वालों को आप सिर्फ उन मालदारों के पास भेजते थे जो जानवरों, खेती, बाग़ात के मालिक हों। आपका यह तरीक़ा न था कि ज़कात में मालदार का अच्छा माल ले लिया जाये बल्कि दरमियानी दर्जे का लिया जाये। आपने फित्रा की अदायगी भी ज़रूरी बताई और आपका मामूल यह था कि ईदगाह जाने से पहले फित्रा निकाल देते थे।

रोज़ा और उसवये नबवी स०

सन् दो हिजरी में रोज़ा फर्ज़ हुआ और अल्लाह के रसूल स० ने नौ बार रमज़ान के रोज़े रखकर वफात पाई। रोज़े के बारे में आपका तरीका जामे, सहल और आसान था। रमज़ान के महीने में आप मुख्तलिफ इबादात की कसरत फरमाते थे। हज़रत जिब्रील आते थे, और आपसे कुरआन पाक का दौर करते थे। हज़रत जिब्रील के आने पर आपकी सख़ावत का फैज़ इस तरह जारी होता था जैसे इनामात की तेज़ हवा चल जाये। रमज़ान में आप बहुत सी वह इबादतें करते थे जो गैर रमज़ान में नहीं करते थे। यहाँ तक कि कभी कभी मुसलसल रोज़ा रखते। हालाँकि सहाबाक्राम के लिए आपने मुसलसल रोज़ा मनाकर रखा था। जब सहाबा ने अर्ज़ किया कि आप तो मुसलसल रोज़ा रखते हैं तो आपने फरमाया "मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ। मैं अपने रब के पास इस हाल में रात गुज़ारता हूँ (और एक रवायत में है कि दिन गुज़ारता हूँ) कि वह मुझे खिलाता है"। सहरी खाने पर आप ज़ोर देते। इसकी तरग़ीब देते और मुसलमानों के लिए इसको मसनून करार देते थे। हज़रत अनस बिन मालिक रज़ी० बयान करते हैं कि आपने फरमाया, "सहरी खाओ क्योंकि सहरी में बरकत है।" आपने फरमाया, "हमारे और अहले किताब के रोज़ों में फर्क़ सहरी के खाने का है।" इफतार में देर करने से मना फरमाते और फरमाते "लोग उस वक्त तक ख़ैर के साथ रहेंगे जब तक इफ़तार में जल्दी करेंगे", और फरमाते "दीन उस वक्त तक ग़ालिब रहेगा जब तक लोग इफ़तार में जल्दी करेंगे, क्योंकि यहूद व नसारा देर करते हैं" और सहरी में आप और आपके असहाब का तरीका ताखीर का था।

मामूल यह था कि नमाज़ से पहले इफतार करते, चन्द तर खजूरें अगर मौजूद होतीं खाते, अगर न होतीं तो खुश्क खजूरें खाते, वरना पानी ही के चन्द घूंट पी लेते। इफतार करते वक्त फरमाते :–

'ऐ अल्लाह आप ही के लिए रोज़ा रखा, और आप ही के रिज़्क से इफतार करते हैं।"

और फरमाते :–

"प्यास बुझ गई, रगें तर हो गईं और इंशाअल्लाह तआला अज्र साबित हो गया।"

रमज़ान में आपने अस्फ़ार भी फरमाये हैं, कभी रोज़ा रखा, कभी न भी रखा और सहाबा को रोज़ा रखने न रखने का इख्तेयार दिया। अगर जंग सर पर होती तो रोज़ाा न रखने का हुक्म देते ताकि दुश्मन से जंग करने की ताक़त रहे। रमज़ान ही में आपने सबसे बड़ी फैसलाकुन ग़ज़वये बदर और गज़वये फतेह मक्का का सफर किया नमाज़ तरावींह आपने तीन दिन पढ़ाई। एक एक करके बहुत से लोगों तक खबर पहुंच गयी और कसीर मजमा इकट्ठा हो गया। चौथी रात में मजमा इतना हो गया कि मस्जिद नाकाफी हो गई, उस रात आप घर से नमाज़ फज्र ही के लिए निकले और फज्र की नमाज़ के बाद लोगों से हम्द व सना के बाद फरमाया "मैं तुम्हारे यहाँ (इतनी तादाद में) मौजूद होने से लाइल्म न था, लेकिन मुझे इसका खौफ हुआ कि कहीं यह नफ्ल नमाज़ तरावीह तुम पर फर्ज न कर दी जाये और फिर वह तुमसे निभ न सके, फिर अल्लाह के रसूल स० की वफात तक बात यहीं तक रही। आपके बाद सहाबा ने तरावीह का एहतमाम किया, यहाँ तक कि वह अहले सुन्नत का शेआर बन गई।

अल्लाह के रसूल स० कसरत से नफ़्ल रोज़े रखते थे और छोड़ भी देते थे। रखते तो ख्याल होता रखते ही रहेंगे और छोड़ते तो ख्याल होता कि अब नहीं रखेंगे। लेकिन रमज़ान के अलावा किसी महीने के पूरे रोज़े नहीं रखे। और शाबान में जितने रोज़े रखते थे उतने किसी महीना में नहीं रखते थे। दोशंबा और जुमेरात के रोज़े का ख़ास एहतमाम फरमाते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ी० कहते है। कि, "अल्लाह के रसूल स० सफर व हज़र किसी हालत में महीने की १३, १४, १५ (अय्यामे बीज) के रोज़े नहीं छोड़ते थे और इसकी ताकीद फरमाते थे। और इन दिनों के मुकाबले में आशूरा का ख़ास एहतमाम था। आपने आशूरा का रोज़ा रखा तो आप से अर्ज़ किया गया कि यह दिन तो यहूद व नसारा के यहाँ मुकद्दस दिन है। आपने फरमाया अगर अगले साल मौका मिला तो इंशा अल्लाह नवीं का भी रोज़ा रखेंगे।

अरफा के दिन आप रोज़ा नहीं रखते थे। आपका मामूल कई कई दिन लगातार रोज़ा रखने का नहीं था। आप ने फरमाया, "अल्लाह को दाऊद का रोज़ा सब से ज्यादा पसन्द है। वह एक दिन रोज़ा रखते थे एक दिन छोड़ते थे। आपकी यह भी आदतें शरीफ़ा थी कि घर तशरीफ ले जाते और पूछते कुछ खाने को है। अगर जवाब "नहीं"

(शेष पृष्ठ २३ पर)

तीसरी किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अखलाक

सय्यिद सुलैमान नदवी

अख़लाक़ी मुअल्लिमों में हमारे नबी सल्ल० का इम्तियाज़

दुनिया में अख़लाक़ (आचरण) के बड़े बड़े मुअल्लिम पैदा हुए जिन के मकतब में आकर बड़ी बड़ी कौमों ने सीख ली और आदाब व अखलाक के वह सब की उन से हासिल किये जो सैंकड़ों और हजारों वर्ष गुजरजाने के बाद भी अब तक उनको याद हैं और सच यह है कि आज जहां कहीं भी अच्छे अखलाक का कोई नमूना है उन्हीं की तालीम के सहीफः (धर्म ग्रन्थ) का एक वरक़ (पन्ना) है। मगर एक तनक़ीदी नज़र यह बता देगी कि इन अख़लाकी उस्तादों में बाहमी निस्बत क्या है? इन के तालीमी निसाब (पाठ्यक्रम) की तरतीब किन किन उसूलों पर खड़ी है, इन में दर्सगाहे आलम के सब से आखिरी मुअल्लिम आं हजरत सल्ल० को क्या इम्तियाज़ (विशिष्टता) हासिल है?

आं हजरत सल्ल० से पहले मानव जाति के अखलाक़ी मुअल्लिमीन की दो जमाअतें हैं – एक वह जिस ने अपनी तालीम की बुनियाद किसी उखरबी मज़हब पर रखी जैसे आम अंबिया अ० और बाज मजहबों के बानी (संस्थापक), दूसरी वह है जिस ने अपने फल्सफा व हिकमत और अक्ल दानायी (समझ) की बुनियाद पर अपनी इमारत खड़ी की। हम इन में से पहले को अंबिया और धर्म सुधारक और दूसरे को हुकमा के नाम से ताबीर कर सकते हैं। इन दोनों वर्गों ने अपनी तालीम के उसूल और तरीके अलग–अलग अपनाये। पैगम्बरों और मजहब के बानियों ने अपनी तालीमात का स्रोत हुक्मे खुदावन्दी को क़रार दिया हुक्म व फरमाने इलाही के सिवा उनकी तालीम की कोई और बुनियाद नहीं, न उनकी तालीम में इल्लत (कारण) व मालूल (वह चीज जिसका कोई कारण हो) का सिलसिला है, न अख़लाक़ के दक़ीक़ नुकतों की गिरह कुशाई (संकट समाधान) और न अहकाम व तालीमात की अख़लाक़ी मसलहतों और अक्ली हिकमतों की व्यवस्था (तसरीह) है। दूसरे फरीक की तालीमात में इल्लत व मालूल की परख, नफसियाती खवास की बहस अखलाक की गरज व गायत को सुनिश्चित करना, कारकों की विवेचना यह सब कुछ है मगर बहस व नज़र से आगे अमल का दर्जा शून्य मात्र है, अगर है तो बेकैफ़ और लज़्ज़त।

दुनिया के आख़िरी मुअल्लिम की तालीम में हुक्मे खुदावन्दी और अक्ली दकीक : रसी (विवेचना), फरमाने इलाही और अखलाकी नुक्तादरी, अल्लाह की मर्जी, किताब और हिकमत दोनों की आमेजिश है।

अंबिया और हुकमों में जो असली फर्क़ और इम्तियाज है वह यह है कि अंबिया की अखलाकी तालीमात के साथ साथ उनकी मासूम जिन्दगी, उनके पाक साफ कारनामे और उनके पाक असरात होते हैं जिन का फैज (उपहार) उनके एक एक अमल से खैर व बरकत की सलसबील बन कर निकलता है और प्यासों को सैराब करता है। लेकिन ऊंचे से ऊंचा हकीम और अखलाक का मर्मज्ञ (जानकार) जिस की अखलाकी बातों और बारीकियों से दुनिया चकित है और जिस ने इन्सान की एक एक आन्तरिक भावना, अन्तः शक्ति और अखलाकी फितरत का पता लगाया है। अमल के लेहाज से देखो तो उसकी ज़िन्दगी एक मामूली बाज़ारी से एक इंच ऊंची न होगी, वह गो दूसरों को रौशनी दिखा सकता है मगर खुद अन्धेरे से बाहर नहीं आता, वह दूसरों को राह दिखाने का दावेदार बनता है मगर खुद अमल की राह में भटकता फिरता है।

वह रहम व मुहब्बत के जादू के एक एक भेद को जानता है और गरीबों पर रहम खाना और दुश्मनों से मुहब्बत करना वह नहीं जानता, वह सच्चाई पर बेहतरीन तकरीर कर सकता है मगर वह खुद सच्चा और सीधा नहीं होता।

इस हक़ीक़त का दूसरा नतीजा यह है कि वह महज जबान या दिमाग होता है, दिल और हाथ नहीं, इसलिए उसके मुंह की आवाज किसी दिल पर असर नहीं करती बल्कि इधर सुना उधर भुला दिया। और अंबिया अ० चूंकि जो कुछ कहते हैं वह करते भी हैं, जो उनकी तालीम है बही उनका अमल है जो उनके मुंह पर है वही दिल में है। इसलिए उनकी तालीम

और मुहब्बत का फायदा खुशबू बनकर उड़ता और सुगन्ध फैलाता है। यही वह फर्क है जो अंबिया और हुकमा यानी मूसा, ईसा, मुहम्मद रसूलल्लाह सल्ल० और सुकरात, अफलातून और अरस्तू में नुमायां है।

सुकरात और अफलातून के संवाद और अरस्तू के अख्लाकियात को पढ़कर एक व्यक्ति भी अख़लाक़ वाला न बन सका मगर यहां कौमों की कौमें हैं जो मूसा, ईसा और मुहम्मद रसूलल्लाह सल्ल० की शिक्षा से अख़लाक के बड़े–बड़े दर्जे और मर्तबे पर पहुंची और आज भूतल पर जहां कहीं भी अच्छे अख़लाक की कोई किरन है वह नुबूवत की ही देन है।

मगर इस वस्फ़ (गुण) में सारे अंबिया बराबर नहीं बल्कि उनके अलग–अलग दर्जे हैं उनकी अमली (व्यवहारिक) हैसियत के कामिल होने के साथ जरूरत यह है कि उनके इस दर्जे–ए–कमाल की एक एक अदा अमल की सूरत में नुमायां हो ताकि हर पसन्द और हर रंग के साथी अपनी अपनी क्षमता के अनुसार उनकी अमली मिसालों से प्रभावित हों और फिर वह चिन्ह पर चलकर वांछित लक्ष्य प्राप्त कर सकें। अतएव एक कामिल और परिपूर्ण तथा अन्तिम मुअल्लिम (शिक्षक) के लिए नीचे दिये मापदण्डों पर उतरना जरूरी है।

१. उसके जीवन का कोई पहलू पर्दे में न हो।

२. उसकी हर ज़बानी तालीम के मुताबिक उसकी अमली मिसाल भी सामने मौजूद हो।

३. उसकी अख़लाकी ज़िन्दगी में यह परिणपूर्णता हो कि वह इन्सानों के हर कारआमद गिरोह के लिए अपने अन्दर अनुकरण और पैरवी का सामान रखती हो।

बेपर्दा ज़िन्दगी

तनकीद (समालोचना) के इन पैमानों पर अगर हम सारे अंबिया और मजहबों के बानियों की जिन्दगियों को जांचें तो मालूम होगा कि इनमें से किसी की जिन्दगी भी पैगम्बरे इस्लाम रसूलुल्लाह सल्ल० की हयाते पाक के बराबर जामे कमालात नहीं। दुनिया का कोई पैगम्बर या मजहब का बानी ऐसा नहीं है जिस की अखलाकी जिन्दगी का हर पहलू हमारे सामने इस तरह बेनकाब हो कि गोया वह खुद हमारे सामने मौजूद है। तौरात के पैगम्बरों में से कौन सा पैगम्बर है जिसके अख़लाक़ी कमालात हमारे इल्म में है। उन गैर अखलाकी किस्सों का जिक्र फुजूल है जिनको तौरात के रावियों (बयान करने वाले) ने मासूम बुजुर्गों के हालात में शामिल कर दिया है और कुर्आन ने हर जगह उन को इन बेहूदा इल्ज़ामात से पाक और बरी करार दिया है। हज़रत नूह से हज़रत मूसा अ० तक तौरात के एक एक पैग़म्बर पर निगाह डाल जाओ इनकी मासूम ज़िन्दगी के हालात की कितनी सतरें तुम्हारे सामने हैं, और क्या उनकी अख़लाक़ी शक्ल व सूरत की पूरी शबीह (चित्रण) दुनिया के सामने कभी मौजूद रही?

हज़रत ईसा अ० की तैंतीस वर्ष की ज़िन्दगी में से सिर्फ तीन वर्ष का हाल हम को मालूम है और इन तीन वर्षों के हालात में से भी मोजज़ात व करामात के सिवा कोई और हाल बहुत कम मालूम है ऐसी सूरत में क्या हम यह कह सकते हैं कि उनकी अख़लाक़ी ज़िन्दगी का कोई पहलू पर्दे में नहीं?

इन अंबिया अ० के अलावा हिन्दुस्तान, ईरान और चीन के मजहबों के बानी की अख़लाक़ी ज़िन्दगियों का जायजः लेना चाहो तो मालूम होगा कि इसके लिए दुनिया में कोई सामान ही मौजूद नहीं, क्योंकि उनकी अख़लाक़ी ज़िन्दगी के हर पहलू पर अज्ञानता का पर्दा पड़ा हुआ है। सिर्फ इस्लाम ही के एक मुअ़ल्लिम की ज़िन्दगी ऐसी है जिसका अक्षर–अक्षर दुनिया में महफूज़ और सबको मालूम है और बासवर्थ स्मिथ के कथनानुसार "यहां (सीरते मुहम्मदी) पूरे दिन की रौशनी है जिनमें मुहम्मद सल्ल० की ज़िन्दगी का हर पहलू चमकते सूरज की तरह नुमायां है।" आंहज़रत सल्ल० का खुद यह हुक्म था कि मेरे हर क़ौल और अमल को एक से दूसरे तक पहुंचाओ। राज के वाकिफकारों को इजाज़त थी कि मुझे एकान्त में जो करते देखो उस को सब के सामने सहज बयान करो, जो हुजरे में कहते सुनो उस को छतों पर चढ़कर पुकारो।

कथनी के साथ करनी

अब दूसरी हैसियत से गौर कीजिए, इन पाक हस्तियों और पवित्र आत्माओं की तालीम की अच्छाई अखलाकी अहकाम की खूबी और प्रवचनों की श्रेष्ठता में कोई सन्देह नहीं, लेकिन क्या दुनिया ने खुद इन बुजुर्गों के अमली अख़लाक़ का भी अनुभव और इल्म है? जैतून पहाड़ की प्रभावशाली वाणी (हज़रत ईसा अ०) की मासूमाना बातें सच्चाई और सीधापन की नसीहतें और अलंकृत व आकर्षक उपमाओं (तमसीलों) से भरी हुई तकरीरें दुनिया ने सुनी और उनकी गहराई और मिठास का मजा अब तक बाकी है, मगर क्या उसकी आंखों ने उस

मासूम (बेगुनाह) वक्ता की अमली मिसालें भी देखीं? क्या इस सल्बी (विनाशकारी) पहलू के सिवा उसको अखलाक का कोई ईजाबी (अनिवार्य) पहलू भी हमारे सामने है? वह जिसने यह कहा कि "सब कुछ तुम्हारे पास है जब तक उसको खुदा की राह में लुटा न दो, आसमान की बादशाहत में दाखिल न होगे।" क्या उसने अपना भी सब कुछ खुदा की राह में लुटाया? वह जिस ने यह कहा, "शरीरों (बदमाशों) का मुकाबला मत करो", क्या उसने खुद भी शरीरों का मुकाबला नहीं किया? वह जिस ने यह कहा कि, "दुश्मनों को भी प्यार करो," क्या उसने भी कभी अपने दुश्मन को प्यार किया? वह जिसने यह कहा कि, "तू अपने पड़ोसी को अपने सारे जान व माल से प्यार कर," क्या खुद भी उसका ऐसा ही अमल था? वह जिसने यह कहा कि, "अगर तुम्हारे दाहिने गाल पर कोई थप्पड़ मारे तो बायां गाल भी उसके सामने कर दो," क्या उसने खुद भी ऐसा किया? वह जिसने यह कहा कि, "तुम से अगर कोई तुम्हारा कुर्ता मांगे तो अपना चोगा भी उसके हवाले कर दो," क्या ऐसी फैय्याजी (उदारता) उसने खुद भी दिखाई? हम यह नहीं कहते कि हजरत मसीह में यह सिफतें मौजूद न थीं, बल्कि कहना है कि इंजील ने उसकी इस हैसियत को महफूज नहीं रखा है।

मगर इस्लाम के मुअल्लिम की शान इस हैसियत से भी ऊंची है। उसने जो कुछ कहा सबसे पहले उसको कर के दिखाया। उस का जो क़ौल (कथनी) था वही उसका अमल (करनी) था। उसने यहूदियों को ताना दिया, "क्या औरों को नेकी की बात बताते हो और खुद अपने को भूल जाते हो" (सूरः बकरः) और मुसलमानों को सचेत किया, "तुम क्यों कहते हो जो करते नहीं, बड़ी बेजारी है अल्लाह के यहां कि कहो वह जो न करो।" (सूरः सफ–२)

एक व्यक्ति ने आयशा सिद्दीकः रजी० से पूछा कि आंहजरत सल्ल० के अखलाक क्या थे? फ़रमाया कि तुमने कुर्आन नहीं पढ़ा। जो कुर्आन में अल्फ़ाज़ की सूरत में है वही कुर्आन वाले की सीरत (जीवनी) में अमल की सूरत में था। अगर गरीबों और दीन दुखियों की मदद का हुक्म दिया तो पहले खुद इस फ़र्ज़ को अदा किया, खुद भूखे रहे और दूसरों को खिलाया। अगर अपने दुश्मनों और क़ातिलों को माफ करने की नसीहत की तो पहले खुद अपने दुश्मनों और कातिलों को माफ किया। खाने में जहर देने वालों से दरगुज़र किया, अपनी ज़ात के लिए किसी से बदला नहीं लिया। जिन्होंने आप पर तीर बरसाये और तलवारें चलायीं, सशस्त्र होकर भी कभी उन पर हाथ नहीं उठाया। कपड़ों की घोर जरूरत के वक्त भी जिसने आप से कपड़ा मांगा खुद अपनी चादर उतार कर उसके हवाले कर दी। यही कारण है कि दूसरे मजहबों के लोग इन्सानों को अपने हादियों (मार्गदर्शकों) और रहनुमाओं की सिर्फ तालीमात और अक़वाल (कथन) सुनाते हैं और उनकी पैरवी के सहीफः ने खुद अपने पैगम्बर या बानी के आचरण को एलान के साथ उसके समकालीनों (हमअसरों) के सामने पेश नहीं किया लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के सहीफः ने सब से आगे बढ़कर बिला ख़ौफ व ख़तर अपने दायी (बुलाने वाला) और मुबल्लिग़ (पहुंचाने वाला) की जिन्दगी के आचरण को खुद उसके हमअसरों के सामने आमादा करने के लिए पेश किया। फरमाया, "ऐ इन्कार करने वालो मैं तो तुम्हारे बीच इस से पहले एक जमाना बसर कर चुका हूं, क्या तुम नहीं समझते (सूरः यूनुस–१६)। फिर आप को खिताब कर के खुद आप से फरमाया, "(ऐ मुहम्मद) बेशक तू अखलाक के बड़े दर्जे पर है। (सूरः कलम–४)

कामिल व मुकम्मल

अखलाकी मुअल्लिम के कमाल की एक और शर्त यह है कि उसकी तालीम में यह तासीर हो कि वह दूसरों को भी अपने फैज से नफा पहुंचा सके। यानी वह खुद कामिल हो और दूसरे नाकिसों को भी कामिल बनाता हो। वह खुद पाक हो और दूसरे नापाकों को भी धोकर पाक व साफ कर देता हो। अखलाक के सारे मुअल्लिमों की सूची पर एक नजर डाल जाओ कि यह तकमील (परिपूर्णता) की शान सब से ज्यादा किस में थी? क्या उसमें जिस को कदम कदम पर बनी इस्राईल की संगदिली और डेढ़ेपन की शिकायत करनी पड़ी है, क्या उसमें जिस के पूरे ग्यारह शागिर्द भी परीक्षा के समय पूरे न उतर सकें। या उसमें थी जिस की निसबत उसके सहीफः ने बार–बार एलान किया, "वह उनको खुदा की बातें सुनाता और उनको पाक व साफ बनाता और उनको किताब व हिमत सिखाता है।" (६२–२)

इस एलान में यह बात खास लेहाज के काबिल है कि इस में इस्लाम के मुअल्लिम की निसबत सिर्फ यही दावा नहीं है कि वह लोगों को किताब व हिकमत की बातें सिखाता और खुदा के अहकाम सुनाता है बल्कि यह भी है

कि वह उन को अपने फौज व असर से पाक व साफ भी बना देता है। वह नाकिसों को कामिल, गुनहगारों को नेक, अन्धों को बीना और तारीक दिलों को रौशन दिल बना देता है। अतएव जिस समय उसने अपने जीवन का कारनामा खत्म किया कम से कम एक लाख इन्सान उसकी तालीम से नफा उठा चुके थे। और वह अरब जो आचरण की पस्ती की चरमसीमा पर था तेईस वर्ष के बाद वह अख़लाक के उस शिखर पर पहुंचा जिसकी ऊंचाई तक कोई सितारा आज तक न पहुंच सका।

नैतिक शिक्षा की विविधता (अख़लाकी तालीमे का तनौव्वुअ़)

अगर किसी मुअल्लिम में तकमील की यह तासीर भी हो, फिर भी यह देखना है कि इस आलम की तकमील और शान्ति व्यवस्था के लिए एक ही शक्ति के इन्सानों की नहीं बल्कि सैकड़ों शक्तियों के इन्सानों की जरूरत है। अख़लाक के दूसरे मुअल्लिमीन की दर्सगाहों पर एक नजर डालने से मालूम होगा कि वहां सिर्फ एक फन के तालिब इल्म तालीम पाते हैं। हजरत मूसा अ० की तरबियतगाह में फौजी तालीम के सिवा कोई और फन नुमायां नहीं। हजरत ईसा अ० के मकतब में क्षमा व दरगुजर के सिवा कोई और सबक नहीं। बौद्ध के विहार और खानकाह में दर बदर भीख मांगने वाले मुर्ताज (रियाजत करने वाला) फकीरों के सिवा कोई और मौजूद नहीं। लेकिन मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० की महान दर्सगाह में आकर देखो तो मालूम होगा कि एक सार्वजनिक संस्था है जिसमें इन्सानी तरक्की हर समय फूल–फल रही है। खुद मुअल्लिम की ज़ात एक पूरी यूनीवर्सिटी है जिस के अन्दर हर इल्म व फ़न का डिपार्टमेंट अपनी जहग पर कायम है और हर प्रकार और रूचि के विद्यार्थी आते हैं और अपनी अपनी पसन्द और क्षमता के अनुसार कमाल हासिल कर रहे हैं।

आप सल्ल० की हैसियत एक इन्सान, एक बाप, एक शौहर, एक दोस्त, एक क़ाजी (न्यायधीश), एक सिपहसालार, एक बादशाह, एक उस्ताद, एक वाइज (धर्मोपदेशक) एक मुर्शिद (पीर), एक ज़ाहिद व आबिद (परमभक्त) और आखिर में एक पैग़म्बर की नजर आती है यह तमाम इन्सानी तब्के आपके चेले हैं और अपने अपने पेशा व फन के अनुसार आप की तालीमात से नफा हासिल करते हैं। मदीना के नबी की इस महान दर्सगाह (शिक्षण संस्था) को गौर से देखो जिस की छत खजूरों के पत्तों से और खम्भे खजूर के तनों से बनाये गये थे और जिसका नाम मस्जिदे नबवी था। इसके अलग अलग कोनों कोनों में इन इन्सानी जमाअतों के अलग अलग दर्जे खुले हुए हैं। कहीं अबू बक्र और उमर, उसमान व अली रज़ि० जैसे शासक तालीम हासिल कर रहे हैं, कहीं तलहा व जुबैर व माविय: व साद बिन मआज व साद बिन जुबैर जैसे सलाहकार हैं, कहीं खालिद अबू उबैद:, साद बिन अबी वकास और अम्र बिन अलआस रज़ि० जैसे सिपहसालार हैं। कहीं वह हैं जो बाद को सूबों के हुक्मरा अदालतों के काजी और कानून के विशेषज्ञ बने, कहीं उन ईशभक्तों का मजमा है जिन के दिन रोजों में और रातें नमाजों में कटती थीं। कहीं अबूजर सलमान व अबूदर्दा रज़ि० जैसे वह गुदड़ी पहनने वाले हैं जो "मसीहे इस्लाम" कहलाते थे। कहीं वह सुफ्फ: वाले तालिब इल्म थे जो जंगल से लकड़ी लाकर बेचते और गुजारा करते और दिन रात इल्म की तलब में लगे रहते। कहीं हज़रत अली, हज़रत आयशा, हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत मसऊद, हज़रत जैद बिन साबित रज़ि० जैसे फिक: और हदीस के पंडित थे जिन का काम इल्म की खिदमत और इशाअत था। एक जगह गुलामों की भीड़ है तो दूसरी जगह आकाओं की महफिल है। कहीं गरीबों की बैठक है और कहीं दौलतमन्दों की मजलिस है। मगर इनमें जाहिरी इज़्ज़त और दुनियावी सम्मान (एजाज) का कोई भेद–भाव नहीं पाया जाता, सब मसावात (समता) की एक ही सतह पर और सदाकत की एक ही शमअ के गिर्द परवान वार जमा हैं। सब पर तौहीद का एकसां नशा छाया और सीनों में ह़क़ परस्ती का एक ही वलवल: मौजें ले रहा है और सब अख़लाक़ व आमाल के एक ही पाक आइने का अक्स (छाया) बनने की कोशिश में लगे हैं। (यहां सैयद सुलैमान नदवी के खुतबात मद्रास पर एक नजर डाल लेनी चाहिए)। (जारी)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

हमारा सच्चा राही बहुत से गैर मुस्लिम भाई भी पढ़ते हैं। यदि वह चाहें तो, अपना नाम, पते के साथ, या बे पते के सच्चा राही में प्रकाशित करवा सकते हैं। हम उनके परामर्शों का स्वागत करेंगे।

– सम्पादक

हिन्दोस्तानी मुसलमानों के लिए चिन्ता व संशय की वास्तविक बात

मौ० मुहम्मद राबे हसनी

शिक्षा मानव की वह महत्वपूर्ण आवश्यकता है जिस पर हर नई नस्ल के भविष्य की बेहतरी (उत्कृष्ठता) निर्भर होती है। जो कौमें या उसके लोग इसके महत्व को समझने की चेष्ठा नहीं करते या इसकी चिन्ता नहीं करते वह दूसरों की अपेक्षा पीछे रह जाते हैं। फिर यह बात भी है कि किसी भी जमाअत (संघ) या लोगों का मानवी आचरण उसकी मानसिक तथा बौद्धिक विशेषताओं को अपनी चाहत और अपनी शैली के अनुसार ढालने में भी शिक्षा ही सफल पूर्ण साधन बनती है। अतः शिक्षा के प्रबन्ध तथा पाठ्यक्रम का जो शैली और जो विशेषताएं नियुक्त की जाती हैं, शिक्षा उन ही के अनुसार अपना कर्तव्य पूरा करती और लाभ पहुंचाती हैं।

मानव जैसी उत्तम सृष्टि के लिये अल्लाह तआला ने सबसे उत्तम विशेषताएं और उत्तम आचरण के लिये इस्लामी नियम नियुक्त किये हैं। शिक्षा जब उन नियमों के साथ दी जाती है तो नयी नस्ल के लोग अपने भविष्य के जीवन में उत्तम आचरण वाले, उच्च साहस वाले, समस्त मानवों से सहानुभूति रखने वाले, मानव बनते हैं। दुन्या के जीवन को भी सफल तथा उच्च उद्देश्यों वाला जीवन बनाते हैं तथा इस दुन्या से जाने के पश्चात के जीवन के लिये भी आवश्यक सामग्री भले कर्मों के रूप में ले जाते हैं। उनको इस्लाम ने इसकी शिक्षा भी दी है। और इसका महत्व भी बताया है।

जब कि इस्लाम प्राकृतिक धर्म है जो मानव की प्राकृतिक मांगों को समझता तथा उन की रक्षा करता और दुन्या की आवश्यकताओं को न केवल मानता अपितु उनके लिये चिन्ता तथा चेष्ठा की आज्ञा देता है। हम को कुर्आने मजीद में जो दुआ बताई गई है उससे इस बात का सुबूत मिलता है। दुआ का अनुवाद इस प्रकार है :-' ऐ हमारे रब हम को इस दुन्या में भी खूबी और बेहतरी (उत्तमता तथा उत्कृष्ठता) प्रदान कर और इस दुन्या के पश्चात आखिरत (परलोक) में भी उत्तमता और उत्कृष्ठता प्रदान कर और हम को जहन्नम की आग के दण्ड से बचा ले।

अतः हर मनुष्य को जो इस्लाम को मानता हो और एक खुदा पर विश्वास रखता हो और उसके नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अन्तिम नबी मानता हो अल्लाह की उतारी हुई किताब कुर्आने मजीद पर विश्वास रखता हो और आखिरत की ज़िन्दगी से वास्ता पड़ने को मानता हो उसको दुन्या व आखिरत दोनों में सफलता प्राप्त करने के लिये इस्लाम के बताए हुए तरीके पर अमल करना ज़रूरी है। इस के बिना उसको सफलता तथा प्रसन्नता प्राप्त करने में सफलता नहीं मिल सकती। मानव इतिहास में जब जब एक खुदा और उसके नबी की शिक्षाओं को अपनाया गया अपनाने वालों को दीन व दुन्या की सफलता प्राप्त हुई। विशेषकर जब से हमारे नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की लाई हुई शिक्षाओं पर चलने का दौर आरंभ हुआ उनके मानने वालों ने मानव जगत में क्रान्ति (इन्किलाब) पैदाकर दी और उन के प्रभाव से मुस्लिम समाज में ऐसे ऐसे कार्य सामने आए जिनको देखकर उत्तम आचरण तथा उच्च विशेषताओं के उत्तम आदर्श उत्पन्न हुए। जिनकी नक्ल और पैरवी कर के दूसरी कौमों ने भी उन्नति की। परन्तु उनका उद्देश्य केवल दुन्या रहा अतः उन्होंने दुन्या में उन्नति की और मुसलमानों से जब–जब अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं पर चलने में कोताही हुई तो मुसलमानों के हालात के खराबी के उदाहरण सामने आए।

इस्लामी शिक्षाओं ने दुन्या तथा दीन दोनों को अच्छे ढंग से अपनाने की मांग की है और मुसलमानों ने अपने उत्थान के समय में दीन व दुन्या दोनों पर ध्यान दिया और दोनों उच्च आदर्श प्रस्तुत किये परन्तु दूसरी कौमों ने इस्लामी शिक्षाओं में से केवल दुन्या तक अपने को सीमित रखा अतः उनका दुन्यावी विकास तो बहुत हुआ परन्तु उनके आचरण तथा धर्म में बिगाड़ आया अतः हम को अपनी उन्नति तथा भलाई के लिये दीन व दुन्या दोनों को सामने रखकर उसकी व्यवस्था करना है।

दुन्या के जिन देशों में मुसलमानों की अधिकता होने की बिना पर उनको शासन चलाने और अपनी

मर्ज़ी के अनुसार जीवन पथ बनाने का अधिकार उनके शासन के हाथों में हो तो वहां शिक्षा व्यवस्था भी शासन ही करता है। वहां के मुस्लिम अवाम पर इस प्रकार की बड़ी जिम्मेदारी नहीं होती परन्तु जहां मुसलमान अल्पसंख्यक हों वहां इस्लामी खुसूसियात (विशेषताएं) पैदा करने तथा उन की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी मुस्लिम अवाम पर होती है। और यह अवाम अपने बुद्धिजीवियों तथा विद्वानों द्वारा इस ज़िम्मेदारी को पूरा करते हैं। या यह कि उनको ऐसा करना चाहिये। इस विषय में कोताही करने से वह अपने सीधे मार्ग पर जमे नहीं रह सकते और अपेक्षित उन्नति तथा उत्कृष्टता प्राप्त नहीं कर सकते और अगर उनकी गफलत से उनकी ज़िन्दगी का रास्ता बदल जाए तो उनका मुसलमान होना न होना बराबर हो जाएगा। दुन्या में बहुत से ऐसे देश हैं, जहां मुसलमानों ने इस विषय में कोताही की तो उनका जीवन पथ बदल गया और उनकी विशेषताएं बदल गईं और मुसलमानों की जो उत्तम आचरण उच्च मानवीय विशेषताएं बतांई गई हैं उनसे वह वंचित हो गये। भारत को जब स्वतंत्रता मिली तो मुसलमान अल्पसंख्यक होने के कारण शासन की ओर से अपनी इस्लामी पहचान को बाकी रखने के लिये तथा इस्लाम के भव्य तथा उज्जवल पथ पर चलाने के अधिकार नहीं रखते थे परन्तु देश चूंकि सेकूलर विधान तथा प्रबन्ध का तय हुआ इसलिये मुस्लिम अवाम को इस बात का अधिकार मिल गया कि वह अपनी इस्लामी विशोताओं के अनुसार जीवन को बनाने और ढालने की फिक्र कर सकें। इसी के साथ यह खतरा भी सामने आया कि अगर मुसलमान इस बात की फिक्र नहीं करते तो वह तो नहीं मगर उनकी आने वाली नस्ल इस्लामी विशेषताओं से वंचित हो जाएगी। इस कारण कि देश का ग्रहण किया हुआ जो मार्ग उनके सामने आएगा, उस पर इस नस्ल के लोग यदि अपनी सुरक्षा की चिन्ता के बिना चलेंगे तो वह जो कुछ बन सकें बनेंगे परन्तु मुसलमान न बन सकेंगे। इस लिये यह आवश्यकता दृढ़ता के साथ सामने आई कि मुसलमानों के लिये शिक्षा जो नई नस्ल के भविष्य बनाने का बड़ा साधन है। अपनी इस्लामी विशेषताओं तथा स्वभाव के साथ ढालने की कोशिश करें ताकि इस देश के मुसलमान मुसलमान रह सकें। इसी के साथ यह जानने की भी जरूरत है कि शिक्षा में जो प्रारंभिक स्तर होता है अर्थात प्रारंभिक शिक्षा का स्तर और इसी के साथ साथ उससे पहले माँ–बाप और घर के अन्दर के सीखने सिखानेका समय वह बड़ी ही महत्वपूर्ण तथा प्रभावशाही समय होता है। क्योंकि उसी काल में मानवी जीवन की विशेषताओं और योग्यताओं की जड़े बनती हैं। जिन पर पूरे मानवी जीवन वृक्ष परवान चढ़ता है, अतः इसकी चिन्ता और भी अधिक करना चाहिये।

अल्लाह तआ़ला अच्छा बदला दे हमारे उन बड़ों को जिन्होंने स्वतंत्रता मिलते ही इसके महत्व का अनुभव किया और प्रारंभिक शिक्षा की इस्लामी विशेषताओं को बचाने के लिये जो चिन्ता कर सकते थे वह किया और इसके लिये दीनी तालीमी कौंसिल संस्था स्थापित की और जगह जगह मकतब खोले इसके लिए धन चाहिए था उसको भी मुस्लिम जनसाधारण पर रखा और घर–घर से बच्चों को शिक्षा से लाभ उठाने के लिये लाने की चेष्ठा की और घर–घर से प्रतिदिन एक एक चुटकी आटा चावल के सहयोग से काम चलाने की चेष्ठा की। इस प्रकार उन के श्रम तथा प्रयास से प्रान्त में हज़ारों मकतब स्थापित हुए और कक्षा पांच तक शिक्षा का ऐसा प्रबन्ध किया गया जो शिक्षा के राज्य की ओर से प्रचलित उद्देश्यों को भी पूरा करता था और इस्लामिक विश्वासों तथा आदेशों को भी पूरा करता था।

हमारे लिये बड़े शर्म की बात है कि हमारे बच्चे प्रचलित शिक्षा के शिर्क व इलहाद से प्रभावित होकर इस्लाम विरुद्ध विश्वास तथा कर्मो मूं फंस जाएं जैसा कि स्थान–स्थान के उदाहरण सामने आ रहे हैं। जो मुसलमान इस्लामिक प्रभाव रहित वातावरण में रह रहे हैं उनमें से कितने मुसलमान अपने को मुसलमान भी कहते हैं और पास पड़ोस की मुशारिकाना रस्मों में भी भाग लेते हैं। एक मुसलमान की ज़िन्दगी में यह दोनों चीज़ें कैसे जमा हो सकती हैं। हमारे इस्लाम से इसका कोई जोड़ नहीं है। इसी प्रकार यह देखने में भी आ रहा है कि पब्लिक स्कूलों में जाने वाले हमारे मुसलमान बच्चे कुछ वह मुशरिकाना रस्में भी करने लगते हैं जो उन स्कूलों में प्रचलित हैं और अक़ीदे (विश्वास) से सम्बन्धित ऐसी बातें भी अपनाने लगते हैं जो पूर्णतया इस्लाम विरुद्ध हैं।

यह सब इसलिये है कि हम नई नस्ल की शिक्षा को साफ सुथरी बनाने में और इस्लामी विशेषताओं से जोड़ने में कोताही करते हैं और उसको

गंभीरता से नहीं लेते, हम को इस बात की चिन्ता तो होती है कि बच्चे को अच्छी इंग्लिश बोलना आ जाए और दुन्या में उन्नति तथा सफलता प्राप्त करने के लिये जिस शिक्षा की आवश्यकता है वह अवश्य प्राप्त हो जाए जिससे उसके भविष्य की सफलता की आशा की जा सके तो हमको इस बात की चिन्ता क्यों नहीं होती कि वह भविष्य में मुसलमान भी रह सके।

बीते काल में हमारे पूर्वजों ने सदैव इसकी चिन्ता की कि उनकी आने वाली पीढ़ी मुसलमान रह सके, उसके लिये ऐसी शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध किया जिससे उसका मन तथा मस्तिष्क इस्लाम का मन तथा मस्तिष्क हो उसी का प्रणाम है कि आज हम मुसलमान हैं। मुसलमानों हर घर में मांओं और बड़ी बूढ़ियोंने अपने बच्चों के आरंभिक चेतना काल में उनके इस्लामिक विश्वास को सुरक्षित रखने और इस्लामिक चिन्हों को उनके मस्तिष्क में उतारने का प्रबन्ध किया फिर मस्जिद के मक्तबों में भेजा कि मन व मस्तिष्क की जड़ें इस्लामी विश्वासों और आचरण में पक्की हो सकें। परन्तु यह वह समय था जब मुसलमानों के सामने यही शिक्षा की व्यवस्था थी और जब कि शिक्षा व्यवस्था मज़हब से अलग कर दी गई है तो हम सब पर पूरी ज़िम्मेदारी आती है इस शिक्षा व्यवस्था से जो दीनी हानि पहुंच सकती है उसकी पूर्ति हम मुसलमान स्वयं करें इस पूर्ति की दूसरों से आशा करना उचित नहीं है और ऐसा सम्भव भी नहीं अतः दीनी कौन्सिल द्वारा इसकी जो व्यवस्था की गई है उसमें हर मुसलमान का सहयोग आवश्यक है।

इस काम में जो वैधानिक पहलू है और जो पथ प्रदर्शन का काम है उसको क़ौन्सिल के ज़िम्मेदार भली–भांति कर रहे हैं। प्राचलित राजकीय पाठ्यक्रम में जो इस्लामिक विश्वासों तथा आदेशों को हानि पहुचांने वाली जो बातें होती हैं उन को हटवाने और निकालने के लिए कौन्सिल राज्य से सम्पर्क स्थापित करती और उसके लिये वैधानिक नियम अपनाती है। दीनी तालीम कौन्सिल के मकातिब के लिये पाठ्यक्रम निर्धारित करती है और मुसलमानों को ध्यान दिलाने के लिये सभाए भी आयोजित करती है। इसके पश्चात जो व्यवहारिक कार्य हैं वह मुसलमानों की चिन्ता तथा ध्यान का है कि वह अपने बच्चों को मुसलमान बाकी रखने के लिये जो आवश्यक उपाय हैं उनको अपनाएं और हमारे देश का सेकूलर विधान इसकी अनुमति देता है अतः हमको इस अनुमति से पूरा लाभ उठाना चाहिये।

शिक्षा इस समय मानव निर्माण का बड़ा साधन बन गयी है मानव निर्माण का अर्थ यह है कि मनुष्य अपनी माँ के पेट से कुछ ज्ञान लेकर नहीं आता, उसको जीवन का कोई अनुभव नहीं होता, उसको शिक्षा द्वारा ज्ञान दिया जाता है और जीवन के हानि तथा लाभ से अवगत कराया जाता है। वह ज्ञान रहित होता है। उसको जो सिखाया जाता है उसी को जानता और उसको अपनाता है। हदीस शरीफ में आता है : अनुवाद : हर बच्चा अपने प्रकृतिक स्वभाव पर जन्म लेता है फिर उसके संरक्षक या माता–पिता उसको कभी यहूदी बना देते हैं, कभी ईसाई बना देते हैं और कभी मजूसी बना देते हैं। यही उनको कुछ बना देना मानव निर्माण है जो माँ, बाप से आरम्भ होकर स्कूल कालेज और यूनीवर्सिटी तक पहुंचता है।

अब हमारे सोचने की बात है कि हमारा सीधा सादा बच्चा आगे चलकर क्या बनेगा? मुसलमान बनेगा? हिन्दू बनेगा? या ईसाई बनेगा? इस्लाम की महत्ता तथा आवश्यकता पर अगर हमको विश्वास है और यह कि परलोक (आख़िरत) में अपने पालनहार के सम्मक्ष अपने किंये का हिसाब देना है तो हमको इसका उत्तर अभी से तय्यार रखना चाहिये कि हमने अपने बच्चों को मुसलमान बनाने की चिन्ता की या अनदेखी कर ली। यह बड़ी ही गंभीर बात है। हम अगर निर्धन हैं दीन हैं तो कुछ घन्टों या कुछ दिनों के लिये क्योंकि हमारा यह जीवन सीमित जीवन है। परन्तु हमारा परलोक जीवन तो न समाप्त होने वाला जीवन होगा यदि वहाँ सुख, शान्ति का प्रबन्ध न हो सका तो हमारे लिये बड़े हानि की बात होगी। हम दुन्या के थोड़े लाभ की चिन्ता में परलोक (आखिरत) के लाभ को भूल जाएं यह बड़ी मूर्खता की बात है। अतः हम को स्वयं भी मुसलमान रहना है और अपनी आने वाली नस्ल को भी मुसलमान रखना है और इसके लिये शिक्षा को शुद्ध रखने और उसमें इस्लामी विशेषताओं को सुरक्षित करने की चिन्ता तथा उसका प्रबन्ध करना होगा।

लेखकों से अनुरोध है कि पन्ने के एक ओर लिखें, एक लाइन छोड़ कर खुला खुला लिखें घना न लिखें।
५-५-०८ – कम्पोज़ीटर

संविधान में दिये गए कुछ मौलिक अधिकार

हबीबुल्लाह आज़मी

भारत की आज़ादी के साथ देश के बटवारे का घाव इतना गहराया कि खुद आज़ादी दिलाने वाली इण्डियन नेशलन कांग्रेस में दो विचारधाराओं ने जन्म लिया। एक विचारधारा यह थी कि भारत का संविधान ऐसा होना चाहिये जो कांग्रेस की मूल विचार धारा से मेल खाती हो अर्थात इसमें अल्पसंख्यकों (अकलीयतों) के जानोमाल, धर्म व संस्कृति और नागरिक अधिकारों की पूरी सुरक्षा हो। दूसरी विचारधारा यह थी कि पाकिस्तान बनने के बाद भारत को हिन्दूराष्ट्र बन जाना चाहिये लेकिन पहली विचारधारा के महान नेताओं जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, बाबा साहब अमबेदकर की रहनुमाई में कांग्रेस के एक बड़े वर्ग ने देश हित में यही फैसला किया कि भारत का संविधान ऐसा होना चाहिये जिस में किसी छोटे से छोटे वर्ग के अधिकरों के हनन की संभावना न हो। इसी उद्देश्य को सामने रखकर **Constituent Assembly**ने मौलिक अधिकार की सूची पारित की जिसको बदला नहीं जा सकता। राज्य कोई ऐसा कानून नहीं बनाएगा जो मौलिक अधिकरों को छीन ले या उन में कमी करे और कोई ऐसा कानून, जो इन अधिकारों अवज्ञा (खिलाफ वर्ज़ी) में बनाया जाए निरस्त समझा जाए। इन मौलिक अधिकारों की कुछ महत्वपूर्ण धाराओं का वर्णन यहां किया जा रहा है।

धारा–१४ कानून की नज़र में समानता–

साम्राज्य किसी को भारत के सीमा क्षेत्र में कानून की नज़र में समानता या कानून में समानता की सुरक्षा से वंचित नहीं करेगा।

धारा–१५ धर्म, वंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर भेदभाव का विरोध–

(१) साम्राज्य केवल धर्म, वंशज, जाति लिंग या जन्मस्थान या उनमें से किसी के आधार पर किसी नागरिक (शहरी) के विरुद्ध भेदभाव नहीं बरतेगा।

(२) कोई नागरिक केवल धर्म, वंश, जाति, लिंग, जन्मस्थान या उनमें से किसी के आधार पर–

(अ) दुकानों, आम रेस्टोशन, होटलों या आम प्रयटन स्थानों (तफरीहगाहों) में दाखिले के लिए या (ब) पूर्ण या आंशिक (कुल्ली या जुज़वी) तौर से साम्राज्य फण्ड से कायम या आम लोगों के इस्तेमाल के लिए वक्फ कूंवो, तालाबों, स्नानघाटों, सड़कों, और आम आने जाने के स्थानों के इस्तेमाल के अयोग (नाकाबिल) न होगा या उस पर कोई ज़िम्मेदारी या पाबन्दी या शर्त न होगी।

(३) इस संविधान में कोई आदेश इसमें रुकावट न बनेगा कि साम्राज्य स्त्रीयों और बच्चों के लिये कोई विशेष कानून बनाए।

(४) इस धारा या धारा २६ के वाक्य (२) का कोई आदेश नागरिकों के सामाजिक और शैक्षिक दृष्टकोण से पिछड़े वर्गों या अनुसूचित जातियों और जनजातियों की उन्नति के लिए विशेष कानून बनाने में साम्राजय के लिए रुकावट न होगी।

आज़ादी का अधिकार

तमाम नागरिकों को अधिकार होगा–

धारा–१६

(अ) तक़रीर और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रा

(ब) शान्तिपूर्वक और बिना हथियारों के इकट्ठा होने का

(स) संगठन या यूनियन बनाने का।

(द) भारत के सभी क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से आने जाने का।

(य) भारत के किसी क्षेत्र में रहने और बस जाने का।

(र) किसी पेशे के इख़्तियार करने या किसी काम धन्दे, व्यापार या कारोबार चलाने का।

धारा–२० जुर्म के बारे में सुरक्षा

(१) किसी व्यक्ति को सिवाए इसके कि उस कानून की अवज्ञा (खिलाफ वर्ज़ी) में हो जो उस कर्म के करने के समय लागू हो किसी जुर्म का मुजरिम करार नहीं दिया जाएगा जिस का उस पर बतौर जुर्म इलज़ाम लगाया गया हो और न उसको उससे अधिक सज़ा दी जाएगी जो जुर्म करने के समय प्रचलित कानून के अन्तर्गत दी जा सकती थी।

(२) किसी व्यक्ति के खिलाफ़ एक ही जुर्म के लिए एक से अधिक बार न तो मुकदमा चलाया जाएगा और न उसको सज़ा दी जाएगी।

(३) किसी व्यक्ति को जिस पर किसी जुर्म का इलज़ाम हो खुद अपने ही खिलाफ गवाह बनाने पर मजबूर न किया जाएगा।

धारा–२१ जान और व्यक्तिगत आज़ादी की सुरक्षा

किसी व्यक्ति को उसकी जान या व्यक्तिगत आज़ादी से कानून द्वारा कायम किये हुए नियम के सिवा किसी और तरीक़े से वंचित नहीं किया जाएगा।

धारा–२३ इंसानों का व्यापार और जबरी सेवा की मनाही

(१) इंसानों की तिजारत और बेगार और दूसरे ऐसी ही प्रकार की जबरी सेवा की मनाही (ममानियत) की जाती है और इस आदेश की कोई अवज्ञा (खिलाफ वर्ज़ी) जुर्म होगी जिसकी कानून के अनुसार सज़ा दी जा सकती है।

धारा–२४ बाल मज़दूरों को कारखानों आदि में नियुक्ति की मनाही

चौदह साल से कम उम्र का कोई बच्चा किसी कारखानों या खान में काम करने के लिए नियुक्त नहीं किया जाएगा। और न किसी दूसरे खतरनाक काम पर लगाया जाएगा।

धारा–२५ धर्म की आज़ादी का अधिकार।

(१) तमाम व्यक्तियों को अंतरात्मा की आज़ादी और स्वतंत्रा से धर्म स्वीकार करने उसकी पैरवी और उसके प्रचार प्रसार का समान अधिकार है शर्त यह है कि सार्वजनिक (आम) शान्ति, सार्वजनिक नैतिकता (अमने–आम्मः, अख़लाके आम्मः) सार्वजनिक स्वास्थ और इस क्षेत्र की दूसरी तौजीआत (कानून) प्रभावित न हों।

(२) इस धारा का कोई कार्य किसी ऐसे मौजूदा कानून को लागू करने को प्रभावित न करेगा और न वह ऐसे कानून के बनाने में राज्य के लिए बाधक होगा जो–

(अ) किसी आर्थिक, वित्तीय, राजनीतिक या गैर धार्मिक क्रियाकलाप को जिसका सम्बन्ध धार्मिक कार्यसे हो सकता हो व्यवस्थित करे या उस पर पाबन्दी लगाए।

(ब) समाज कल्याण और सुधार के लिए या हिन्दुओं के सार्वजनिक प्रकार के धार्मिक संस्थाओं को हिन्दुओं के तमाम वर्गों और सम्प्रदायों के लिए खोल देने के बारे में कानून बनाए।

स्पष्टीकरण–क्रिपाण बान्धना और उसको साथ रखना सिख धर्म के आस्था में माना जाएगा।

स्पष्टीकरण–२ वाक्य (२) के उपवाक्य (ब) में हिन्दुओं के उल्लेख का यह अर्थ लिया जाए कि इस में सिख या बौद्ध धर्म के मानने वालों का उल्लेख सम्मिलित है और हिन्दू धार्मिक संस्थाओं के उल्लेख को भी इस अर्थ में लिया जाएगा।

धारा–२६ धार्मिक कार्य के व्यवस्था की स्वतंत्रता

इस शर्त के साथ कि शान्ति, नैतिकता (अम्न आमः व अखलाक आमः) और सार्वजनिक स्वास्थ प्रभावित न हों हर एक धार्मिक समुदाय को या उस के किसी वर्ग को अधिकार होगा–

(अ) धार्मिक और दान के उद्देश्य के लिए संस्थाएं स्थापित करने और चलाने।

(ब) अपने धार्मिक कार्यों का प्रबन्ध खुद करना।

(स) चल अचल सम्पत्ति के मालिक होने और उस को प्राप्त करने का और

(द) ऐसी सम्पत्ति का कानून के अंतर्गत प्रबन्ध करने का।

धारा–२७ किसी प्रमुख धर्म के विकास

किसी ऐसे व्यक्ति को ऐसे करों के अदा करने पर मजबूर नहीं किया जाएगा जिनकी आमदनी किसी खास धर्म या धार्मिक वर्ग की उन्नति या उसको कायम रखने के खर्च अदा करने के लिए स्पष्ट तौर से खर्चकिया जाए।

धारा २८– बाज़ शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा पाने या धार्मिक उपासनें के बारे में–

(१) किसी ऐसी शिक्षा संस्थाओं में जो पूरी तौर पर राज्यकोष से चलाई जाती हो कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जा सकती।

(२) वाक्य (१) का कोई आदेश ऐसी शिक्षा संस्थाओं पर लागू नहीं होगा जिसका प्रबन्ध सरकार करती हो लेकिन जो किसी ऐसे वक्फ़ या ट्रस्ट के अंतर्गत स्थापित किया गया हो जो ऐसी संस्था में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य (लाज़मी) करार दे।

(३) किसी ऐसे व्यक्ति पर जो ऐसी संस्था में शरीक हो जो राजयकीय हो या जिसको राज्य कोष से सहायता मिलती हो अनिवार्य न होगा कि किसी ऐसी धार्मिक शिक्षा में भाग ले जो ऐसी संस्था में दी जाए या ऐसी धार्मिक उपासना में शरीक हो जो ऐसी संस्था में या उससे सम्बद्ध भवन व ज़मीन में

की जाए सिवाए इसके कि ऐसे व्यक्ति ने या यदि वह नाबालिग़ हो तो उसके अभिभावक न उसके लिए अपनी स्वीकृति दी हो।

धारा–२६ संस्कृतिक (सकाफ़्ती) और शिक्षा का अधिकार अल्पसंख्यकों के हितों की सुरक्षा

(१) भारत के क्षेत्र में या उसके किसी भाग में रहने वाले नगरों के किसीवर्ग को जिसकी अपनी अलग भाषा, लिपि या संस्कृति (सकाफ़त) हो तो उसको सुरक्षित रखने का अधिकार होगा।

(२) किसी नागरिक (शहरी) को ऐसी शिक्षा संस्था में जिसको सरकार चलाती हो या जिसको राज्यकीय कोष से सहायता मिलती हो प्रवेश (दाखिला) से धर्म, वंश, जाति, भाषा या उन में से किसी के आधार पर इनकार नहीं किया जाएगा।

धारा–३० अल्पसंख्यकों (अकलीयतों) को शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और उसके प्रबन्ध का अधिकार है।

(१) सभी अल्पसंख्यकों को चाहे वह धर्म के आधार पर हों या भाषा के अपनी पसन्द की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और उनका प्रबन्ध चलाने का अधिकार होगा।

(१–अ) वाक्य (१) में किसी अल्पसंख्यक द्वारा स्थापित और प्रबन्धन के अधीन किसी शिक्षा संस्था के किसी जायदाद के लाज़मी प्राप्ति के सम्बन्ध में कोई कानून बनाते समय राज्य इस बात को सुनिश्चित करेगी कि ऐसी सम्पत्ति को प्राप्ति के लिए ऐसे कानून के अंतर्गत निर्धारित या उसके अंतर्गत निश्चित धन ऐसा हो जिससे प्रविधान के अंतर्गत ऐसा अधिकार जिसकी जमानत दी गई है सीमित या समाप्त न हो जाए।

(२) सरकार शिक्षा संस्थाओं को सहायता अनुदान देने में किसी शिक्षा संस्थान के खिलाफ इस आधार पर भेद भाव न करेगी कि वह किसी अल्पसंख्यक के प्रबन्धन में है चाहे वह धर्म के आधार या भाषा के आधार पर अल्पसंख्यक हो।

जवाबे मुस्लिम बनाम ग़ैर मुस्लिम

जुलाई के अंक पृष्ठ ३५ पर छपी नज़्म
"ग़ैर मुस्लिम बनाम मुस्लिम कौम" के जवाब में (इदारा)

ग़ैर मुस्लिम भाई तुम समझे नहीं मुस्लिम है कौन
ग़ैर मुस्लिम कौन है और अस्ल में मुस्लिम है कौन
शिर्क जो करता है, मुस्लिम उसको हरगिज़ मत कहो
नाम गो मुस्लिम है उसका, उसको मुस्लिम मत कहो
मुश्रिकों का शिर्क, मुस्लिम का अ़मल हरगिज़ नहीं
काफ़िरों का कुफ़्र मुस्लिम का अ़मल हरगिज़ नहीं
शिर्क जो भी करता है इस्लाम से ख़ारिज है वह
कुफ़्र जो भी करता है इस्लाम से ख़ारिज है वह
एक है मुश्किल कुशा मुस्लिम का ये ईमान है
एक ही से मांग कर उसको तो इत्मीनान है
अपना मरना याद करने जाता क़ब्रिस्तान है
मरने वालों की दुआ़ को जाता क़ब्रिस्तान है
मुस्तफ़ा को रब का बन्दा और कहता है रसूल
मुस्तफ़ा को रब जो कहता वो तो बकता है फ़ुज़ूल
औलियाउल्लाह से उल्फ़त तो उस की रग में है
पर इताअ़त रब की अपने उसकी हर इक रग में है
क़ब्र की पूजा नहीं हरगिज़ रवा इस्लाम में
और चढ़ावा उस पे बेशक ना रवा इस्लाम में
हर किसी को सज्दा करना तुम में नाजाइज़ नहीं
सज्दा ग़ैरुल्लाह को इस्लाम में जाइज़ नहीं
हो अ़ता रब की तो उस पर कोई भी मानिअ़ नहीं
गर न चाहे रब बनाना कोई फिर सानिअ़ नहीं
है नहीं क़ुव्वत कहीं भी और ना ताक़त कहीं
एक रब की ज़ात में क़ुव्वत व ताक़त है वहीं
जाहिलों का फ़िअ़ल हुज्जत हो नहीं सकता कभी
अहमकों का क़ौल हुज्जत हो नहीं सकता कभी
हम नहीं हैं चाहते कोई जहन्नम में जले
इसलिए हैं चाहते बस हर बशर कल्मा पढ़े
और मुहम्मद की इताअ़त में गुज़ारे ज़िन्दगी
आख़िरत की ज़िन्दगी में ता मिले पाइन्दगी

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव वअ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम

अट्ठारहवीं किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

मुक़तदी सन ४६७–४८७ हि०
मुस्तज़हिर सन ४८७–५१३ हि०

यह दोनों बहुत ही दीनदार, समझदार और मुंतज़िम (प्रबन्धक) थे लेकिन बग़दाद के सिवा उनका प्रभाव ही कहां था कि सुधार कर पाते, बादशाहत तो मुद्दत से दूसरों के पास थी। अब्बासियों का केवल नाम बाकी था। सक़ीला (सिस्ली) द्वीप जिसे ज़ियादतुल्लाह अग़लबी ने फतह किया था और अब फातिमीय्नों के कब्ज़े में था सन ४८४ हि० में मुसलमानों के हाथ से निकल गया। मुस्तज़हिर के ज़माने में खुरासान की तरफ ख्वारज़म हुकूमत क़ायम हुई जो तातारियों के हमले तक बाकी रही (४६०–६२८ हि०)

सलजूक़ियों ने हालत संभाल ली थी लेकिन मालिक शाह के बाद उन की शक्ति कम होने लगी और मुसलमान फिर आपस में लड़ने भिड़ने लगे। यह दशा देखकर फिरंगियों ने मुसलमानों पर धावा बोल दिया ताकि उनसे बैतुलमुक़द्दस छीन लें। मुसलमान तो आपस में ही झगड़ रहे थे। मुक़ाबला कौन करता। नतीजा यह हुआ कि उन्हें प्राजय हुई और कई छोटी छोटी फिरंगी हुकूमतें स्थापित हो गईं। उन लोगों ने मुसलमानों को ऐसे सख़्त तकलीफें पहुंचाईं कि उनके ज़िक्र से शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

फिरंगियों की मुसीबत क्या कम थी कि बातिनियों ने गज़ब ढाना शुरू किया। यह लोग फतिमीयों से सम्बन्ध रखते थे। उनका अक़ीदा (विश्वास) था कि शरीअ़त का एक तो ज़ाहिरी हुक्म होता है जिसे सब समझते हैं लेकिन इसका असली अर्थ छुपा होता है जो केवल इमाम ही से मालूम हो सकता है। इस अक़ीदा की वजह से उन्हें बड़ी आसानी थी। जहां जैसा अवसर होता वैसे अर्थ बयान करते और जैसी ज़रूरत होती वैसा हुक्म गढ़ लेते। शरीअ़त क्या थी, उनके हाथ में एक खेलौना बनकर रह गई थी जिसमें हमेशा तोड़ मरोड़ करते रहते।

पहले तो यह लोग ज़बानी प्रचार (तब्लीग़) करते थे लेनिक इत्तिफाक से एक शख़्स हसन बिन सब्बाह उनकी जमअ़ात में शामिल हो गया। यह बड़ा ज़बरदस्त आदमी था। उसने ऐसी तर्कीबें कीं किबातिनयों की अच्छी खासी हुकूमतत क़ायम हो गई। यह लोग अब सख्ती पर भी उतर आए। जो ज़रा विरोध करता आनन फानन मार डाला जाता। उस ने क़िल–ए–मौत में भी बहुत सुन्दर बाग़ लगवाया था जिसमें सुन्दर, उमदा नहरें और अच्छी–अच्छी इमारतें मौजूद थीं। अपने मुरीदों को भांग पिलाकर बेहोश कर देता। फिर उस बाग़ में पहुंचा देता। मुरीद की आँखें खुलतीं तो देखता कि एक बड़ी ही सुन्दर जगह में लेटा हुआ है हूरें (औरतें) ग़िलमान (लड़के) सेवा के लिए हाज़िर हैं। दूध और शहद की नहरें बह रही हैं जिनके किनारे मेवेदार पेड़ लगे हैं। वह हैरान होकर पूछता है कि मैं कहां हूँ। हूरें और ग़िलमान यक़ीन दिलाते कि यह वही जन्नत है जो इमाम की पैरवी के कारण नसीब हुई है। दस पन्द्रह दिन इसी हाल में गुजर जाते फिर एक दिन बेहोश करके बाहर कर दिया जाता। जब होश आता तो सब कुछ गाएब नज़र आता। अब फिर वह खुशामद करता कि वहीं पहुंचा दो। हसन और उसके आदमियों की तरफ से यक़ीन दिलाया जाता कि बिला मरे वहां पहुंचना असम्भव है। मौत के बाद अलबत्ता वहां पहुंच सकते हो अगर इमाम का कहना मानो और उसकी पैरवी करने में जान दे दो।

इस तर्कीब से हसन के मुरीदों में बड़ी हिम्मत और बहादुरी पैदा हो जाती और वह अपने पीर के आदेश पर हमेशा मरने के लिए तैयार रहते। यह लोग फ़िदाई कहलाते थे। सख़्त से सख़्त मौक़ों पर यही फिदाई काम आते और अपनी जान जोखिम में डालकर बड़े से बड़े आदमी को क़त्ल कर देते। मुसलमानों के खुदा मालूम कितने बड़े–बड़े आदमी इन फिदाईयों के हाथों मारे गए। मालिक शाह सलजूक़ी ने उनका ज़ोर कम किया लेकिन उसका वज़ीर निज़ामुल मुल्क तूसी एक फिदाई के हाथ से मारा गया। मालिक शाह के बाद उसके बेटे सुलतान मुहम्मद ने फिर बड़ी कोशिश से उनका

ज़ोर तोड़ा। अन्त में रही सहीर ताक़त तातरियों ने खत्म कर दी। हलाकू खां ने उनके क़िल–ए–मौत पर कब्ज़ा कर लिया और हमेशा के लिए बातिनीयों का खात्मा हो गया।

मुसतरशिद ५१२–५२६ हि० राशिद ५२६–५३० हि०

मुसतज़हिर के बाद मुसत राशिद साहसी खलीफा था। सलजूक़ियों का ज़ोर ख़ान जंगी (गृहयुद्ध) की वजह से टूट चुका था, इसलिए मुतरशिद ने उनके पंजे से छूटने की कोशिश की यह रंग देखकर सुलतान मसऊद सलजूकी ने उसको रोका मगर वह कब रुकने वाला था। दोनों में लड़ाई हुई। सुलतान मसऊद सलजूक़ी ने मुसतरशिद को पराजित किया और सभी अधिकार छीन लिए। मुसतरशिद एक बातिनी के हाथ से मारा गया और राशिद सिंघासन पर बैठा। उस ने मसऊद से बाप का बदला लेना चाहा। उस पर मसऊद फौज लेकर बग़दाद आया। राशिद भाग गया और उस की जगह मुक़तफ़ी बादशाह हुआ।

मुक़तफ़ी ५३०–५५५ हि०

सुलतान मसऊद ने अपनी बहिन फ़ातिमा को मुक़तफ़ी के निकाह में दे दिया। ४४७ हि० में मसऊद का देहान्त हो गया। उस के मरते ही सलजूक़ियों पर ज़वाल आ गया। देश के कुछ भाग पर ख़लीफ़ा ने कब्ज़ा कर लिया। शेष अताबिक अर्थात सलजूकियों के फौजी सरदारों में बट गया और कई छोटे राज्य कायम हो गएं जिनके नाम यह हैं–

१. ख्वारज़म शाही सन् ४६०–६२८ हि० अन्त में राज्य तातारियों के हाथ में आया।

२. अर्तक़ीयः कैफियः सन् ४६५–६२० हि०–बाद में अय्यूबियों को मिला।

३. अर्तक़ीयः मार्दीनियः ५०२–८११ हि० उसमानी तुर्कों के कब्ज़े में आया।

४. अबातकीयः दमिश्क ४६७–५४६ जंगियों के हाथ में आया

५. अताबकीयः मूसल ५२१–६६० हि० तातरियों के कब्ज़ा में हुआ।

६. अताबकीयः हलब– ५४१ हि० नूरुद्दीन महमूद जंगी उसी शाख में हुए हैं। बाद को अय्यूबियों अर्थात सुलतान सलासहुद्दीन के खानदान को यह हुकूमत भी मिली।

७. आताबकीयःसंजार ५६६–६१७ यह भी अय्यूबी हुकूमत में शामिल हुआ।

८. अताबकीयः जज़ीरह – ५७६–६४८ यह राजय भी अय्यूबियों को मिला और उस पर भी सलासहुद्दीन के खानदान का कब्जा हुआ।

९. अताबकीयः अरबल ६३० हि० यह राज्य अब्बासियों को मिला और तातरियों के हमले तक उन्हीं के कब्जे में रहा।

१०. अताबकीयः फारस ५४३–६८६ हि०यह तातरियों के हाथों तबाह हुआ। अबूबक्र इब्ने सआद जंगी इसी खानदान में था। यह वही अबूबक्र सअ़द है जिसे की शख़्शियत सअ़दी ने अपनी किताब गुलिस्तां में तारीफ की है और जिसके नाम पर उन्होंने अपना तखल्लुस (उपनाम) सअ़दी रखा था।

११. अताबकीयः आज़र बईजान ५२१–६२२ हि० यह राज्य ख़्वार्जमियों के कब्ज़े में आया।

१२. अताबकीयः लोरिस्तान ५४३–८२७ हि०

१३– शाहाने अरमैन ४६२–६०४ हि० यह रजय अय्यूबियों को मिला।

यह तो सलजूकी हुकूमत का हाल था गज़नी के सुलतान महमूद का ज़िक्र पहले आ चुका है। उसी ज़माने में उसके खान्दान से सलतन निकलकर ग़ौरियों के कब्ज़े में आई जिन में शहाबुद्दीन ग़ौरी हुआ है। जिस ने हिन्दुस्तान में स्थाई इस्लामी सलतन कायम की। फिरंगियों का जोर वैसा ही था। अब्बासियों में मुकाबले की हिम्मत कहां थी, वह तो कहो अल्लाह ने सुलतान नूरुद्दीन ज़ंगी और उनके जवांमर्द साहसी अफसर सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी को पैदा कर दिया जिनकी हिम्मत व मुस्तैदी से ईसाईयों की भारी पराजय हुई और तमाम गये हुए मुल्क फिर मुसलमानों को मिल गए। (सन ५०५ हि० में मुकतफी का देहान्त हुआ)

मुस्तनजिद ५५५–५६६ मुस्तज़ी ५६६–५७५

मुक़तज़ी के बाद मुस्तनजिद और उसके बाद मुस्तज़ी खलीफ़ा हुए। यह दोनों बड़े प्रबन्धक, नेक और न्याय प्रिय थे। बनी बूयः के समय से अब्बासी केवल नाम के बादशाह रह गए थे लेकिन मुक़तज़ी ने कोशिश की फिर थोड़ी बहुत सलतनत पैदा कर ली। मुस्तनजिद के ज़माने में मिस्र की फात्मी हुकूमत खत्म हो गई और उसकी जगह पर मूसल के अमीर नूरुद्दीन ज़ंगी की तरफ से असदुद्दीन शेरकोह नियुक्त हुए। शेरकोह के बाद सलाहुद्दीन को हुकूमत मिली और उन्होंने मुस्तज़ी के

ज़माने में अब्बासी खुतबा जारी कर दिया। उसी ज़माने में सुलतान नूरुद्दीन का देहान्त हो गया। यह बहुत नेक, इमानदार निहायत दीनदार और बड़े पक्के मुसलमान थे। उन का और उन के बाद सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का मुसलमानों पर बड़ा एहसान है। उन्हीं लोगों ने हिम्मत करके सलीबी फिरंगियों का मुकाबला किया और अल्लाह का नाम लेकर ऐसी ज़बरदस्त कोशिश की कि लाखों ईसाइयों के पैर उखड़ गये और सलीबी लड़ाइयों का खात्मा हो गया और बैतुलमुकद्दस फिर मुसलमानों के क़ब्ज़े में आ गया (५८३ हि०) सलाहुद्दीन ने मिस्र, शाम में अपनी हुकूमत कायम की और एक मुद्दत तक इस खान्दान के लोगों ने अब्बासी हुकूमत के अधीन बड़ी खूबी से उन दोनों मुल्कों पर हुकूमत की। उन का नाम अय्यूबी बादशाह है।

नासिर ५७५–६२२ हि०, ज़ाहिर ६२२–६२३ हि० मुस्तनसिर ६२३–६४० हि०

मुस्तज़ी के बाद नासिर तख़्त पर बैठा। उस ज़माने में सुलतान सलाहुद्दीन ने फिरंगियों को बिल्कुल पराजित कर दिया और बैतुल मुकद्दस पर कब्ज़ा कर लिया। नासिर के बाद ज़ाहिर तख़्त पर बैठा लेकिन साल भर में उस का देहांत हो गया और उस की जगह उस का बेटा मुस्तनसिर खलीफा हुआ। यह बड़ा नेक बादशाह था।

मुस्तअ़सिम– ६४०–६५६ हि०

मुस्तअ़सिम के बाद उस का बेटा मुस्तअ़सिम खलीफ़ा हुआ। नासिर के ज़माने में तातारी निकल पड़े थे और चंगेज़ खाँ और उस की औलाद मुसलमान हुकूमतों को तबाह व बरबाद कर रही थी लेकिन बग़दाद की तरफ बढ़ने की हिम्मत न होती थी। मुस्तअ़सिम के ज़माने में एक बार बग़दाद के सुन्नी–शियों में लड़ाई हुई जिसमें शियों को हानि हुई। मुस्तअ़सिम का वज़ीर इब्ने अलक़ी शिया था। इस घटना से आग बगूला हो गया। उस ज़माने में चंगेज़ का पोता हलाकू तातारियों का बादशाह था। इब्ने अलक़ी ने उसे बग़दाद पर हमला करने पर उभारा। हलाकू तो दिल से यह चाहता था। सूचना मिलते ही तुरंत रवाना हो गया और ५ मुहर्रम ६५६ हि० को बग़दाद में आ पहुंचा। मुस्तअ़सिम बेचारे में मुकाबले की ताब कहां थी। चन्द दिनों में तातरियसों ने शहर पर कब्ज़ा कर लिया और क़त्ले आम शुरू केर दिया। साधारण लोगों का क्या ज़िक्र खुद खलीफा और उस की औलाद न बच सकी। बग़दाद जो कभी दुन्या का सबसे बड़ा आबाद और हराभरा शहर था दम के दम में तहस नहस हो गया। लोग मारे गए, दौलत लूटी गई, इमारतें तोड़ी गईं। पुस्तकालय बरबाद किये गए। एक चीज़ हो तो उसे रोया जाए। इन जंगलियों ने तो सारे शहर को ध्वस्त कर दिया। मशहूर है कि केवल पुस्तकें ही दजला नदी में इतनी डाली गईं कि उनकी सियाही से दजला का रंग बदल गया। (जारी)

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

सरकारी सख्तियों के बावजूद हजारों फ्रांसीसियों का इस्लाम धर्म स्वीकार करना

रिजवानुल्लाह

फ्रांसीसी सरकार को वर्तमान में देश से इस्लामी 'परदा' के विरूद्ध कानूनी पाबन्दियों और नस्ली विशिष्टताओं व अत्याचारों के बावजूद वहां इस्लाम कबूल करने वालों की संख्या ६० हजार से अधिक हो गयी है, और प्रति दिन १० की संख्या में फ्रांसीसी पद्धतियों को मानने वाले लोग परिवर्तित होते हैं। उल्लेखनीय है कि यह संख्या पहले से स्थित लोगों (मुसलमानों) तथा शरणार्थियों के अतिरिक्त है। यह सूचना फ्रांसीसी प्रसार माध्यम से मिली है।

एक फ्रांसीसी पत्रिका 'लक्सबरीस' में प्रकाशित एक लेख के अनुसार इस्लाम लाने वालों में दुर्बल, गरीब लोगों के साथ–साथ विभिन्न धर्मों समुदायों तथा व्यवसायों से जुड़े लोग सम्मिलित हैं। सविस्तार चर्चा करते हुए लिखते हैं कि इस्लाम को गले लगाने वालों की संख्या प्रतिदिन प्रगित पर है, तथा यह सभी लोग आत्म अध्ययन, अभिरूचि और इस्लाम द्वारा दिए गए सामाजिक जीवन शैली की गतिविधियों, संतुलित उसूलों से प्रेरित होकर अपनी मानवी चेतना को विकसित करने के लिए इस्लमा धर्म को अपना रहे हैं। इनमें अधिकांश युवा पीढ़ी के सदस्य हैं। जैसे फुटबाल खिलाड़ी, फ्रांरेब्री, बीमारों की सहायता करने वाले, डांसबारों के प्रबन्धक, मोरिसबीजार, इसी प्रकार वांपंथी धारा वाले पूर्व प्रधानमंत्री मोरिस तूरीज के सबसे छोटे पुत्र 'कलीमान' का भी नाम है। इन युवकों ने आसन्न भूत में अपने इस्लाम की घोषणा का है।

यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि एक ओर जहां फ्रांसीसी समाज में अनेक प्रचार एवं प्रसार संगठनें सक्रियता पूर्वक अपने कार्य में जुटे हैं वहीं बड़े–बड़े नए मुस्लिम इंजीनियरों, कम्पनियों के मालिकान, संस्थापक, अध्यापक एवं छात्र आदि सम्मान के पात्र हैं, कि वह सब फ्रांस के सामाजिक जीवन में नए इस्लाममिक समाज की स्थापना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

मौ० अब्दुल्लाह हसनी नदवी

ख़ुदा और रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की महब्बत है

जब अल्लाह तआ़ला से महब्बत होगी तो उस के रसूल और पैग़म्बरों से होगी और मुख्यकर अन्तिम रसूल (संदेष्टा) संसार के पालनहार के प्रिय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से होगी और जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से महब्बत होगी तो आप (सल्ल०) के घर वालों से और आपके सहाबा से होगी "जिसका पूरा बयान आगे आएगा"।

इसी प्रकार अब अल्लाह से महब्बत होगी और उसके रसूल (सल्ल०) से होगी तो अल्लाह वालों से अवलिया अल्लाह से भी होगी। इसलिए रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरी उम्मत को खबरदार कर दिया कि अल्लाह और उस के रसूल के चाहने वालों को भी चाहो, उन का ख़्याल रखो, उन की रिआ़यत करो और उन को सताने, कष्ट पहुंचाने और तकलीफ देने से बचो अन्यथा अल्लाह की पकड़ आ जाएगी।

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जो मेरे वली (ईश्वरभक्त) से दुश्मनी करे मैं ने उस से एलाने जंग कर दिया। कुर्आन व हदीस में जहां तक देखा गया है केवल दो चीज़ों के बारे में एलाने जंग है। एक सूद खोरी अर्थात सूदी लेन–देने करने वाले के बारे में उस से अल्लाह तआला ने जंग का एलान फरमाया। इसलिए जो लोग सूद लेते हैं या सूदी कारोबार में लग जाते हैं उन का तबाह होना लाज़मी (अनिवार्य) है खासतौर पर मुसलमानों का। अतः मुसलमानों के लिए तो बिल्कुल हराम है। जब मुसलमान इस सूदी कारोबार में आता है तो तबाही व बरबादी साथ लाता है। ऐसे ही अल्लाह के जो नेक और प्रिय बन्दे हैं या कह लीजिए कि जो महबूब बन्दे होते हैं जो उन से दुश्मनी रखता है, उन का अपमान करता है और उन को असम्मानित करता है, अल्लाह तआला ने उस से ऐलाने जंग कर दिया है। यहां एक बात याद रखनी चाहिये कि बन्दा जब अल्लाह से महब्बत करता है तो अल्लाह भी उस से महब्बत करता है और वास्तव में वह अल्लाह की महब्बत की वजह से महब्बत करता है और यह महब्बत के लिए ज़रूरी है कि महब्बत एक तरफा नहीं रह सकती। यदि कोई किसी से महब्बत करे तो उसको भी हो ही जाती है। अगर एकतरफा महब्बत है तो कुछ दिनों तक मालूम होगा कि एकतरफ़ा हे लेकिन फिर दूसरी तरफ भी होती जाएगी।

अब अल्लाह से कोई महब्बत करता है, प्रियतम खुदा है तो वह खुदा का प्रिय बन जाता है। इसलिए वली (भक्त) होने का लक्षण यह बयान किया गया है कि अगर तुमको महब्बते खुदा है तो रसूल की चाल चलो खुदा के प्रिय बन जाओगे।

अल्लाह के वली (भक्त) होने के लक्षण

महब्बत के लक्षण क्या है? अल्लाह के रसूल (सल्ल०) की चाल चलें। उनके रास्ते पर अपने को लगाएं, उनकी सुन्नतों पर अमल करें। इस का नतीजा क्या होगा? तुम प्रिय बन जाओगे। जब वह प्रिय बन जाता है तो उस का आदर सतकार होता है, उस से सहानुभूति होती है, उस की रक्षा की जीती है और अगर महब्बत करने वाला धनी होता है और उस के हाथ में ताक़त होती है तो वह साफ कह देता है कि यदि कोई उस के महबूब (प्रियतम) को सताएगा या बुरी निगाह से देखेगा तो हम निपट लेगे। इस से कहीं बढ़कर मामला अल्लाह के नेक प्रिय बन्दों का होता है कि वह अल्लाह के महबूब होते हैं। अब अगर कोई व्यक्ति उन को कष्ट पहुंचाए तो अल्लाह उस को पकड़ लेता है। एक ऐसे ही बुजुर्ग की घटना है कि उन को किसी ने कष्ट पहुंचाया। उन्होंने अपने सेवक से कहा कि उसको एक हाथ मारो, उन्होंने मारने में देर की और वह मर गया। उन्होंने फरमाया भाई देखो अगर हम बदला लेते तो वह अल्लाह की पकड़ से बच जाता इसलिए हमने कहा कि मारो ताकि हम बदला ले लें तो यह बच जाता। तुमने मारने में देर की तो ऊपर से उसकी पकड़ आ गई और मारा गया। एक हदीस में आता है कि एक साहब एक सहाबी को

बुरा भला कह रहे थे और वह ख़मोश सुन रहे थे। थोड़ी देर के बाद उन्होंने जवाब देना शुरू कर दिया तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया जब तक ख़मोश थे फरिश्ता तुम्हारी तरफ से जवाब दे रहा था। जब तुम ने जवाब देना शुरू कर दिया तो वह चला गया। इसलिए अल्लाह के नेक बन्दों को सताने से अल्लाह तआला नाराज़ होता है। उसके विभिन्न रूप होते हैं कभी बीमारी में डाल दिया जाता है, किसी पेरशानी से ग्रस्त हो जाता है, घर में अव्यवस्थता (इंतिशार) हो जाती है कितनी इसी प्रकार की घटनाएं होती रही हैं और सबसे अधिक खतरनाक यह है कि उसको गुमराही (पथभ्रष्टता) में मुबतला (ग्रस्त) कर दिया जाता है।

हमारे हज़रत मौलाना (अलीमियां) रहमतुल्लाह अलैहि ने कई बार क़िस्सा सुनाया कि हमारे दारुल उलूम में अति बुद्धिमान योग्य और असाधारण योग्यता रखने वाले एक विद्यार्थी थे। अचानक हरताल हुई। हज़रतुल उस्ताद अल्लामा शिबली नदवी रहमतु ल्लाह अलैहि के ख़िालाफ कुछ आपत्तिजनक वाक्य निकल गए। अल्लाह का करना उसी समय उनको पागलपान का दौरा पड़ गया। दौरा इतना गम्भीर था कि उन को जजीरों में बान्ध कर हमारे भाई साहब के पासा जो डाक्टर थे लाया गया। मौलाना फरमाते हैं इस दृश्य को देखकर मेरी आँखों में आंसू भर आए क्योंकि मैं उनको पढ़ा चुका था। उनकी योग्यता कोदेखकर अन्दाज़ा होता था कि एक दिन यह शख़्स नदवा का आफ़ताब (सूर्य) बनकर चमकेगा। बड़ी आशाएं थीं। मैं मामले को समझ गया। हज़रत सय्यद साहब की सेवा में हाज़िर होरक उनकी तरफ से क्षमा याचना की। पहले दिन हज़रत ने केवल इतना फरमाया मैं तो कुछ नहीं हूँ लेकिन दूसरे दिन अपने आप फरमाया कि मौलवी अली साहब मैंने आपके आदेश का पालन कर दिया। उनको क्षमा कर दिया। इसका प्रभाव यह हुआ उनकी तबीयत में तुरन्त सुधार हो गया और तबीयत ठीक हो गई परन्तु जल्द उम्र का चिराग़ बुझ गयाा।

इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अल्लाह के नेक और प्रिय बन्दों की शान में अशिष्टता (गुस्ताखी) के कैसे–कैसे नतीजे निकलते हैं। जब अल्लाह के महबूब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ गुस्ताख़ी और बेअदबी (अशिष्टता) की जाएगी तो करने वालों को बुरे नतीजे भुगतने पड़ेंगे और उसे अपने कर्मों का परिणाम भुगतना पड़ेगा और ऐसे लोग भुगत भी रहे हैं।

नबी के दरबार में हाज़िरी के आदाब

इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िरी के आदाब (शिष्टता) अल्लाह ने खुद कुर्आन मजीद में बयान कर दिये हैं ताकि उम्मत का कोई व्यक्ति बेअदबी का दोषी होकर जहन्नुम में न चला जाए। यह अल्लाह तआला की महब्बत और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का रहमतुल आलमीन (संसार के लिए दयावान) होने का नतीजा है। उन्हीं में से एक अदब यह भी है जिसको क़र्आन मजीद में यूं बयान किया गया है अनुवाद– यह मना किया गया कि नबी पाक (सल्ल०) की मज़लिस में आओ तो तुम्हारी आवाज़ ऊंची नहीं होनी चाहिये। क्यों? इसलिए कि बाज़ दफा जब आवाज़ ऊंची होती है तो दिल को तकलीफ पहुच जाती है और ज़ाहिर है कि हर आवाज़ से दिल नहीं दुखता न तकलीफ पहुंचती है। हां बाज़ दफा तेज़ आवाज़ ऐसी होती है जिस से तकलीफ पहुंचती है। इसलिए फरमाया कि– अनुवपाद– लेकिन तुम तमीज़ (पहचान) नहीं कर सकते हो कि तुम्हारी आवाज़ से तकलीफ पहुची या नहीं पहुंची तो जब तुमको नहीं मालूम हो तो आवाज़ ऊंची नहीं होनी चाहिये। यह अदब बयान किया गया है रसूले पाक की मजलिस का और जो अल्लाह के प्रिय हैं और रसूल के नाइब और जानशीन (सहायक ओर उत्तराधिकारी) हैं, उनके साथ भी सावधानी बरतनी चाहिये कि कोई ऐसा कार्य जिस से उन को तकलीफ पहुंच जाए नही करनी चाहिये।

इसलिए फ़रमाया कि जो मेरे वली (भक्त) से दुश्मनी मोल लेगा, मेरा उससे एलाने जंग है ओर जब अल्लाह एलाने जंग कर दे तो क्या होगा? नतीजा मालूम है और फिर वली बनने का ढंग बता दिया।

वली बनने का तरीक़ा–

वली बनने का तरीक़ा यह है कि पहले तो फराएज़ (कर्तव्यों) की पूरी पाबन्दी करे जिसको ड्यूटी कहते हैं। ड्यूटी की पाबन्दी करे तो ज़िन्दगी शान्ति से गुज़रेगी। अगर कर्तव्यों का पालन करता है, उपासना में भी, मुआमलात (व्यवहार में) भी, हुकूक (अधिकारों) की अदाएगी में भी तो उसको शान्ति जीवन प्राप्त हो जाता

है। न उसमें गर्व, घमण्ड की भावना होतली है और न कोताही व दोष की बेचैनी न तो खुद अपने को बुजुर्ग समझता है ओर न ही उसको दूसरे बुजुर्ग मानते हैं लेकिन अगर वह साहसी है या हिम्मत वाला है और आगे बढ़ने का शौक़ है तो वह उसके साथ नवाफिल (नफिल नमाज़ों) की पाबन्दी करता है, तो उस पर प्रभाव पड़ने लगते हैं। अगर वह गव्र, घमण्ड और अपने को बड़ा बुजुर्ग समझने के ख़्याल से बचा रहात है तो वह अल्लाह का वली बन जाता है और उस के उन्नति की सीमा नहीं होती क्योंकि वली के दर्जे अनगिनत हैं मगर इंसान की यह कमजोरी है कि कर्तव्यों के पालन में तो कोताही करता है और नवाफिल की बड़ी पाबन्दी बल्कि अधिक वज़ीफ़ा पढ़ना भी अपने सर ले लेता है जिसको यूं समझा जा सकता है कि दफतरों और कारखानों में काम करने वाले अपने कर्तव्य पालन में कोताही करते हैं, देर से आते हैं, जल्दी चले जाते हैं या दफ्तर ही में बैठकर समय नष्ट करते हैं ओर कारखाने का नुक्सान करते हैं लेकिन वही लोग यह चाहते हैं कि ओवर टाईम मिल जाए, ओवर टाईम की फिक्र में रहते हैं तो कर्तव्य पूरा नहीं करते और ओवर टाईम के चक्कर में रहते हैं। आज दीन (धर्म) में भी यही हो रहा है कि कर्तव्यों को तो पूरा नहीं कर रहे हैं लेकिन ओवर टाईम के चक्कर में रहते हैं। पूछते हैं फुलां काम नहीं हो रहा है वज़ीफा बता दीजिए। बज़ीफा पढ़ रहे हैं, फर्ज़ नमाज़ ग़ायब और दो दो घंटे तीन–तीन घंटे बैठे वज़ीफ़ा पढ़ रहे हैं। या उसी प्रकार जो फर्ज़ चीज़ें हैं, जरूरी हैं, मां–बाप के हक़ूक़ (अधिकार) हैं उसको पूरा नहीं करेंगे। कमाना फर्ज़ है कभी कभी वह नहीं करेंगे, नफली नमाज़ें पढ़े चले जा रहे हैं, फर्ज़ को छोड़े हुए हैं ओर नवाफिल पर अमल हो रहा है। यह सही नहीं है। पहले ड्यूटी करो, ड्यूटी पूरी हो गई अब ओवर टाईम ठीक है। ड्यूटी पूरी करने के बाद कर्तव्यों की पूर्ति के पश्चावत अब अगर कोई व्यक्ति नफली काम करता है तो फिर उसकी उन्नति की कोई सीमा नहीं क्योंकि फर्ज़ जब पूरा करेगा तो कारखाने का मालिक खुश हो जाएगा। वही उसको फिर ओवर टाईम देगा और जो वहां गड़बड़ कर रहा है फर्ज़ पूरा नहीं करता, ड्यूटी पूरी नहीं करता तो उसको ओवर टाईम नहीं मिलेगा और नज़र रखेगा कि यह आदमी सही नहीं है। अल्लाह की नज़र में हर शख़्स है और उसका हर काम नज़र में है तो फरमाया कि बन्दा नवाफिल के ज़रिए से मुझ से करीब होता जाता चला जाता है यहां तक कि मैं उसको चाहने लगता हूं और जब मैं उसको चाहने लगा हूं तो उसका का बन जाता हूं जिस से वह सुनता है, आंख बन जाता हूं जिस से वह देखता है, हाथ बन जाता हूं जिस से वह पकड़ता है, पैर बन जाता हूं जिस से वह चलता है। मुझसे मांगता है तो मैं देता हूं और पनाह चाहता है तो ज़रूर पनाह देता हूं। यह लक्षण बता दिये गए इसी से यह बात कही जाती है कि औलिया अल्लाह सुरक्षित होते हैं, अमबिया अलैहिस्सलाम मासूम होते हैं, औलिया–ए–कराम सुरक्षित होते हैं अर्थात जब अल्लाह तआला कान बन जाए और हाथ बन जाए, पैर बन जाए तो उसका कान ग़लत बात नहीं सुनता, आंख गलत नहीं देखती, पैर ग़लत नहीं उठता, हाथ गलत नहीं पकड़ता और उसकी दुआएं कुबूल होती हैं। अगर शरण (पनाह) मांगता है तो अल्लाह तआला उसको ज़रूर शरण देता है। सुरक्षित होने का यही अर्थ है। यह एक प्रभाषिक (इस्तलाही) शब्द है अर्थात इसमें गुनाह की सम्भावना होती है बल्कि गुनाह हो भी जाता है लेकिन गुनाह पर स्थिर नहीं रहता है उस पर आग्रह नहीं करता। अन्तर यह है कि हम जैसे लोग हैं वह गुनाह करते हैं तो गुनाहकरते चले जाते हैं तौबा नहीं करते। सही रास्ते पर आने की कोशिश नहीं करते। इस रास्ते में मेहनत व जद्दोजिहद नहीं करते।

मह़ब्बत न हो शक्लो सूरत की ख़ातिर
न शक्ल ये रहेगी न सूरत ये बाक़ी
मह़ब्बत ख़ुदा के लिये ही करो तुम
मह़ब्बत के लाइक़ वही ज़ाते बाक़ी

(पृष्ठ १२ का शेष)

में मिलता तो फ़रमाते, अच्छा तो आज मैं रोज़े से हूँ।

वफ़ात तक आप का मामूल रहा कि रमज़ान के आख़री अशरह में एतकाफ फ़रमाते थे। एक बार वह रह गया तो शव्वाल में उसकी क़ज़ा की। हर साल दस दिन का एतकाफ फ़रमाया करते थे लेकिन जिस साल वफात हुई उस साल बीस दिन का एतकाफ फरमाया। और हज़रत जिब्रील हर साल आपसे एक बार कुरआन शरीफ का दौर करते थे लेकिन वफात के साल दो बार दौर किया।

और हमने पानी से हर चीज़ को ज़िन्दा किया -(पवित्र कुर्आन)

डा० अब्दुलबारी सीवानी

यह बात हम सब मानते हैं कि हमारी ज़िन्दगी का इन्हिसार (निर्भरता) पानी पर है। हमारी ज़मीन का सत्तर फीसद भाग पानी से घिरा हुआ है। पानी इन्सानी ज़िन्दगी का अटूट तत्व है। आज जबकि चान्द और दूसरे सय्यारों पर ज़िन्दगी की तलाश हो रही है वहां हवा के साथ पानी की तलाश पहले की जाती है। ताकि पता चल सके कि वहाँ ज़िन्दगी सम्भव है या नहीं। हमारी धरती पर जितना पानी है उसका २.२६ प्रतिशत भाग ही स्वच्छ और पीने लाइक है, ६७.२४ भाग समन्दर का खारा पानी है।

यह बात स्पष्ट है कि स्वच्छ पानी पीने लाइक की मात्रा कुल पानी के समक्ष बहुत कम है फिर भी हम लोग पानी को बुरी तरह खराब करते हैं। यह बात अब हर खास व आम की समझ में आ जानी चाहिये कि अगली लड़ाई अब पानी के लिये होगी। हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में गर्मी के ज़माने में इसका अन्दाज़ा शिद्दत से हो रहा है। अब तो पीने के पानी के अलावा नदियों का पानी जो खेतों की सिंचाई में काम आता है उसका सिलसिला भी तेज़ी से ख़त्म हो रहा है। पानी की कमी के अलावा सबसे अहम मसअला उसकी आलूदगी का है जो हमारी गफलत बे तवज्जुही और ना वाकिफीयत की वजह से उभर रहा हैं। अब तक पानी की आलूदगी (गन्दगी) दूर करने के लिये नजासत और फैक्ट्रीयों के गन्दे पानी को नदियों में जाने से रोकना था, इसलिये कि नदियों के पानी की आलूदगी की यही दो वजहें थीं और इन गन्दगियों से जान लेवा बीमारियां पैदा होती थी, पिछली सदी तक यही कोशिशें रहीं कि फैक्ट्रीयों का गन्दा पानी साइन्सी तौर पर साफ किया जाए।

टिक्नालोजी के तरक्की के साथ आलूदगी दूर करने से पानी की खासीयत और औसाफ में तब्दीली आ जाती है, लनदन की थाम्स नदी में जब म्यून्सपिल्टी और फैक्ट्रीयों का गन्दा पानी जाने से रोक दिया गया तो वह पानी जो एक सदी से आलूदगी से पुर था और जिसमें आक्सीजन की कमी थी फिर से ज़िन्दा हो गई और १९७० की हदाई में उसमें मछलियां पाली गईं जो खाने के लाइक थी। १९६० तक लोग फैक्ट्रीयों के गन्दे पानी, कान के खुले मुंह के पानी, इमारतों के बनने में काम में लाए हुए गन्दे पानी आदि से पैदा आलूदगी को नज़र अन्दाज़ करते रहे। अब लोगों को इसकी जानकारी हुई कि केवल उक्त विधि ही से पानी को गन्दगी से नहीं बचाया जा सकता। इसलिये पी०सी०बी० तेज़ाबी बारिश, कीड़े मारने की विभिन्न दवा आदि के मिल जाने से भी पानी की आलूदगी होती है।

पानी की आलूदगी पानी कीसतह की खराब हालत को कहते हैं। पानी में मिली वह अनजान तब्दीली जो उसके तबई (स्वाभाविक) हयातियाती या कीम्यावी खवास (गुणों) को बदल देती है पानी की आलूदगी कहलातरी है जो कुदरती आबी जखाइर (पानी भन्डारों) को बर्बाद कर देती है। पानी की आलूदगी के बड़े कारण निम्नलिखित हैं :–

(अ) तल्छट तत्वों का पानी में मिलना।

(ब) आक्सीजन की कमी या नामियाती अज्ज़ा का पानी में मिलना।

(स) ऐसे पौदों का पानी में जमना जो उसमें आक्सीजन की कमी कर दें।

(द) जहरीले कीमियावी अनासिर (तत्वों) का पानी में मिलना।

(ध) पानी में तेज़ाबियत (एसिड) का बढ़ जाना।

इसके अलावा पानी में खुर्दबीनी ज़रासीम (किटाणुओं) और ताब्कारी तवानाई वाली शुआओं के निकलने वाले अमल **(Radio Lagical Rays)** से भी पानी की आलूदगी बढ़ जाती है। इस तरह की आलूदगी वहां होती है जहां न्यूक्लाई हथ्यार **(Nuclear Weapons)** का तजरिबा किया जाता है या तवानाई हासिल करने के अमल में फुज़्लों **(By Products)** की शक्ल में बचे हुए ताब्कारी अनासिर को नदी में मिला दिया जाता है जिसकी वजह से आलूदगी होती है। आइये अब उक्त आलूदगियों के कारणों को अलग अलग देखा जाए।

(अ) तल्छट तत्वों का पानी में मिलना

सतही आब के लिये यह सबसे अहम मसअला है जिसे इन्सानों ने अपनी

गफलत व लापरवाही से पैदा किया है। इस अमल में तलछट के छोटे–छोटे टुकड़े बहुत तेज़ी से पानी में घुस कर पानी के पौदों में अलगी **(Algae)** की पैदाइश को रोकते हैं। यह पानी में मिली दूसरी गन्दगियों के जमाव से पानी के निचले हिस्से **(Benthic Biota)** और मछलियों पर असर करते हैं। धीरे–धीरे बहने वाले पानी खास तौर से पानी के ज़खीरों (भंडारों) बन्दरगाहों, नदी के वह किनारे जो समुन्द्र से मिलते हैं, खाड़ियों और बहते पानी की घेरने की जगहों आदि से हर साल काफी मिक्दार में तलछट जमा हो जाती है। झरनों में तो आम तौर से तलछट जमा हो जाती है। तलछट का गाढ़ा होना मुख्तलिफ अनासिर पर मुनहसिर करता है जैसे बारिश की मुद्दत और मिक्दार, जमीन की हालत और उसकी दूसरी कैफीयात, ज़मीन के नीचे की हालत ज़मीन के कटने की रफ्तार वगैरह।

तलछट का गाढ़ापन कुछ मिली ग्राम पर मीटर से हज़ार मिली ग्राम पर मीटर तक होता है। तैरता हुआ तलछट पानी के जानवरों का माहौल बदल कर खराब कर देता है। खास तौर से रौशन शुआओ (किरनों) को रोक देता है जो हरारत को बदल कर नीचे के पानी पर पर्दा डाल देती है जिससे आरगेनिक माद्दे **(Organic Matters)** और दूसरी चीज़ें बदल जाती हैं जिसकी वजह से पानी के जानवरों का माहौल बदल जाता है और पानी के जानवरों के लिये गैरमुवाफिक हालात पैदा हो जाते हैं। साथ ही यह बड़े जानवरों के लिय जो समन्दर की तह में रहते हैं, खुराक पैदा होना बन्द हो जाती है। यह पाया गया है कि तलछट की वजह से मछली के अन्डे ज़मीन में दफन हो जाते हैं जिसकी वजह से मछलियों कीतादाद कम होने के अलावा मछली के खाने, अन्डे और उनके रहने के कुदरती हालात बदल जाते हैं। तलछट के सबब रौशनी का गुज़र पानी में कम हो जाता है जिससे पानी के जानवरों के ज़रीओ फोटोसिन्थेसिस **(Photosynthesis)** का अमल भी कम हो जाता है या लगभग खत्म हो जाता है ज़मीन का कटावा तलछट की खास वजह है जिससे नामयाती अनासिर पानी में मिल जाते हैं। शम्पू, साबुन के झाग और पी०सी०बी० के पानी में मिलने की वजह से तलछट में काफी इज़ाफा हो जाता है, साथ ही जहरीली घातें, कीड़े मारने वाली दवाएं आदि तलछट की दूसरी खास वजहें हैं।

(ब) आक्सीजन की कमी या नामयाती अजज़ा का पानी में मिलना मछली या पानी के जानवर के लिये पानी में घुला आक्सीजन वह पहला पैमाना है जिसे पानी की हालत के मुवाफिक होना माना जाता है, खाद के इस्तिअमाल के बाद बचा हुआ पानी, जानवरों के चारों का ढेर या उनकी गन्दगी, शहरी आलूदगी, या नाली का गन्दा पानी आदि पानी को आलूदा दोषित करने में बहुत अहम रोल अदा करते हैं जिसकी वजह से नदी के मुंह में जमा होने वाली गन्दगी की सतह (तल) मोटी हो जाती है। जो पानी में घुले हुए आक्सीजन को बड़ी मिक्दार में कम करती है। पानी में मौजूद बैक्टीरिया और पानी के पौदे फनजाई **(Fungi)** पानी में घुले हुए आक्सीजन को हयात्याती आक्सीडेशन **(Bio Oxidation)** के ज़रीओ पानी में घुले आक्सीजन को कम करते हैं।

नाइट्रोजन के कम्पाउन्ड का इस्तिअमाल जो अमोनिया के तक्सीदे अमल के ज़रीओ या बैक्टीरिया के ज़रीओ नाइट्रोजन को नाइटरस में बदलने के अमल में इस्तिअमाल हुआ पानी, पानी मिले आक्सीजन को खत्म कर देता है। पानी में पलने वाले पौदे तक्सीदे अमल के ज़रीओ, पानी में मिले आक्सीजन को सांस लेने में इस्तिअमाल करके पानी में घुले आक्सीजन को खत्म कर देते हैं। लिहाज़ा पानी की सतह से पौदों को बराबर साफ करते रहना चाहिये।

(ज) ऐसे पौदां का पानी में जमना जो पानी की आक्सीजन कम करते हैं।

हमारे मुल्क मे जमे हुए पानी में बहुत किस्म के पौदे घास, पनखवा, पटसन, खाद का इस्तिअमाल किया हुआ पानी, जानवरों का बचा हुआ चारा उनका पाखाना वगैरह मिल जाते हैं जिससे पानी में मिला आक्सीजन खत्म हो जाता है। वास्तव में इस किस्म के पानी का आक्सीजन बाइयोडीगरेबल आरगान्जिम **(Bio Degrable Organism)** जैसे बैक्टीरिया और फनजासई **(Fungi)** के ज़रीओ बायोकेमीकल **(Biochemical)** या बायोलोजीकल **(Biological)** अमल के ज़रीओ इस्तिअमाल होकर खत्म हो जाता है। इस अमल में बैक्टीरिया और फनजाई आक्सीजन इलिक्ट्रोन लेने वाले **(Electron Acceptor)** बायो आक्सीडेशन **(Bio Oxidation)** के अमल से आक्सीजन खत्म कर देते हैं। निचली सतह से लगे पानी आक्सीजन पानी क ऊपर जमा गन्दगी से खत्म हो जाता है।

अमोनिया, और आरगेनिक, नाइटरोजन, नाइटरेशन (Nitration) का अमल जिनमें आक्सीडेशन (Oxidation) हो जाता है, की वजह खत्म हो जाती है। रात में अलगी (Algae) और एक्वा वेस्कूलर पलान्ट (Aquavascular Plant) भी पानी में मौजूद आक्सीजन का इस्तिमाल अपनी बक़ा के लिये करते हैं। जिसकी वजह से भी पानी का आक्सीजन खत्म हो जाता है। पानी में ज़ियादा आक्सीजन का घुलना एक कुदरती अमल है जो पानी की सतह के ऊपर हवा के गोले के तूफान के इर्तिआश (Turbulance) के ज़रीअे होता है, साथ ही दिन में फोटोसेन्थेसीस (Photosynthesis) का अमल जो अलगी और अक्वाटिक पलान्ट (Aquatic Plant) करते हैं, की वजह से पानी में घुलता है, यह सबके सब कुदरती अमल हैं जो काएनात के मालिक के ज़रीअे हो रहेहैं।

(द) जहरीले कीम्यावी अनासिर का पानी में घुलना

यूं तो दुन्या में जितने भी अनासिर पाए जाते हैं वह किसी न किसी मिक्दार में पानी मे घुले हुए हैं लेकिन फैक्ट्रीयों और शहरों के साथ–साथ पानी में घुले अनासिर खास़ तौर से जहरीले अनासिर (Toxic Elements) की मिक्दार बढ़ती जा रही है। अनासिर के जदवल (Periodic Table) में मौजूद ५६ अनासिर ऐसे हैं जो भारी अनासिर हैं जिन १६ भारी घातों (Se, Sr, Zn, Bi, Co, Pt, Ag, Ce, Sb) ऐसे हैं जो बहुत ज़हरीले हैं और कुर–ए–हवा (हवा के गोले) में आसानी से दस्तयाब हैं, इन १६ जहरीले घातवी अनासिर में ६ घात अनासिर Zn, Sn, Sr, Sb, Pb, In, Hs, Ce, Cd, As जो इन्सानों के ज़रीअे फजा में घुलते हैं, यह कुदरती मिक्दार से ज़ियादा मिक्दार में शामिल होकर ज़हरीले असर दिखाते हैं। इसके अलावा इसमें से भी कुछ अनासिर जैसे ZN, Cd, Ce के बायू केमीकल किर्दार हैं। दूसरे अनासिर की भी कुछ न कुछ मिक्दार में इन्सानी व हैवानी खुल्या (Cell) में होना ज़रूरी है। हयातियाती किरदार के हामिल अनासिर की कमी नुक्सान देह होती है यानी उसकी एक खास मिक्दार इन्सानी व हैवानी खुल्ये में होना ज़रूरी है जबकि ज़रूरी मिक्दार से बढ़ने के बाद उसके असरात ज़हरीले होते हैं। धातवी अनासिर के जहरीले उस धात के हयातियाती किरदार, आबी पौदों जानवरों और इन्सानों में उसकी सहीह मिक्दार पर मुनहसिर हैं। अध्ययन ने यह साबित कर दिया है कि Hg, Pb, As, Se, Cd, Ce, Zn, Cr और अ के इस्तिअमाल आलूदगी (प्रदूषण) बढ़ाने में बहुत मआविन हैं लिहाज़ा इनका इस्तिअमाल बहुत ही इहतियात से होना चाहिये ज़हरीली घातें आम तौर से उनके नमक में बदल जाते हैं। सलफाइड, कारबोनिट, और फास्फेट के नमक एसे हैं जो और तौर से कम घुलते हैं और किनारे में लगकर जम जाते हैं। जहरीले अनासिर आम तौर से कान खोदने एक जगह से दूसरी जगह ले जाने और इधर उधर फैलाने से अपना असर दिखाते हैं।

ग्रीन लैन्ड के बर्फ में घुले (Pb) लोड की मिक्दार जो बीस साल पहले 0.001 MG Lit थी अब बढ़कर 0.20 MG/Lit हो गई है। इस तरह १६०० में जस्तमा और कूपर की मिक्दार ०.१५ और ०.६ मिली ग्राम पर लीटर थी अब ०.८६ और १.० मिली ग्राम पर लीटर हो गई है; बहुत सारे अनासिर (तत्व) Hg, Pb, Se, As वगैरह बैक्टीरिया के ज़रीअे मेथलेशन (Methylation by Bacteria) करके जहरीले आरगेटलिक (Toxic Organometallic Component) अजज़ा बनाते हैं जैसे मरकरी (Hg) मोनो मेथाइल मरकरी (CH3 Hg) और बाई मेथाइल मरकरी (CH3-Hg-CH3) बनाते हैं जिससे जापान में जहरीला असर दिखाया (मीना माता वबा) इसी तरह केडमीम की वजह से जापान में ही इटाई इटाई की वबा फैली जो मछली के खाने की वजह से हुई बहुत सारे आरगिंग केमकिल पानी में मिलकर सरतानी असर पैदा करते हैं।

(स) पानी में तेज़ाबियत का बढ़ जाना।

तेज़ाबियत या बी एच का बढ़ जाना सतह के पानी की आम जांच तेज़ाबियत का पी०एच० के ज़रीअे किया जाता है, यह जब पी०एच० की हद बढ़ जाती है तो बहुत से आबी अज्साम (पानी के जानवर) आमतौर से पानी मे रहने वाली मख्लूक पानी ६.० से ८.५ तेजाबियत पी०एच० को बर्दाश्त करते हैं सतह के पानी का पी०एच० दो सबबों से बढ़ जाता है। अव्वल (पानी के ज़रीअे) कान के तेज़ाबी पानी का दूसरे पानी में मिलना दूसरे तेज़ाब के प्रेसीप्रिटीशन के ज़रीअे जो कुर–ए–हवा से नाइटरोजन और सलफर की वजह से बढ़ जाता है यह सारे गाड़ियों से निकले धुवाँ की वजह से हवा के गोले में मिलता है और बाद में तेजाबी बारिश की वजह से पानी में मिल जाता है।

सलफर के कम्पाउन्ड आक्सीडेशन के ज़रीअे सलफ्योरिक तेज़ाब बनाते हैं यही अमल नाइटरिक तेज़ाब बनने का सबब बनता है जो पानी में घुलकर तेज़ाबी असर डालते हैं और पानी को आलूदा करते हैं।

लिहाज़ा इस बात की ज़रूरत है कि पानी को मुस्तक्बिल के लिये बचाकर रखना चाहिये ताकि इन्सानों को कुदरत से मिला यह अनमोल खज़ाना खरीदना न पड़े, और दूसरी चीज़ों के साथ पानी भी गरीबों की पहुंच से दूर न हो जाए। इस बात की ज़रूरत है कि हर जगह शहरों, कस्बों और दीहातों में पानी को कसाफत (प्रदूषण) से बचाने की मुहिम चालाई जाए और लोगों को आबी आलूदगी (जल प्रदूषण) और उसके मुज़िर (हानिकारक) असरात से बाखबर किया जाए नहीं तो जिस बे दर्दी से पानी को आलूदा (दूषित) किया जा रहा है अगर यह जारी रहा तो दुन्या को बहुत बुरा दिन देखना पड़ेगा।

कुछ लोग समझते हैं कि वुज़ू या ग़ुस्ल में चाहे जितना पानी बहाएं, याद रखिये यह ग़लत सोच है। वुज़ू करने में उतना ही पानी इस्तिअ़माल कीजिए जितने की ज़रूरत है। मस्जिद के नल की टोंटी खोल कर बेहिसाब पानी बहाना नाजाइज़ है। इसी तरह नहाने में फ़र्ज़, सुन्नत, मुस्तहब सब अदा कीजिए मैल भी साफ़ कीजिए मगर फ़ुज़ूल पानी न बहाइये।

टीपू सुलतान की शहादत

शेर की एक दिन की ज़िन्दगी गीदड़ की सौ साला ज़िन्दगी से बेहतर है।

टीपू सुलतान की अंग्रेजों से घमसान की लड़ाई चल रही थी सुलतान के एक ग़द्दार ख़ादिम ने आवाज़ दीः हुजूर! अगर आप अब भी अपनी जान की हिफ़ाज़त के लिये खुद को दुशमन के हवाले कर दें तो वह आपके मंसब का पास करते हुए आपकी जान बख़्श देंगे' सुलतान यह अल्फ़ाज़ सुनकर जलाल में आ गया और गुस्से से कांपते हुए पलट कर बुलन्द आवाज़ से जवाब दियाः "मेरे नज़दीक शेर की एक दिन की जिन्दगी गीदड़ की सौ साला ज़िन्दगी से बेहतर है।" और लड़ाई जारी रखी घोड़े को गोली लगी गिर गये, पैदल लड़ाई जारी रखी और मुतअ़द्दिद गोरों को कत्ल किया, अब शाम हो चुकी थी। दूसरे दिन सख़्त गर्मी थी, सुबह से अस्र तक जंग चलती रही, मग़रिब का वक़्त क़रीब था सुलतान के जिस्म में कई गोलियाँ लग चुकी थी सुलतान बिल्कुल निढाल हो चुके थे मगर लड़ाई जारी रही आखिर कार सुलतान के सीने में एक गोली पैवस्त हो गई सुलतान गिर गये, खून तेज़ी से बहने लगा एक गोरा सिपाही करीब खड़ा था समझा कि सुलतान का काम तमाम हो गया है, करीब आकर सुलतान की कमर से हीरों जड़ा कीमती शमशेर बन्द उतारने लगा।

सुलतान अभी हयात थे अगर्चे बुरी तरह निढाल थे हिम्मत करके उठ खड़े हुए और उस गोरे पर तलवार से वार कर दिया, उसने वार अपनी बन्दूक पर रोक लिया बनदूक टूट गई मगर गोरा बच निकला, सुलतान ने दूसरे वार से एक दूसरे गोरे का काम तमाम कर दिया इतने में दूर से एक दुशमन सिपाही ने सुलतान की कनपटी को निशाना बनाया, गोली कान के पास लगी, सुलतान ज़मीन पर गिर गये और रूह परवाज़ कर गई, सुलतान के साथ उस रोज़ उनके बारह हज़ार जांबाज़ सिपाहियों ने भी जामे शहादत नोश फरमाया इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून्।

इस पूरे वाक़िअे की मंजर कशी जंग में शरीक ऐनी शाहिद मेजर एलन ने इस तरह की है :–

"टीपू को फाटक से निकाल कर बाहर लाया गया उसकी आंख खुली थी और जिस्म गर्म था, चन्द लम्हों के लिये कर्नल वेलज़ली और मुझे शब्हा हुआ कि वह शायद जिन्दा है, लेकिन नब्ज़ की हरकत देखने के बाद शुब्हा दूर हो गया उसने चार जख्म खाए थे, तो तीन जिस्म पर और एक कनपटी पर, उसके जिस्म पर नफीस कपड़े की आस्तीन दार सदरी फूलदार, ढीला ढाला पाजामा, और कमर के गिर्द अर्गुवानी रंग का रेशमी व सूती पेटका, सर नंगा था शायद उसकी पगड़ी लड़ाई में गिर गई थी, एक खूबसूरत थैला भी उसके जिस्म पर लटक रहा था जिस पर सुर्ख और सब्ज़ पट्टी लगी हुई थी, उसके बाजू पर एक तअ़वीज़ बन्धा था मगर कोई और ज़ेवर न था, उसके चेहरे से एक वक़ार टपक रहा था जो उसे आम लोगों से मुमताज़ कर रहा था।

आपके प्रश्नों के उत्तर

मुनव्वर सुल्तान नदवी

प्रश्न : बैंक से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के कार्ड इशू होते हैं शरीअ़त की रू से उनके अह़काम मअ़लूम करना हैं जैसे ए०टी०एम० कार्ड, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, कृपया इनके अह़काम लिखये।

उत्तर : ए०टी०एम० (A.T.M) कार्ड Automated Taller Machine का संक्षिप्त है। यह कार्ड बैंक अपने खाते दारों को इस गरज़ (उद्देश्य) से जारी करता है कि वह मांगी हुई रकम जब चाहें और जहां चाहें ए०टी०एम० मशीन से निकाल सकें। इस कार्ड द्वारा खातेदार बैंक से अपनी जमा की हुई रकम ही से लाभ उठा सकता है। कार्ड बनवाने की कोई फीस नहीं ली जाती इसी तरह ए०टी०एम० मशीन से रकम निकालने की भी कोई फीस नहीं ली जाती, अलबत्ता दूसरे बैंकों के ए०टी०एम० निज़ाम (बाहमी मुआहदे के तहत) से रकम निकालने पर कुछ रुपये बतौर फीस हर बार अदा करने पड़ते हैं। गुज़िश्ता दिनों ए०टी०एम० निज़ाम की सुहूलत से फाइदा उठाने के लिये सर्विस चार्ज के नाम पर सालाना पचास रुपिये बैंक को अदा करने का एअ़लान हुआ है।

ए०टी०एम० अगर्चि आधुनिक पैदावार है, मगर इसकी बुन्याद कदीम फुक़हा (इस्लामी धर्मशास्त्रियों) के यहाँ वसीक़े (अधिकार पत्र) की शक्ल में मिलता है कि इस वसीक़े को दिखाकर व्यापारी दूसरे शहर में रकम हासिल करते थे तो हम ए०टी०एम० निज़ाम को वसीक़े की तरक़्क़ी याफ्ता (उन्नति प्राप्त) शक्ल कह सकते हैं। फ़िक़्ह इस्लामी में वसीक़े के जाइज़ होने का सुबूत मौजूद है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर का मक्के के व्यापारियों को वसीका (अधिकार पत्र) देना साबित है (अलमब्सूत लि सरखसी १२/३७) इसी तरह इस निज़ाम में खातेदार सिर्फ अपनी रकम से फाइदा उठा सकते हैं। न वह इस कार्ड की बुन्याद पर बैंक से उधार ले सकते हैं और ना ही इस निज़ाम के ज़रीअ़े रकम निकालने पर कोई फीस लाज़िम आती है लिहाज़ा इसके इस्तिअ़माल में कोई शरअी रुकावट नहीं है अतः मौजूदा ए०टी०एम० निज़ाम से फाइदा उठाना उसका कार्ड बनवाना और उसके ज़रीअ़े रकम निकालना जाइज़ है।

डेबिट कार्ड (Debit Card)

यह कार्ड भी बैंक अपने खातेदारों के लिये जारी करता है, इस कार्ड से ए०टी०एम० की तरह रकम निकालने के अलावा उन दुकानों और तिजारती मरकज़ों से सामान व खिदमात की अदाएगी भी कर सकते हैं जनके और बैंक के बीच मुआहदा (समझौता) हुआ हो तथा इन्टरनेट की मदद से अपनी रकम दूसरों के खातों में मुन्तकिल (ट्रांस्फर) भी कर सकते हैं। इसके इस्तिअ़माल पर भी अलग से कोई चार्ज नहीं देना पड़ता है तथा इस कार्ड के ज़रीअ़े सिर्फ अपनी जमा की हुई रक़म ही से खरीद फरोख़्त कर सकते हैं। उक्त कार्ड से खरीद व फरोख़्त करना जाइज़ है या नहीं, अक्सर मुआसिर (समकालीन) फुक़हा डेबिट कार्ड को हवाला या वकाला (यह फिक्ही इस्तिलाहात हैं) पर कयास किया है। इस कार्ड में भी कार्ड होल्डर अपनी जमा की हुई रकम ही से खर्च कर सकता है तथा कोई शरअी रोक भी नहीं है अतः इस कार्ड द्वारा खरीद व फरोख्त (क्रय–विक्रय) करना और रकम ट्रांस्फर करना दुरुस्त है। यही फत्वा सऊदी अरब के दारुल इफ्ता का भी है।

क्रेडिट कार्ड (Credit Card)

डेबिट कार्ड द्वारा जो काम होता है वही क्रेडिट कार्ड के ज़रीअ़े भी होता है, बस फर्क इतना है कि डेबिट कार्ड में अपनी जमा की हुई रकम से खरीदारी कर सकते हैं जबकि क्रेडिट कार्ड में जमा की हुई रकम से ज़ाइद की भी खरीद कर सकते हैं। बल्कि खाते में रकम न हो तब भी मज़ीद एक मुकर्ररा रकम से खरीदारी कर सकते हैं। उसे नक़्द रकम की शक्ल में निकाल भी सकते हैं। उसकी सूरत यह होती है कि बैंक, खातेदार की माली हैसीयत और उसकी सालाना आमदनी को देखकर उसी हैसीयत का कार्ड जारी करता है, अब चाहे उसके खाते में रकम हो या न हो, वह उस माली हैसीयत के मुताबिक जो बैंक ने मुकर्रर किया है, खरीदारी कर सकता है या उसे रकम की शक्ल में निकाल सकता है। अलबत्ता उस ज़ियादा रकम की हद मुकर्रर होती है, नीज़ इस कार्ड में

जो ज़ाइद रकम इस्तिअ़माल की है, उसकी वापसी का वक्त मुकर्रर होता है, उस मुद्दत के बाद जमा करने में सूद देना पड़ता है।

इसी तरह बैंक यह कार्ड जारी करके मुकर्ररा मुद्दत के बाद उसकी तजदीद (रिनिवल) के लिए एक मुकर्ररा (निर्धारित) रकम फीस के नाम से लेता है। इसके अलावा इस कार्ड से रकम निकालने या दूसरे के खाते में मुन्तकिल करने की सूरत में भी कुछ रुपये कटते हैं। लिहाज़ा क्रेडिट कार्डकी मुख्वजा (प्रचलित) सूरत चूंकि सूदी मुआमले पर मुश्तमल (आधारित) है, लिहाज़ा क्रेडिट कार्ड या इस किस्म के किसी कार्ड का हासिल करना जाइज़ नहीं है।

प्रश्न : शहरों में फ्लेट में टाइलेट और बाथरूम एक साथ बने होते हैं, उन बाथरूमों में वुज़ू करना और ग़ुस्ल करना कैसा है?

उत्तर : जब टाइलेट अर्थात शौचगृह (पाख़ाना) और बाथरूम एक साथ बनाते हैं तो पाख़ाने के लिये फ्लेश कमोड होता है, इस तरह नहाने की जगह पर नजासत नहीं होती है इस लिये उस हिस्से में नहाना और ग़ुस्ल करना बिला कराहत जाइज़ है। अल्बत्ता अगर कोई बदज़ौक़ ग़ुस्ल करने की जगह पर नजासत कर देता हो तो नजासत दूर किये बिना उसमें ग़ुस्ल या वुज़ू करना दुरुस्त न होगा।

प्रश्न : एक लड़का जिसकी उम्र २० साल है, वह अपनी माँ के साथ कभी–कभी सोता है। महब्बत में यह सोना उसके लिये जाइज़ है या नहीं?

उत्तर : हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का फ़रमान है कि सात साल के बच्चे को नमाज़ का हुक्म दो और दस साल का बच्चा (या बच्ची) हो जाए और नमाज़ छोड़े तो उसको मारो और (दस साल की उम्र में) उसका बिस्तर अलग कर दो। लिहाज़ा २० साल का आदमी अपनी मां के साथ नहीं सो सकता। उसको तो दस साल की उम्र ही से अ़लाहिदा सोने का हुक्म दिया जा चुका है।

प्रश्न : क्या शराब में नमक डाल देने से वह पाक हो जाती है?

उत्तर : शराब में नमक मिलाने से शराब सिर्का बन जाती है और पाक हो जाती है मगर यह मसअला सिर्फ अहनाफ़ का है जैसा कि हिदाया, मिर्क़ात और शामी वग़ैरह में मिलता है। अलबत्ता यह नहीं लिखा कि कितनी शराब में कितना नमक डालने और कितनी देर बाद सिर्का बनेगा। शामी में है कि खटास आजाने पर शराब सिर्का हो जाएगी।

क्षमा याचना :

जुलाई के अंक पृष्ठ ३४ पर पुदीना शराब में पीस कर लेप के लाभ लिखे गये और लिखा गया कि शराब में अगर नमक डाल दें तो वह पाक हो जाती है। हम क्षमा चाहते हैं कि हम ने यह नहीं लिखा कि यह मसअला सिर्फ अहनाफ़ का है फिर यह न मालूम हो सका कि कितनी शराब में कितना नमक डालने और कितनी देर में शराब सिर्का बनेगी इस लिये हम एअ़लान करते हैं कि शराब में नमक डालने पर उसमें खटास आ जाने और सिर्का बन जाने के पश्चात ही वह पाक होगी और उसका इस्तिअ़माल बतौर सिर्का जाइज़ होगा। दवा में भी उसका इस्तिअ़माल जाइज़ होगा लेकिन नमक डालकर शराब की तरह पीना जाइज़ न होगा।

रहीम के दोहे

अमर बेलि बिन मूल की, प्रतिपालत है ताहि।
'रहिमन' ऐसे प्रभुहि तजि, खोजत फिरिय काहि।।१।।
'रहिमन' वे नर मर चुके, जे कहुं मांगन जाहिं।
उन ते पहले वे मुए, जिन मुख निकसत नाहिं।।२।।
'रहिमन' विपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत् में, जानि परत सब कोय।।३।।
'रहिमन' रिस को छाँड़िके, करो गरीबा भेस।
मीठौ बोलौ नै चलौ, सबै तुम्हारो देस।।४।।
खीरा सिर ते काटिए, मलिये नमक लगाय।
'रहिमन' करुवे मुखन को, चहियत यही सजाय।।६।।
जो 'रहीम' ओछो बढ़े, तो अति ही इतराय।
प्यादा से फर्जी भयो, टेढ़ो–टेढ़ो जाय।।७।।
समय दशा कुल देखके, सबै करत सम्मान।
'रहिमन' दीन अनाथ को, तुम बिन को भगवान।।८।।
'रहिमन' नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझैं सब ताहि।।९।।
बिगड़ी बात बने नहीं, लाख करो किन कोय।
'रहिमन' बिगड़े दूध को, मथे न माखन होय।।१०।।
'रहिमन' देखि बड़ेन को, लघु न दीजै डारि।
जहां काम आवे सुई, कहा करे तरवार।।११।।

मस्तिष्क रोगों का परिचय

नज़ला ज़ुकाम (Coryza)

नाक से अगर पानी बहने लगे तो उसको ज़ुकाम और यही रुतूबत (तरी) अगर हल्क़ या सीने पर गिरे तो उसको नज़्ला कहते हैं। सीने या हल्क पर गिरने से तात्पर्य सीने या हलक का प्रभावित होना।

आम तौर पर सर्दी लगने, खट्टी चीज़ खाने, सिर्का, अचार, चटनी आदि खाने से दिमाग कमज़ोर हो जाता है जिससे नज़्ला व ज़ुकाम हो जाता है।

नाक बहने और सिर दर्द में कोडो पाइरीन लाभदायक है। यूनानी दवाओं में इत्रीफल उस्तुखूदूस या इत्रीफल कश्नीज़ी सोते वक्त गुनगुने पानी से खाना लाभदायक है। हम्दर्द की बनी नज़्ली भी फाइदेमन्द है। जाड़ों में नज़ला ज़ुकाम से बचने के लिये बादाम, अन्डा, चिलगोज़ा आदि खाते रहना चाहिये।

सुन भरी (Anesthesia)

जिस्म के किसी भाग का सुन हो जाना सुन भरी कहलाता है। यह रोग पट्ठों के किसी भाग के खराब हो जाने, कट जाने, जल जाने, या ज़ख्म में किसी जहरीले माद्दे (विषैले तत्व) के प्रवेश कर जाने से पैदा हो जाता है तो कभी उस हिस्से पर गर्मी, सर्दी का एहसास नहीं होता। उस जगह पर सुई चुभने से कोई तकलीफ नहीं होती। कभी यह सुनभरी का रोग फालिज का चिन्ह होता है। जुज़ाम (कोढ़) आतिशक (उपदंश) के नतीजे में भी कभी नसे बेकार हो जाती हैं जिसके कारण उनसे सम्बन्धित भाग सुन हो जाता है। किसी अच्छे डाक्टर से इलाज करवाएं।

गर्दन तोड़ बुखार (Cerebro Spinal Fever)

यह एक सख़्त बुखार है जो एक किटाणु से पैदा होता है। यह छूत का बुखार है जो रोगों से दूसरों को लग सकता है। इसके किटाणु मस्तिष्क (दिमाग़) और हराम मग़्ज़ (रीढ़ की बीच वाली नस) के पर्दों में पहुंच कर सूजन पैदा कर देते हैं।

पहचान : सिर में तेज़ दर्द, गर्दन अकड़ी हुई, मरीज़ टांगे फैलाकर नहीं लेट सकता, जिस्म में काले और लाल रंग के दाग़ पड़ जाते हैं। बुखार बहुत तेज़ होता है। रोगी पर ऊंघ तथा आधी बेहोशी की दशा छाई रहती है। अच्छे डाक्टर से सम्पर्क करें।

दिमाग़ी रग में सुद्दा पड़ जाना (Cerebral Thrombosis)

दिमाग़ी रग में से किसी रग में खून जमकर दोराने खून में रुकावट पैदा कर देता है।

अस्बाब (कारण) आतिशक का माद्दः, दिमाग़ी पर्दों की पुरानी सूजन, तम्बाकू को प्रयोग आदि।

पहचान :– सर चकराना, मत्ली और कै, जिस्म के एक भाग में बड़ी कमज़ोरी, भारीपन, झुन्झुनाहट, सर में तेज़ दर्द, कभी बेहोशी भी हो जाती फिर तो मौत का खतरा पैदा हो जाता है। किसी अच्छे डाक्टर से सम्पर्क आवश्यक है, या किसी हस्पिटल में एडमिट करें ताकि मरीज़ की ज़िन्दगी हो तो उसे सहायता पहुंचाई जा सके वैसे ऐसा मरीज़ खतरे से खाली नहीं रहता।

दिमाग़ी जिर्याने खून (Cerebral Haemorrhage)

दिमाग़ में किसी शिर्यान के फट जाने से जिर्याने खून (खून बहना) होने लगता है यह बहुत खतरनाक और जानलेवा रोग है।

कारण : आतिशक का माद्दा, पुराना मलेरिया, टाईफाइड, ब्लेड प्रेशर का बढ़ जाना तथा सिर में चोट लगना।

पहचान :– सर दर्द के साथ मरीज़ बेहोश हो जाता है। शरीर की मांसपेशियां (अज़लात) ढीली हो जाती है। आंखों की पुत्लिया फैल जाती हैं। पैरों के तल्वे बेहिस हो जाते हैं। चन्द घन्टों में मौत हो जाती है। चन्द घन्टे बीत जाने पर मरीज़ बचा रहता है तो अब इलाज से फ़ाइदे की उम्मीद रहती है लेकिन फालिज का असर रहता है।

मरीज़ को ऐसे अस्पताल में दाखिल करें जहां डाक्टर भी अच्छे हों और अच्छी देख रेख होती हो। ऐसे मरीज़ का तीमारदार बहुत होशियार होना चाहिये। मरीज़ तो बोल नहीं सकता तीमारदार ही उसकी गिज़ा, पाखाना पेशाब और करवट का प्रबन्ध करेगा।

●●●

(पृष्ठ ४० का शेष)

मैकार्मेक ने बताया कि इस तरह के मतभेदों में कमी आ रही है और वियना में समझौते को अंतिम रूप दिए जाने की पूरी उम्मीद है। उन्होंने दोहराया कि संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र के सातवें अध्याय के सुरक्षा परिषद के अनिवार्य प्रस्ताव के मद्देनजर ईरान से यह मांग की गई है कि उसे अपनी गतिविधियों को रोक देना चाहिए और हमारी भी यही न्यूनतम मांग है।

क्या अब इस्लाम की आवश्यकता नहीं रही?

मुहम्मद कुत्ब

इस्लाम और साइंसी तहक़ीकात (वैज्ञानिक अनुसन्धान) – इस्लाम की एक विशेषता यह है कि उसकी भाषा और शिक्षा बहुत सीधी सादी और आसान है। इस में कोई भ्रम और कोई एच पेच नहीं है न इस का समझना कठिन है। इस्लाम चाहता है कि इंसान को जो योग्यताएं दी गई हैं वह उन का प्रपूरण इस्तेमाल कर के अपने चारो तरफ फैली हुई ज़िन्दगी और ब्रहमाण्ड (काएनात) के सम्बन्ध में अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करे और प्रकृति के गुप्त रहस्यों को मालूम करे क्योंकि इस्लाम मानव बुद्धि और धर्म या दूसरे शब्दों में साइंस और मज़हब के बीच किसी विरोध का क़ाइल नहीं है। ईसाइयत की तरह वह इंसान को न समझ में आने वाले और पेचीदा विश्वास व विचार धारा पर ईमान लाने का आदेश नहीं देता और न इन पर ईमान लाने को अल्लाह पर ईमान लाने के लिए नागुज़ीर शर्त क़रार देता है। इसी प्रकार वह इंसान को इस दशा से भी दोचार नहीं करता कि जहां पर वह साइंसी तथ्यों (हकाएक़) खुदा की हस्ती का इनकार किए बिना स्वीकार ही न कर सके। यही नहीं बल्कि इस्लाम इंसान को स्पष्ट तौर पर यह भी बताता है कि इस संसार में उस को जो साधन सामग्री उपलब्ध है और जिस प्रकार यहां की अनगिनत गुप्त और प्रत्यक्ष (पोशीदा और ज़ाहिर) शक्तियाँ दिन रात उस की सेवा में लगी हुई हैं, यह सब उसके दयावान महा कृपालु पालन हार की रहमत व दया का वरदान है। अतः अपनी वैज्ञानिक अनुसन्धान व खोज के बाद जिन नये–नये खज़ानों को पता लगाता है, वह भी वास्तव में उसके कृपालु. मालिक की असीमित रहमत व दया का एक प्रदर्शन है। इसलिए उस का कर्तव्य है कि वह उसका शुक्रगुज़ार बन्दा बन कर रहे और अधिक से अधिक तत्परता, शुद्ध हृदयता और परिश्रम (खुलूस व जांफ़िशानी) से उसकी बन्दगी करे। इस्लाम ज्ञान और साइंस को दुष्टता या ईमान के खिलाफ नहीं समझता बल्कि इसे अल्लाह पर ईमान लाने का अंश व इसे अनिवार्य (लाज़िम) कर देता है।

इस्लाम की आवश्यकता– यह वह समस्याएँ हैं जिनके हल की तलाश में इंसान आज भी दुखी है। उच्च और वास्तविक इंसानी उद्देश्यों की पूर्ति आज भी नामुकम्मल है। इंसानर आज भी भांत भांत की मूर्खताओं और भ्रांतियों से पीड़ित है। डिकटेटरों और ज़ालिम शासकों को आज भी खुली छूट है और मानवता उनके जुल्म व अत्याचार की चक्की में अब भी पिस रही है। हर जगह इंसानियत पर हैवानियत का ग़लबा है। क्या इनकी मौजूदगी इस बात का सुबूत नहीं कि दुन्या को इस्लाम की आवश्यकता है। इस्लाम को मानवता के पथप्रदर्शन (रहनुमाई) के लिए अब भी बहुत से कारनामे अंजाम देने हैं।

आज दुन्या की आधी आबादी प्राचीन काल की तरह मूर्तिपूजा में लीन है, भारत, चीन और संसार के कई देशों की मिसाल इस सिलसिले में पेश की जा सकती है। रही शेष दुन्या तो इस का अधिकांश भाग एक और झूठे खुदा के जाल में फंसा हुआ है। इस असत्य खुदा ने इंसानी विचारों व भावनाओं की दुन्या में प्राचीन काल की मूर्तिपूजा से कुछ कम बिगाड़ पेदा नहीं किया। आज के इंसान को सीधे मार्ग से भटकाने में इसका बहुत बड़ा योगदान है। इस ताज़ा खुदा का नाम आधुनिक विज्ञान है।

पश्चिमी दुन्या की तंगनज़री:– ब्रहमाण्ड (काइनात) के बारे में जांनकारी प्राप्त करने का साधन होने की दृष्टि से विज्ञान को असीमित महत्व प्राप्त है और इस दृष्टि से इसकी अब तक के कारनामें की सूची भी बहुत ही रोब जमाने वाली है। मगर यह सारी सफलताएं उस समय दुखों और निराशाओं में बदल गईं जब पाश्चात्य देशों (अहले मग़रिब) ने साइंस को खुदाई के स्थान पर बैठा दिया और इसे अपनी महब्बतों, आस्थाओं और अनुकरणों का एक मात्र केन्द्र बना लिया। पाश्चात देशों की इस ग़लती का नतीजा यह हुआ कि उन्हों ने प्रयोगात्मक साइंस के प्रयोगों और निरीक्षणों के सीमित साधनों के सिवा ज्ञान के शेष स्रोतों से अपने आप को वंचित कर लिया और मानवता अपनी मंज़िल के निकट आने के बजाए उस

से दूर हो गई। इंसान के सामने उन्नति, कोशिश और जद्दोजिहद की जो असीमित सीमाएं थीं वह पाश्चात देशों की संकीर्ण दृष्टि (तंगनज़री) और माद्दी साइंस (भौमिक विज्ञान) की सीमा में कैद होकर रह गईं। क्योंकि साइंस जो अक़्ल के परों से उड़ती है, मानवता की बुलन्द पर्वाज़ी का साथ नहीं दे सकती। वह बुद्धि और आत्मा (रूह) दोनों की सहायता लेती है और तब कहीं अपने पैदा करने वाले की निकटता और आत्मा की वास्तविकता का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त करने के योग्य होती है।

साइंस की श्रेष्ठता (बरतरी) के दावेदार यह भी कहते हैं कि केवल साइंस ही इंसान पर जीवन और ब्रहमाण्ड के छुपे हुए भेदों को प्रकाश में ला सकती है। इसलिए वास्तविकता और सत्य वह है जिसको साइंस प्रमाणित करे बाक़ी सब असत्य और व्यर्थके ढेर हैं। अपने जोशे बयान में यह लोग यह भूल जाते हैं कि अपने तमाम चकित कर देने वाले कारनामों के बावजूद साईंस अपने प्रारम्भिक अवस्था में है। अब भी अनगिनत ऐसी समस्याएं हैं जिनके बारे में उसकी जानकारी नाक़िस (दोषपूर्ण) और अविश्वस्नीय है। क्योंकि इसके प्रभाव का क्षेत्र सीमित है और इस का निरीक्षण अपूर्ण (मुशाहिदा सतही) है और इसमें यह योग्यता ही नहीं है कि हकीकत की तहमें उतर सके लेकिन यह सब देखते हुए भी यह लोग दावा करते हैं कि आत्मा नाम की कोई चीज़ है ही नहीं इनके नज़दीक अपनी चेतना (हवास) की सीमा को फलांग कर कोई इंसान ग़ैब के पर्दे में छुपी दुन्या (अदृष्य संसार) से अपने सम्बन्ध जोड़ ही नहीं सकता। वर्तमान युग में आत्मा के वजूद सेइनकार का आधार किसी प्रयोग या निरीक्षण (तजुर्बे या मुशाहिदे) से हर्गिज़ नहीं है बल्कि इसकी असल वजह तजुर्बाती साईंस और उसके अप्रयाप्त और दोषपूर्ण उपकरणों (ग़ैर मौजू आलात) की पहुंच के बाहर होना है जिसके कारण वह प्रकृति के छुपे हुए भेदों को उजागर करने में बुरी तरह असफल रही है।

साइंस को प्रकृति के खिलाफ जो बेपनाह सफलता मिल रही है उसके नतीजे में यह इंसानी विवशता का अहसास धीरे–धीरे खुद बखुद मिट जाएगा और अन्तः वह दिन भी आ जाएगा जब इंसान खुद अपना खुदा होगा मगर इसके लिए ज़रूरी है कि इंसान को ज़िन्दगी और मौत के तमाम भेद मालूम हों और वह प्रयोगशाला में जिन्दगी को पैदा करने पर शक्तिमान हो। इसीलिए आज का वैज्ञानिक प्रयोगशाला में जीवन रचना को महत्व देता है क्योंकि उस के विचार में यह क़ारनामा अंजाम देने के बाद उसमे और अनदेखे खुदा में कोई अन्तर बाकी नही रहेगा और वह अपने सिवा किसी और के सामने झुकने की ज़रूरत से आजाद हो जाएगा।

आशा की आखिरी किरण :– वर्तमान पाश्चात दुन्या आज जिन रूहानी बीमारियों से ग्रस्त है, यह उन में अधिक खतरनाक है। उसने इंसान की ज़िन्दगी को अज़ाब बना दिया है। इंसान आपस ही में एक दूसरे से लड़ झगड़ रहा है। ज़िन्दगी में अमन व शान्ति और इतमिनान बाकी नहीं है। इस दशा में आशा की एक किरण बाक़ी है– इस्लाम। बेखुदा पश्चिम की लाईहुई तबाहकारियों से बचने के लिए खुदा के कानून के अनुकरण के सिवा और कोई चारह बाक़ी नहीं। यह इंसान को ज़िन्दगी का एक स्वस्थ दृष्टिकोण प्रदान करता है और उसको बताता है कि दुन्या में तुझे जो ज्ञान वर्धक, भौतिक और रूहानी (आध्यात्मिक) सफलताएं मिलती हैं वह वास्तव में तुम्हारे दयावान रब की कृपा का नतीजा हैं। तुम्हारा रब ज्ञान प्राप्ति की लगन या प्रकृति के भेदों को खोजने से क्रोधित नहीं होता क्योंकि उसको इस बात की आशंका नहीं है कि उस मखलूक (प्राणी) में से कोई अपने ज्ञान के बल पर कभी उसकी खुदाई के लिए ख़तरा भी बन सकता है। उसका प्रकोप (गज़ब) केवल उस समय भड़कता है और उन लोगों पर भड़कता है जो अपने ज्ञान और साइंस की मालूमात को अपने मानव संसार के कल्याण के बजाए उनकी तबाही व बरबादी में लगाते हैं। (जारी)

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

सच्चाई नजात दिलाती है और झूठ हलाक करता है। (हदीस)

0522-2201540

M.R. Jewellers

Manufacturer & Seller

All kinds of Gold & Silver Jewelleries

Shop No. 1, Haji Nanhey Market,
Opposit Mumtaz Inter College,
Jutey Wali Gali, Aminabad, Lucknow

Prop. Mohd. Ali

मुसलमान और आतंकवाद

नसीम साकेती

संसार के प्रत्येक धर्म का मूल–मंत्र है जन–कल्याण न कि जन–संहार, जन कल्याण तो इस्लाम धर्म की आधारशिला है, लेकिन कुछ तथाकथित इस्लाम से अनभिज्ञ लोग मसतष्क के दीवालियापन के कारण इस्लाम धर्म को आतंकवाद के चश्मे से देखकर मुसलमानों के चेहरों पर आतंकवादी जैसे घृणित शब्द के लेप को लगाने के कुचक्र का प्रयास कर रहे हैं जो अधार्मिक, अतार्किक, अवैज्ञानिक, अव्यवहारिक, अशोभनीय तथा निन्दनीय है।

"इस्लाम" का अर्थ है अल्लाह की आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन करना, उस पर अटूट विश्वास करना, इस्लाम धर्म के अन्तर्गत 'कुरआन' (ईशवाणी) 'हदीस' मुहम्मद (स०) की वाणी के आइने में मनुष्य की क्रियाकलाप सम्पूर्ण जीवन सामने आ जाता है, जीवन की प्रत्येक समस्या के लिए आदेश तथा समाधान विद्यमान है, मनुष्य के लौकिक तथा पारलौकिक जीवन की विशद व्याख्या की गयी है, पारिवारिक जीवन कैसे व्यतीत किया जाय, इन्सानी रिश्ते कैसे हों, दूसरे धर्मावलम्बियों के साथ कैसा व्यवहार, सामाजिक जीवन कैसा होना चाहिए, व्यापार करने की सीमायें निर्धारित की गयी हैं, रोज़ी कमाने तथा उसे खर्च करने के क्या तरीके हैं, शासन प्रणाली कैसी होनी चाहिए, पड़ोसियों तथा युद्ध बन्दियों के साथ कैसा सुलूक होना चाहिए आदि–आदि।

कहने का तात्पर्य यह है कि मनुष्य की सम्पूर्ण जीवन–प्रणाली को बड़ी सूक्ष्मता के साथ व्याख्यायित किया गया है। कुरआन तथा हदीस के सांगोपांग अध्ययन के पश्चात् ही इस्लाम धर्म को समझा जा सकता है, सतही ज्ञान से नहीं, तथाकथित नाम के आधार पर किये गये कुकृत्यों से नहीं।

कुरआन तथा हदीस की रोशनी में विशेष निर्दिष्ठ जीवन प्रणाली को अपनाने वाले व्यक्ति का नाम है मुसलमान, किसी वंश, वंश–परम्परा, गोत्र अथवा जाति का नाम मुसलमान नहीं है। इस्लाम के अनुयायी मुसलमान प्यार महब्बत, स्नेह, अनुराग तथा अम्न शान्ति का पैगाम जन–जन तक फैलाने का काम करते हैं। दंगा–फसाद के नापाक बीज बोने का नहीं, जिससे विनाश के पौध उठें और उनमें ज़हरीले फल लगें। सूरः बकरा की आयत नं०–३३ में उल्लिखित है 'जो लोग पृथ्वी पर फसाद फैलाने के लिए कुचक्र रचते हैं, भाग दौड़ करते हैं उनकी सज़ा कत्ल है अथवा उन्हें सूली पर चढ़ा दिया जाय।

कुरआन इस्लाम धर्म के अनुयायी मुसलमानों के लिए मेरूदण्ड, पत्थर की लकीर शिला खण्ड पर लिखी इबारत तथा प्रज्जवलित दीप–शिखा तथा रोशनी का मीनार है। जिसकी पवित्र आयतों से स्पष्ट हो जाता है कि जो फसाद करने वालों के लिए कत्ल अथवा सूली पर चढ़ाने की बात करता है उसके अनुयायी कैसे आतंकवादी हो सकते हैं। सिर्फ मुसलमान नाम रख लेने से आतंकवादी मुसलमान तथा इस्लाम धर्म का अनुयायी नहीं हो जाता, इस धारणा को दिल से निकाल देना चाहिए। जो कल पुलिस की गोली से मारा गया संसद या किसी मन्दिर में विस्फोट कर भाग गया, पकड़ा गया अथवा मौत का शिकार हुआ। वो मुस्लिम नामधारी मुसलमान आतंकवादी था कहना उचित नहीं है वह मात्र आतंकवादी था क्योंकि पापी आतंकवादियों का न तो कोई धर्म होता है और न ही कोई मज़हब, वे इन्सानियत के दुश्मन होते हैं। पवित्र कुरआन की सूरः मायदा की ३२वीं आयत में अल्लाह का कथन है कि "जिसने किसी व्यक्ति को कत्ल किया या ज़मीन में फसाद मचाया तो समझो उसने समस्त लोगों का कत्ल कर दिया" इससे स्पष्ट हो जाता है कि अनायास किसी बेगुनाह का कत्ल करना बहुत बड़ा जुर्म तथा पाप है, पूरी इन्सानियत के कत्ल का भागीदार माना जायेगा उसे।

कुरआन शरीफ के इतने स्पष्ट आदेश के बाद भी कोई मुसलमान इस तरह के जघन्य अपराध करने को कौन कहे उसका सोचना भी पाप समझेगा, ऐसा नापाक इरादा उसकी ज़ेहन की पकड़ में आते ही उसकी आत्मा कांप उठेगी और बेसाख़्ता उसके मुंह से तौबा–तौबा निकल आयेगा।

देश की सीमाओं, बस्तियों, संसद भवन, रेलवे स्टेशनों, मन्दिरों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर आतंकवादी गतिविधियों को अन्जाम देकर दहशत का ज़हर फैलाने वाले चाहे जो नामधारी हो मुजरिम हैं, कत्ल के योग्य हैं इसे जिहाद का नाम नहीं दिया जा सकता है, जिहाद का नाम देना मूर्खता

तथा बुद्धिहीनता है।

अभी पूर्व में आशुतोष औढदानी, प्रलयंकर शंकर की पावन नगरी काशी के संकट मोचन मन्दिर तथा रेलवे स्टेशन कैन्ट के प्लेटफार्म पर आतंकवादियों के ताण्डव के परिप्रेक्ष्य में फिरंगी महल टकसाल लखनऊ का फतवा दिनांक १४ मार्च २००६ को जारी करते हुए मौलाना मुफ्ती अबुल इरफान मुहम्मद नईमुल हलीम कादरी ने शरीअ़त के आदेश के मद्देनज़र फ़रमाया– "मन्दिर में जमा हुए मासूम लोगों के बीच धमाका किया, बेगुनाह निहत्थे, अम्न पसंद शहरियों को कत्ल किया अथवा लोग ज़ख्मी या दुखी हुए ऐसे मुजरिम कत्ल के लायेक हैं... कुरआन का हुक्म है कि आँख के बदले आँख हर ज़ख्म के बदले ज़ख्म दिया जाय...अगर कोई इन्सान इस हरकत को जिहाद कहता है तो वह जाहिल है, गुमराह करने वाला है, इस्लाम को बदनाम करने वाला है, हर मुसलमान जानता है कि उसको अपने हर अमल (काम) का पूरा हिसाब अन्तिम न्याय के दिन (क़ियामत के दिन) खुदा की अदालत में हाज़िर होकर देना है, लिहाज़ा जाने अन्जाने में अगर कोई इस्लाम के नाम पर कोई ऐसी ग़ैर इस्लामी हरकत करता है तो वह इस्लाम को बदनाम करने वाला है, कुरआनी हुक्म के मुताबिक वो क़त्ल करने के लायेक है"।

मुफ्ती–ए–बनारस मौलाना अब्दुल बातिन नोमानी, मौलाना मुफ्ती अब्दुस्सलाम नोमानी ने भी मन्दिर–प्रकरण के परिप्रेक्ष्य में अपने फतवा में कहा है कि "इस्लाम जहाँ बुरी बातों से रोकता है वही बुरे कामों में मदद और बुराई करने वालों का किसी भी तरह से साथ देने से मना करता है। कुरआने मजीद के सूरः मायदा की आयत नं०–२ के मुताबिक नेकी (पुण्य) और तकवा (भलाई) के कामों मेंएक दूसरे की मदद करो। लेकिन बुराई तथा गुनाह के कामों में किसी तरह की मदद न करो दहशत गर्दों की शिनाख़्त और इस्लाम में उसकी क्या स्थिति है उसके मालूम हो जाने के बाद इन्सानों पर लाज़िम है कि वो दहशतगर्दी से बाज़ आयें बल्कि ऐसी गन्दी हरकतों में शामिल किसी इन्सान की किसी तरह की मदद न करें, क्योंकि उनकी मदद इन्सानियत को क़त्ल व खून में मदद तथा तआवुन (सहयोग) है, जो बड़ा जुर्म तथा गुनाह है"।

उपर्युक्त फ़तवों से यह बात आइना की भाँति साफ हो जाती है कि ऐसे जघन्य अपराध करने वाले, आतंकवादी गतिविधियों की संरचना करके माहौल को खराब करने वाले, उनका साथ देने वाले इन्सानियत को क़त्ल करने वाले, अम्न तथा शान्ति के शान्त तालाब में नफरत का पत्थर फेंकने वाले, इन्सान को इन्सान से जुदा करने वाले मुसलमान हो ही नहीं सकते, तथाकथित नामधारी मुसलमानों का इस्लाम धर्म से कोई वास्ता नहीं हो सकता।

मैं स्पष्ट शब्दों में कहना चाहता हूँ कि आतंकवादियों द्वारा तथाकथित मुसलमानों के छद्म नाम "व्याघ्र प्रतिछिन्नः गर्दभः" (बाघ की खाल ओढ़े गधा) का लबादा ओढ़ कर किसी स्थान पर भी की गयी नापाक आतंकवादी घटनाओं को 'जिहाद' का नाम देना, मूर्खता तथा अज्ञानता का द्योतक है, जिहाद जैसे पवित्र शब्द का अपमान है।

'जिहाद' का शाब्दिक अर्थ है "कोशिश"। पवित्र कुरआन में सूरः फुरकान की आयत नं०–५२ में जिहाद शब्द का उल्लेख मिलता है, जिसमेंआखिरी नबी स० जिन पर कुरआन नाज़िल (अवतरित) किया गया था, से कहा गया– "ऐ नबी तुम इनकार करने वाले की बात न मानो और (कुरआन के माध्यम) उनके साथ जिहादे कबीरः करो" इसमें मुसलमानों से अल्लाह की वहदानियत (एकेश्वरवाद) को न मानने वाले से कुरआन के परिप्रेक्ष्य में बात मनवाने के लिए "बड़ी कोशिश" करने की बात की गयी है, न कि तलवार से जिहाद करने की बात।

पवित्र क़ुरआन की सूरः "अनकबूत" की आयत नं०–६ में– "अपनी इच्छाओंसे जिहाद" की बात कही गयी है।

इससे यह बात एकदम स्पष्ट हो जाती है कि अपने मन से तलवार उठाना, मार–काट करना, बम ब्लास्ट करना, आतंकवादी गतिविधियों का सम्बल लेकर बेगुनाहों की जान लेना 'जिहाद' बिल्कुल नहीं है।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में हर व्यक्ति की ज़बान की नोक पर यह बात करवटें लेती नज़र आयेगी कि आतंकवादियों को मुसलमानों के नाम अथवा इस्लाम धर्म से जोड़ना समीचीन तथा न्यायसंगत नहीं होगा। न्यायसंगत होगा कि आतंकवादियों तथा आतंकी गतिविधियों को लाभ पहुँचाने वालों को सज़ा–ए–मौत, क्योंकि न तो इनकी कोई जाति है न कोई धर्म, ये समूची इन्सानियत के दुश्मन हैं, समूची मानव जाति के लिए रिसते नासूर हैं जिसको असह्य दुर्गन्ध से मानवता त्राहि–त्राहि कर रही हैं, इनको विनाश के कगार पर पहुँचाना होगा, नेस्तनाबूद करना होगा।

आतंकवाद के खिलाफ एक जुट होकर सम्वेद स्वरों में कहना होगा :–

आओ मिलजुल कर रहे दुनिया में रहने वालो,

एक ही हार में गूँथे हुए फूलों की तरह।

अपने देश को जानिये

जम्मू कश्मीर

श्रीनगर : यहां की विश्व प्रसिद्ध डल झील और उस में तैरते हाउस बोट व शिकारे दुनिया भर के सैलानियों को आकर्षित करते हैं, चश्मा शाही, निशात बाग, शालीमार बाग, नगीन झील, गुलमर्ग, खिलनमर्ग, सोनमर्ग इत्यादि कितने ही स्थान देखने योग्य हैं। एसटीडी कोड : ०१९४

इसका क्षेत्रफल १०५ वर्ग किलोमीटर तथा आबादी ८,९४,६४० है।

जम्मू : तवी नदी के किनारे बसे जम्मू अपने मनोहरी दृश्य के लिए मशहूर है। यह राज्य की शीतकालीन राजधानी है। एसटीडी कोड : ०१९१

इसका क्षेत्रफल २०.३६ वर्ग किलोमीटर तथा आबादी ३,७८,४३१ है।

पटनीटाप : सर्दियों में हिमपात, पैराग्लाइडिंग और स्कीइंग का आनंद उठाने वाले पर्यटकों के बीच यह स्थल काफी लोकप्रिय है। एसटीडी कोड : ०१९९२

लद्दाख : बर्फ के रेगिस्तान नाम से प्रसिद्ध इस जिले में आने वाले सैलानी कश्मीरी लद्दाखी और तिब्बती कलाओं वाली चीज़ें खरीदते है। लेह इसकी राजधानी है। एसटीडी कोड : ०१९८२

इसका क्षेत्रफल ९६ वर्ग किलोमीटर तथा आबादी दो लाख है।

हिमाचल प्रदेश

शिमला : अंगरेज़ों की ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला को पहाड़ियों की रानी कहा जाता है। यहां के रिज पर बने विशाल मैदान पर ग्रीष्म उत्सव और राजकीय समारोह होते हैं। एसटीडी कोड : ०१७७

इसका क्षेत्रफल १८ वर्ग किलोमीटर तथा आबादी १,२३,००० है।

पालमपुर : चाय के बागानों से आच्छादित और बर्फ से ढकी चोटियों के मनोहारी दृश्य पर्यटकों को खूब आकर्षित करते हैं। न्यूघाल खुंड झरना यहां का मुख्य आकर्षण है। एसटीडी कोड : ०१८९४

इसकी आबादी ३५,००० है।

सोलन : खुंबियों के लिए प्रसिद्ध सोलन कालकाशिमला राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। गोरखाओं का किला और हिमालय की सबसे प्राचीन सुरंग करोल भी यही है। एसटीडी कोड : ०१७९२

इसका क्षेत्रफल १९३६ वर्ग किलोमीटर तथा आबादी २१,८६७ है।

डलहौजी : १८५० में लार्ड डलहौजी के बसाए प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस स्थान के पास पंजपुला में शहीद भगत सिंह के क्रांतिकारी चाचा शहीद अजीत सिंह की समाधि ा है। यहीं खजियार झील के पास सोने की गुंबद वाला एक मंदिर है। एसटीडी कोड : ०१८९६

इसका क्षेत्रफल १३ वर्ग किलोमीटर तथा इसकी आबादी ५,००० है।

चंबा : जुलाई अगस्त माह में होने वाले पिंजर उत्सव के लिए मशहूर चंबा अपनी प्राकृतिक हरियाली और हिमाचली संस्कृति के कारण पर्यटकों के बीच काफी मशहूर है। एसटीडी कोड – ०१८९६

इसका क्षेत्रफल ४३३ वर्ग किलोमीटर तथा आबादी १६,००० है।

धर्मशाला : सुरम्य वातावरण, मनमोहक हरीभरी वादियों और ऊपर बर्फ से ढके पर्वत से घिरे तिब्बती जीवनशैली और संस्कृति में रचे बसे इस शहर में दलाईलामा रहते हैं। एसटीडी कोड : ०१८९२

इसका क्षेत्रफल २८.८१ वर्ग किलोमीटर तथा आबादी ८,६०० है।

कुल्लू : दुनिया के सबसे पुराने गणतंत्र कांगड़ा के नाम से प्रसिद्ध मलाना कुल्लू घाटी में ही है, यहां के सूखे मेवे, कुल्लू शाल और टोपी काफी प्रसिद्ध हैं। एसटीडी कोड : ०१९०२

इसका क्षेत्रफल ६.६८ वर्ग क्रिलोमीटर तथा आबादी १६,००० है।

मनाली : कुल्लू घाटी के उत्तर में बसा मनाली हरे भरे चरागाहों, बर्फ से ढकी चोटियों, फल से लदे बगीचों व हस्तकला की वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है। एसटीडी कोड – ०१९०२

इसका क्षेत्रफल ५.१२ किलोमीटर तथा आबादी ४,२०० है।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

●बूसीनिय के मुफ्ती–ए–आज़म डा० मुस्तफ़ा हेरतशी की सूचना के अनुसार बूसीनिया की प्राचीनतम मस्जिदों ओर मदरसों की इमारतों को स्वेडन की सरकार ने फिर से बनवाने और उनकी मरम्मत करने में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया है। यह प्राचीनतम मस्जिदें ऐतिहासिक दृष्टकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण हैं और यूरोप में भी इन मस्जिदों और मदरसों की इमारतों को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण की निगाह से देखा जाता है। इन इमारतों का निर्माण सातवीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ था। इनमें कुछ दीनी मदरसों की इमारतें भी शामिल हैं। देश के गृह युद्ध में यह जरजर हो गई हैं।

●अमेरिका में डिपरेशन के शिकार कुछ बीमारों को ज़ेहनी सुकून देने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिक प्रयोग किये जाते हैं उनमें बयान करने के काबिल कुर्आन करीम की तिलावत (कुर्आन पाठन) का सुनना है। रिपोर्ट के अनुसार मनोवैज्ञानिकों (माहिरे नफ़सियात) ने अन्य प्रयोगों के अतिरिक्त कुर्आन करीम की तिलावत को सुनने का भी प्रयाग किया। चुनांचि मरीज़ के सर पर वह तार लगा दिये जाते हैं जिनका सम्बन्ध अपनी मशीन से होता है जिसके द्वारा दिमाग में उठने वाले हैजान (अशान्ति) और शान्ति का अन्दाज़ा घटने बढ़ने वाले ग्राफ़ से किया जाता है।

कुर्आन मजीद की तिलावत का प्रयोग उन मरीज़ों पर किया गया जो अरबी भाषा नहीं जानते थे लेकिन तिलावत सुनने के दौरान वैज्ञानिकों ने देखा कि डिपरेशन के शिकार इन मरीज़ों में ज़ेहनी सुकून (मन की शान्ति) का यह ग्राफ ऊंचा होता गया यहां तक कि मरीज़ को कदरे सकून हासिल हो गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो लोग किताबे अल्लाह की तिलावत सुनने और उसके अर्थ को समझने के लिए इकट्ठा होते हैं, अल्लाह तआला उन पर सुकून नाज़िल करता है।

● फ्रांस की एक राष्ट्रीय जांच कमेटी द्वारा की जाने वाली अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक अनुसन्धान के बाद यह मालूम हुआ कि खतना एड्स से सुरक्षा का सबसे प्रभावशाली साधन है। एड्स से बचाव के सिलसिले में अंतर्राष्ट्रीय कमेटी की तीसरी कानफ्रेंस जो ब्राज़ील में हुई थी, डा० ब्रिट्रन ने अपनी अनुसन्धान रिपोर्ट पेश की थी जिसको उन्होंने लगातार तीन साल (सन् २००२–२००५) अफरीका के दक्षिणी क्षेत्र में १८ से २४ वर्ष के लगभग तीन हज़ार लोगों पर रिसर्च को थे। इस रिसर्च के नतीजे से यह बात सामने आई कि खतना न कराने वाले वर्गों में एड्स सबसे अधिक है जबकि खतना कराने वालों में यह बीमारी बहुत कम है।

ट्यूनिस के डा० अब्दुल मजीद जो सार्वजनिक विभाग (महकम–ए–आमम:) के अध्यक्ष हैं उनके अनुसन्धान के अनुसार ख़तना से पहले जो अतिरिक्त जिल्द (त्वचा) होतली है वह बाहरी हानिकारक चीज़ से सुरक्षा तो करती है लेकिन उसी जिल्द के सेल्स में से एक ऐसा पदार्थ निकलता रहता है जिसमें खुद मौजूद कीटाणु (जरासीम) पैदा हो जाते हैं इसलिए उसकी सफाई बहुत ज़रूरी है।

● ईरान मसले पर आस जगी

अमेरिका ने कहा है कि ईरान को उसका यूरेनियम संवर्द्धन कार्यक्रम बंद करने के एवज में कुछ खास रियायतें देने तथा ऐसा नहीं करने पर उसके खिलाफ कड़े कदम उठाने के प्रस्ताव पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय सही दिशा में प्रगति कर रहा है। विदेश मंत्रालय के अनुसार सुरक्षा परिषद के पाँचों स्थायी सदस्य देशों तथा जर्मनी के विदेश मंत्री इस पैकेज को अंतिम रूप देने के लिए वियाना में मिल रहे हैं। इसमें ईरान को अपना परमाणु कार्यक्रम रोकने के एवज में मनपसंद व्यापार तथा तकनीकी रियायतें दी जानी शामिल हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो उसके खिलाफ प्रतिबंध जैसे कड़े कदम भी उठाए जा सकते हैं।

हालांकि ईरान के खिलाफ कड़े कदम उठाए जाने के मुद्दे पर पाँचों महाशक्तियों में मतभेद है। खासकर रूस और चीन उस पर इतनी जल्दी प्रतिबंध लगाने का विरोध कर रहे हैं। उधर, विदेश विभाग के प्रवक्ता सीन

(शेष पृष्ठ २७ पर)